नई दिल्ली
गुरुवार
23 मई, 2024
वर्षः 10, अंकः 261
पृष्ठः 08, मूल्य 2 रु0

E-mail
story@sadbhawna.today
sadbhavnatoday@gmail.com
web: www.sadbhawna.today

हिन्दी दैनिक समाचार पत्र

सद्भावना टुडे

आवाज़ अधिकार की

नीट प्रश्नपत्र लीक मामले में दो अभियुक्तों...पेज-05

DELHIN/2014/58158

डॉ. पात्रा का विवादस्पद बयान गलत,वह प्रायश्चित...पेज-08

हिन्दी में प्रकाशित होने वाला सबसे लोकप्रिय दैनिक समाचार पत्र
'सद्भावना टुडे'
में विज्ञापन के लिए सम्पर्क करें :-
011-43678240
E-mail
story@sadbhawna.today
sadbhavnatoday@gmail.com
web: www.sadbhawna.today

एक नजर

लोस अध्यक्ष ने बुद्ध पूर्णिमा की पूर्व संध्या पर देशवासियों को बधाई दी

नई दिल्ली,सद्भावना टुडे। लोक सभा अध्यक्ष, ओम बिरला ने बुद्ध पूर्णिमा की पूर्व संध्या पर देशवासियों को शुभकामनाएं दी हैं। बिरला ने अपने संदेश में कहा, भगवान बुद्ध की शिक्षाओं से हमें दार्शनिक, नैतिक और व्यावहारिक ज्ञान की प्राप्ति होती है। उनकी शिक्षाओं का उद्देश्य मानवमात्र के लिए नैतिक जीवन का मार्ग प्रशस्त करना, उसके मन के अन्धकार को दूर करना और अंततः उसे दुखों से मुक्ति दिलाना है। भगवान् बुद्ध द्वारा दी गयी चार महान सत्य और अष्टांग मार्ग की शिक्षा हमें जीवन की चुनौतियों से निपटने का मार्ग दिखाती है और हमें मानसिक शांति और मोक्ष की ओर ले जाती है। बुद्ध पूर्णिमा का यह पावन अवसर भगवान बुद्ध की शिक्षाओं और वर्तमान काल में हमारे जीवन में उनकी प्रासंगिकता पर मनन करने का समय है। स अवसर पर, आइए हम सब भगवान बुद्ध की महान शिक्षाओं को आत्मसात करें और समाज में शांति, सद्भाव और सकारात्मकता का प्रचार-प्रसार करें।

उच्चतम न्यायालय ने सोरेन की जमानत याचिका खारिज की

नई दिल्ली,एजेंसी। उच्चतम न्यायालय ने झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की प्रवर्तन निदेशालय द्वारा की गयी गिरफ्तारी को चुनौती देने वाली याचिका पर बुधवार को गौर करने से इन्कार कर दिया। मामले की सुनवाई कर रही अवकाशकालीन पीठ के न्यायाधीश दीपांकर दत्ता और न्यायाधीश सतीश चन्द्र शर्मा द्वारा याचिका को सुनवाई के लिये स्वीकार करने योग्य न माने जाने के बाद याचिकाकर्ता ने इसे वापस ले लिया। पीठ ने याचिका को वापस लिया हुआ मानते हुये उसे खारिज कर दिया। इस मामले में सोरेन की पैरवी वरिष्ठ अधिवक्ता कपिल सिब्बल ने की। पीठ ने मौखिक रूप से कहा कि याचिकाकर्ता ने यह तथ्य यहां नहीं रखे कि इस मामले में प्रवर्तन निदेशालय द्वारा दायर शिकायत का संज्ञान धन शोधन संबंधी मामलों की सुनवाई कर रही विशेष अदालत ने ले रखा है। प्रवर्तन निदेशालय ने फर्जीवाड़े के माध्यम से झारखंड में खरीदी गयी जमीन के एक मामले में सोरेन को 31 जनवरी को गिरफ्तार किया था। प्रवर्तन निदेशालय का आरोप है कि जमीन के इस फर्जी सौदे का मूल रूप से मुख्य लाभ सोरेन को मिला। गिरफ्तारी से तत्काल पूर्व श्री सोरेन ने मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दे दिया था।

'इंडी गठबंधन की अगुवा कांग्रेस ने 60 साल तक देश के सामर्थ्य के साथ अन्याय किया'

पश्चिमी दिल्ली के द्वारका में एक विशाल सभा को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा

नई दिल्ली,एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इंडी गठबंधन को कट्टर संप्रदायवाद, अत्यंत जातिवादी और कट्टर वंशवादी बताते हुए आज कहा कि गठबंधन की अगुवा कांग्रेस ने 60 साल तक देश के सामर्थ्य के साथ अन्याय किया और हर बुराई को बढ़ावा दिया।

पश्चिमी दिल्ली के द्वारका में एक विशाल सभा को संबोधित करते हुए प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने देश के राजनीतिक परिदृश्य को आकार देने में दिल्ली की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला और मतदाताओं से मौजूदा चुनावों में उचित विकल्प चुनने का आग्रह किया।

श्री मोदी ने अपने भाषण में भाजपा और कांग्रेस के नेतृत्व वाले इंडी गठबंधन के शासन मॉडल के बीच भारी अंतर पर जोर दिया। उन्होंने तेज गति से विकास और कुशल शासन के प्रति भाजपा की प्रतिबद्धता को रेखांकित किया, इसकी तुलना कांग्रेस और उसके सहयोगियों द्वारा की जा रही धीमी प्रगति और प्रणालीगत अन्याय से की। उन्होंने कहा कि दिल्ली का मूड क्या है, ये देश देख रहा है। अब तक 400 से ज्यादा सीटों का मतदान हो चुका है। 5 चरणों ने भाजपा-राजग की मजबूत सरकार पक्की कर दी है। उन्होंने कहा कि आजादी के बाद पहली बार भारत के लोगों ने स्पष्ट रूप से कांग्रेस मॉडल और भाजपा मॉडल का फर्क देखा है। कांग्रेस और इंडी गठबंधन वालों को ना आगे की सोचने की फुर्सत है और ना ही क्षमता है। इन लोगों ने 60 साल तक भारत के सामर्थ्य के साथ अन्याय किया है। इन लोगों ने आपराधिक कृत्य किया है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि 140 करोड़ का इतना बड़ा देश, भारत को जो स्पीड चाहिए, जो स्केल चाहिए वो एकमात्र भारतीय जनता पार्टी की सरकार ही दे सकती है। केवल दो शब्द आपको यह निर्णय लेने में मदद कर सकते हैं कि आपको किसे वोट देना चाहिए। उन्होंने कहा, हम राष्ट्र प्रथम में विश्वास करते हैं। कांग्रेस फैमिली फर्स्ट में विश्वास रखती है। श्री मोदी ने कहा कि कांग्रेस ने भारत का रक्षा उद्योग को बर्बाद किया। आज हम एक लाख करोड़ रुपए से ज्यादा का रक्षा उत्पादन कर रहे हैं। कांग्रेस ने देश के बैंकों को बर्बाद किया, आज देश के बैंक 3 लाख करोड़ रुपए का मुनाफा कमा रहे हैं। उन्होंने कहा, इंडी गठबंधन आज देश में मौजूद हर बुराई का प्रतीक है। गठबंधन के सभी घटकों में तीन बातें समान हैं- वे कट्टर संप्रदायवादी हैं, वे अत्यंत जातिवादी हैं और वे कट्टर वंशवादी हैं। इंडी गठबंधन के लोग घोर सांप्रदायिक, जातिवादी और परिवारवादी हैं। उन्होंने कहा कि इंडी गठबंधन सिर्फ अपने कुनबे को बचाने में लगा है। जैसे आप उत्तर प्रदेश में सपा को ले लीजिए... क्या यादव समाज में दूसरे लोग नहीं हैं? एक ही कुनबे के सभी यादवों को टिकट क्यों दे रहे हैं... यानी, इनका काम है कुनबा बचाना।

श्री मोदी ने कहा कि दिल्ली में जो लुटियन गैंग है, खान मार्केट गैंग है, इन घोर सांप्रदायिक लोगों की रक्षा करने में अपनी जिंदगी खपा दी। उनके पापों को देश की जनता से छिपाने का पाप किया है। उन्होंने कहा,आज ही कोलकाता उच्च न्यायालय ने इस इंडी गठबंधन को एक बहुत बड़ा तमाचा मारा है। न्यायालय ने 2010 के बाद से जारी सारे अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) के प्रमाणपत्र रद्द कर दिये हैं। ये इसलिए किया गया, क्योंकि पश्चिम बंगाल की सरकार ने मुसलमानों का वोटबैंक के लिए अनाप-शनाप मुसलमानों को ओबीसी बनाने के प्रमाणपत्र दे दिए। ये लोग सिर्फ तुष्टिकरण की राजनीति करते हैं। श्री मोदी ने कहा, 2014 के चुनाव में मैं देश के लिए नया था, लेकिन मेरे प्रति आम जनता के बीच जिज्ञासा थी। 2019 के चुनाव में जनता को विश्वास था कि 2014 में हमने सही निर्णय किया। लोगों ने भले ही कुछ भी कहा हो, लेकिन ये विश्वास बहुत बड़ी ताकत बन गया। अब 2024 का चुनाव, मोदी नहीं लड़ रहा है, भाजपा नहीं लड़ रही है, 2024 का चुनाव 140 करोड़ देशवासी लड़ रहे हैं। उन्होंने कहा, मेरे लिए जनता-जनार्दन ईश्वर का रूप है। जब मैं जनता को देखता हूं तो मैं भीड़ नहीं देखता हूं, चेहरे नहीं देखता हूं। मेरे मन में ईश्वर का कोई रूप दिखता है। उन्होंने कहा कि भारत के लोगों के पास सामर्थ्य है। आने वाले समय में भारत, पूरी दुनिया का प्रतिनिधित्व करेगा। श्री मोदी ने कहा कि आज यूपीआई गांव-गांव तक पहुंच चुका है, आज रेहड़ी-पटरी वाले भी यूपीआई का इस्तेमाल करते हैं। ये क्रांति हम आंखों के सामने देख रहे हैं। प्रधानमंत्री ने कहा कि 4 जून को 140 करोड़ देशवासियों का भव्य विजय होगा। देशवासियों ने जो सपने संजोए हैं इन सपनों को नई ऊर्जा मिलेगी, नया सामर्थ्य मिलेगा। भाजपा की बात कहें तो हम पुराने सारे रिकॉर्ड तोड़ करके देश की जनता का आशीर्वाद प्राप्त करके फिर एक बार हम सरकार बनाएंगे।

उच्चतम न्यायालय ने अनुच्छेद 370 के फैसले की समीक्षा की मांग वाली याचिकाएं खारिज की

नई दिल्ली,एजेंसी। उच्चतम न्यायालय ने संविधान के अनुच्छेद 370 के तहत जम्मू एवं कश्मीर को प्राप्त विशेष दर्जे को रद्द करने के अपने फैसले पर पुनर्विचार की मांग करने वाली याचिकाएं मंगलवार को खारिज कर दीं। मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़, न्यायमूर्ति संजीव खन्ना, न्यायमूर्ति बीआर गवई, न्यायमूर्ति सूर्यकांत और न्यायमूर्ति एएस बोपन्ना की पांच न्यायाधीशों की पीठ ने यह कहते हुए समीक्षा याचिकाएं खारिज कर दीं कि 11 दिसंबर, 2023 को दिए गए फैसले में कोई स्पष्ट त्रुटि नहीं है।

पीठ ने कहा, 11 दिसंबर, 2023 को पारित हमारे फैसले की समीक्षा करने के बाद, हमें सुप्रीम कोर्ट के नियम 2013 के आदेश एक्सएल सात, नियम 1 के तहत समीक्षा के लिए कोई मामला नहीं मिला। पीठ ने राष्ट्रपति के उस आदेश को बरकरार रखा, जिसने जम्मू-कश्मीर का विशेष दर्जा छीन लिया था। सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने अदालत को आश्वासन दिया था कि जम्मू-कश्मीर का राज्य का दर्जा जल्द से जल्द बहाल किया जाएगा। अदालत ने जम्मू-कश्मीर पुनर्गठन अधिनियम की संवैधानिकता पर फैसला देने से परहेज किया और जम्मू-कश्मीर की विधान सभा के चुनाव कराने के लिए 30 सितंबर, 2024 की समय सीमा तय की।

जुमलेबाज सरकार से सावधान रहने की जरूरतः प्रियंका गांधी

गोड्डा,एजेंसी। कांग्रेस की वरिष्ठ नेता एवं पार्टी महासचिव प्रियंका गांधी ने केंद्र की नरेन्द्र मोदी सरकार को 'जुमलेबाज सरकार' बताया और लोगों को सरकार से सावधान रहने की अपील की है। श्रीमती गांधी ने बुधवार को इंडिया गंठबंधन के उम्मीदवार प्रदीप यादव के पक्ष में एक चुनावी सभा को संबोधित करते हुए लोगों से कहा कि यदि संविधान बदलना है तो भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) का चयन करें। संविधान की रक्षा करने के लिए प्रदीप यादव के चुनाव चिह्न 'हाथ' पर बटन दबा कर अपने प्रत्याशी को जिताये। जुमलेबाज सरकार से सावधान। जुमलेबाज सरकार ने भाई राहुल गांधी को सत्य बोलने पर संसद से निकाल दिया। कांग्रेस महासचिव ने कहा, क्या आपके अकांउन्ट में 15 लाख रुपए आए। गरीबों की गरीबी दूर हुई। हमारी सरकार बनेगी तो 25 लाख नौकरी तुरंत दिया जाएगा। जल, जंगल एवं जमीन की रक्षा कांग्रेस नीत सरकार में ही संभव है। अडानी के हाथों अपने देश को गिरवी रखने वाले से देश का विकास संभव नहीं है। प्रदीप ने आपके लिए अडानी से लड़ाई की तो इन्हें जेल में डाल दिया गया। पूर्व मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की पत्नी कल्पना सोरेन ने कहा, यदि आप अपने नेता हेमंत सोरेन को जेल से बाहर देखना चाहते हैं। संताल के अस्तित्व को बचाने के लिए प्रदीप यादव के हाथ को मजबूत कीजिए। महागामा विधायक दीपिका पांडेय सिंह ने कहा कि गोड्डा लोक सभा में विकास की गंगा देखना चाहते हैं तो इंडिया गठबंधन के सशक्त एवं जुझारू नेता प्रदीप भैया को नेतृत्व में आपना योगदान दे तभी गोड्डा लोक सभा का विकास होगा। कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी, झारखंड मुक्ति मोर्चा के कल्पना सोरेन, विधायक इरफान अंसारी, राजेश ठाकुर सहित दर्जनों कांग्रेस के वरिष्ठ नेता के साथ इंडिया गठबंधन के नेताओं ने एक स्वर से प्रदीप यादव को जीतने की अपील की।

राहुल बाबा और ममता दीदी जल्द ही शीतनिद्रा में चली जाएंगीः अमित शाह

पुरुलिया/कांथी (बंगाल)। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने बुधवार को कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में छठे और अंतिम सातवें चरण में कांग्रेस नेता राहुल गांधी (राहुल बाबा) और तृणमूल सुप्रीमो ममता बनर्जी (ममता दीदी) शीतनिद्रा में चली जाएंगीं, क्योंकि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) ने 20 मई को हुए पांचवें चरण के मतदान के बाद 310 लोकसभा सीटें हासिल कर ली हैं।

श्री शाह ने यह भी दावा किया कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) इस बार बंगाल में 30 सीटें हासिल करने की ओर बढ़ रही है और राज्य के मतदाताओं को आश्वासन दिया कि एक बार ऐसा होने पर, भाजपा का काम सभी भ्रष्ट मंत्रियों और उनके गुंडों का पता लगाना और चार जून के बाद उन्हें सलाखों के पीछे डालना होगा। उन्होंने कहा, एक बार जब आप सातवें चरण के मतदान के

अंत में भाजपा को 30 सीटें दे देंगे, तो सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस टुकड़ों में बंट जाएगी। उन्होंने आरोप लगाया कि ममता बनर्जी सरकार अपने वोट बैंक बंगलादेश और रोहिंग्या घुसपैठियों के लिए सुरक्षित पनाहगाह बनाकर राष्ट्रीय सुरक्षा से समझौता कर रही है। भाजपा नेता ने आरोप लगाया कि घुसपैठियों ने न केवल बंगाल की जनसांख्यिकी बदल दी बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए भी खतरा पैदा कर दिया है। उन्होंने कहा, संदेशखाली की महिलाओं और बहनों का क्या हुआ, जिन्हें शाहजहां शेख के नेतृत्व वाले गुंडों द्वारा धार्मिक आधार पर प्रताड़ित किया जा रहा था और ममता बनर्जी ने अपने वोट बैंक को खुश करने के लिए उनके खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की। श्री शाह ने कहा, एक महिला मुख्यमंत्री होने के नाते ममता दीदी को अदालत के आदेश के बाद भाजपा के हस्तक्षेप से पहले कार्रवाई करनी चाहिए थी।

नार्थ ब्लॉक को बम से उड़ाने की धमकी वाला ई-मेल फर्जी

नई दिल्ली। राजधानी दिल्ली के स्कूलों और अस्पतालों के बाद अब दिल्ली में सत्ता तथा सुरक्षा के महत्वपूर्ण स्तंभ माने जाने वाले नार्थ ब्लॉक को बम से उड़ाने की बुधवार को धमकी दी गयी हालांकि भवन की जांच के बाद पुलिस ने इस ई-मेल को फर्जी करार दिया। सूत्रों ने बताया कि केन्द्रीय गृह तथा वित्त मंत्रालय के कार्यालय वाले भवन नार्थ ब्लॉक को बम से उडाने से संबंधित एक ई-मेल बुधवार को एक अधिकारी को भेजा गया था। अधिकारी ने इसकी जानकारी पुलिस को दी जिसके बाद समूचे भवन की जांच और खोज बीन की गयी। जांच में किसी तरह की संदिग्ध चीज नहीं मिलने के बाद पुलिस ने कहा कि यह ई-मेल फर्जी था। इससे पहले जांच और खोज बीन के लिए हरकत में आयी पुलिस ने गृह मंत्रालय और वित्त मंत्रालय के कार्यालयों को खाली करा लिया था।

रामलला की स्थापना के साथ अपराधियों का हुआ राम नाम सत्यः योगी

संजय सिंह, वरिष्ठ पत्रकार

सुलतानपुर। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि अयोध्या में रामलला की स्थापना के साथ सभी माफिया तत्वों का राम नाम सत्य हो गया है। भाजपा प्रत्याशी मेनका संजय गांधी के समर्थन में आयोजित एक चुनावी सभा में उन्होने कहा कि आज यहां नया भारत किसी को छेड़ता नहीं है अगर कोई छेड़ता है तो उसे छोड़ना भी नहीं हैं। सपा सरकार पर तीखा हमला करते हुए कहा कि सपा की सरकार में बेटियां सुरक्षित नहीं रहती थी। व्यापारी व्यापार नहीं कर सकता था और नौजवान बेरोजगार था जबकि भाजपा की सरकार में इसका उल्टा है। उन्होंने कहा कि इधर रामराज स्थापित हुए उधर प्रदेश के सभी माफिया का राम-राम सत्य हो गया सपा का एक ही नारा था खाली प्लॉट हमारा है।

जिले के कादीपुर स्थित जूनियर हाई स्कूल के प्रांगण में श्री योगी ने कहा कि जब गठबंधन के लोग 400 पर का नारा सुनते हैं

तो सपा को चक्कर आने लगता है। उन्होंने कहा कि जनता अब गठबंधन के नेताओं से कह रही है कि चाहे जितना जोर लगा लो जीतेंगे तो मोदी ही आएंगे तो मोदी ही। उन्होंने कहा कि पूरे देश से आवाज आ रही है कि जो राम को लाए हैं हम उनको लाएंगे।क्योंकि विकसित भारत के लिए एकजुट होकर हमें कमल का फूल खिलाना है।मोदी की सरकार ही है की सीमा से आतंकवादी घुसने का नाम नहीं लेते हैं जबकि पूर्व की सरकारों में सीमा से आतंकवादी घुसते थे और तत्कालीन सरकार मौन रहती थी। मोदी के नेतृत्व में देश में आतंकवाद और नेशनल नक्सलवाद समाप्त हुआ है। विपक्षियों को निशाने पर लेते हुए राहुल और अखिलेश की जोड़ी को भस्मासुर की संज्ञा दी। उन्होंने रामायण काल की याद दिलाते हुए योगी आदित्यनाथ ने कहा कि अयोध्या में एयरपोर्ट का नाम महर्षि वाल्मीकि के नाम पर रखा गया है और वहां की रसोई शबरी के नाम पर चलती है उन्होंने बताया कि राम मंदिर के अंदर निषादराज भगवान की स्थापना भी की जाएगी। योगी के संबोधन से पहले भाजपा प्रत्याशी मेनका गांधी ने लोगों को भारी मतदान करने का आवाह्न करते हुए इतनी भीषण गर्मी में भी इतनी संख्या में आने के लिए धन्यवाद दिया और उनका आभार प्रकट किया। साथ ही यह भी कहा कि जिस जनसैलाब के साथ आप लोग यहां पर एकत्रित हुए हैं इसी सैलाब के साथ अपने मतों का प्रयोग भी कीजिए जिससे आने वाले दिनों एक मजबूत सांसद और देश में? एक मजबूत सरकार बने।

कलकत्ता उच्च न्यायालय ने ममता सरकार के 2010 के ओबीसी प्रमाण-पत्रों को रद्द किया

कोलकाता,एजेंसी। कलकत्ता उच्च न्यायालय ने पश्चिम बंगाल में ममता सरकार द्वारा 2010 के बाद अन्य पिछडा वर्ग (ओबीसी) के लिए जारी सभी प्रमाण-पत्रों को बुधवार को रद्द कर दिया। जिससे करीब पांच लाख लोगों के प्रभावित होने का अनुमान है। न्यायालय ने पश्चिम बंगाल पिछड़ा वर्ग (अनुसूचित जातियों एवं जनजातियों के अतिरिक्त) (सेवाओं और पदों की रिक्तियों मे आरक्षण) अधिनियम 2012 की अनुच्छेद 2एच, पांच, छह और 16 तथा इस अधिनियम के अनुसूची एक और तीन को असंवैधानिक करार दिया है।

न्यायमूर्ति तारापद चक्रवर्ती और न्यायमूर्ति राजशेखर मनता की खंड पीठ ने इस मामले पर फैसला देते हुए कहा कि 2010 से पहले

ओबीसी की 66 श्रेणियों के वर्गीकरण के राज्य सरकार के आदेश में हस्तक्षेप नहीं किया गया है क्योंकि याचिका में उनकों चुनौती नहीं दी थी। वर्ष 2010 के आदेश के खिलाफ 2011 में न्यायालय के समक्ष एक जनहित याचिका दायर की गई थी जिसमें दावा किया गया था कि 2010 के बाद जारी सभी ओबीसी प्रमाण-पत्रों में 1993 के (पश्चिम बंगाल पिछड़ा वर्ग आयोग) अधिनियम की उपेक्षा की गयी है। अदालत ने कहा कि 2010 के बाद राज्य में वास्तव में ओबीसी को उनका हक नहीं दिया गया है और इस टिप्पणी के साथ आयोग ने 2010 के बाद के प्रमाण-पत्रों को खारिज कर दिया। पीठ ने 2010 के बाद 37 श्रेणियों को ओबीसी आरक्षण दिये जाने की व्यवस्था को भी खारिज कर दिया है।

भाजपा का 400 पार का नारा पूरी तरह कल्पना: थरूर

मो. हबीबुल्लाह उर्फ मुन्ना,
सद्भावना टुडे संवाददाता

नई दिल्ली। कांग्रेस ने भारतीय जनता पार्टी के लोकसभा चुनाव के लुभावने नारे अब की बार 400 पार की हवा निकालते हुए इस नारे को पूरी तरह से कल्पना बताया और कहा कि यह सिर्फ बकवास है जो कहीं भी हक़ीक़त के आसपास नहीं है। कांग्रेस नेता शशि थरूर ने दिल्ली प्रदेश कांग्रेस की मुख्यालय में बुधवार को संवाददाता सम्मेलन में कहा कि यह नारा कल्पना है। पांच चरण के चुनाव में साफ हो गया है कि भाजपा सिर्फ हार ही नहीं रही है बल्कि अपने गढ़ों में भी उसकी ताकत में भारी गिरावट आ रही है।

उन्होंने कहा मुझे गोवा, पुणे, मुंबई, वडोदरा, अहमदाबाद और अपने राज्य केरल के साथ ही देश के अन्य हिस्सों में जाने और प्रचार करने का अवसर मिला है। रैलियों को संबोधित किया है, लोगों से मिला हूं और साक्षात्कार भी दिए हूं। इन अनुभवों के आधार पर कह सकता हूं कि भाजपा हार रही है। श्री थरूर ने कहा, जब मैं सामान्य ज्ञान कहता हूं तो यह पहले से ही स्पष्ट था जब बीजेपी ने अब की बार 400 पार के बारे में बात करना शुरू किया था कि यह पूरी तरह से एक कल्पना थी। तिरुवनंतपुरम के सांसद ने कहा कि दूसरी ओर, कांग्रेस राजस्थान, हरियाणा, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और यहां तक कि उत्तर प्रदेश में पिछली बार की तुलना में काफी अच्छा प्रदर्शन कर रही है।उन्होने भविष्यवाणी किया कि बिहार, पश्चिम बंगाल और गुजरात में कुछ स्थानों पर भाजपा और एनडीए के लिए खबर इतनी अच्छी नहीं थी।

उन्होंने कहा सकारात्मक रुझानों को देखकर

हमारा आत्मविश्वास और भी बढ़ गया है और हम अभियान के आखिरी दो हफ्तों में बिल्कुल सकारात्मक रास्ते पर हैं इस चुनाव का मुख्य उद्देश्य केंद्र में सरकार को बदलना है। पूर्व विदेश राज्य मंत्री ने कहा कि पुलवामा त्रासदी और बालाकोट में प्रतिक्रिया के कारण भाजपा 2019 के चुनाव को जीती सकी थी। उन्होंने दावा किया कि हालांकि ऐसे नतीजों को दोहराना अब असंभव है और अब तक के रुझानों से पता चला है कि भाजपा के गढ़ों में न्यूनतम मतदान और मतदान के आंकड़ों में महत्वपूर्ण गिरावट देखी गई है।दूसरी ओर, कांग्रेस और इंडिया गठबंधन के उम्मीदवारों में उत्साह है।

आतिशी का आरोप: हरियाणा सरकार ने दिल्ली को यमुना जल की आपूर्ति रोकी, भाजपा का पलटवार

सैफुल्लाह सिद्दीकी, सद्भावना टुडे

नई दिल्ली। दिल्ली की कैबिनेट मंत्री आतिशी ने बुधवार को आरोप लगाया कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने आम आदमी पार्टी (आप) को निशाना बनाने के लिए एक नई साजिश रची है और हरियाणा सरकार के माध्यम से उसने राष्ट्रीय राजधानी में पानी की आपूर्ति रोक दी है। भाजपा की दिल्ली इकाई के अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा ने आतिशी के आरोपों पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा, लोकसभा चुनावों में अपनी हार के डर से 'आप' एक नया झूठ लेकर आई है। जब हमने सोमवार को जल आपूर्ति संकट का मुद्दा उठाया तो मंत्री ने एक शब्द भी नहीं बोला और अब वह भाजपा पर आरोप लगा रही हैं। दिल्ली की जल मंत्री आतिशी ने संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि लोकसभा चुनाव की घोषणा के बाद से ही भाजपा उनकी पार्टी आप को निशाना बनाने की साजिश रच रही है।

उन्होंने कहा, लोकसभा चुनाव की घोषणा के पांच दिन के अंदर ही दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को गिरफ्तार कर लिया गया ताकि आप चुनाव प्रचार नहीं कर सके। उनके अंतरिम जमानत पर बाहर आने के बाद भाजपा ने उन्हें फंसाने के लिए पार्टी की राज्यसभा सदस्य स्वाति मालीवाल का इस्तेमाल किया लेकिन उनकी यह साजिश भी विफल हो गई। आतिशी ने आरोप लगाया, फिर उन्होंने पार्टी को विदेशी चंदा मिलने का पुराना मुद्दा उठाया और अब अपनी हरियाणा सरकार के माध्यम से भाजपा ने दिल्ली को यमुना के पानी की आपूर्ति रोक दी है।सचदेवा ने आरोप लगाया, दिल्ली के मुख्यमंत्री केजरीवाल ने जल आपूर्ति के मुद्दों का समाधान करने के लिए एक महीने पहले तिहाड़ जेल से आतिशी को पत्र लिखा था। उन्हें बताना चाहिए कि पिछले एक महीने में क्या किया गया। दिल्ली में पानी की कमी के लिए आप सरकार का भ्रष्टाचार और उसकी निष्क्रियता जिम्मेदार है। आतिशी ने कहा कि यह मामला तब सामने आया जब उन्हें उन इलाकों से भी पानी की कमी की शिकायतें मिलनी शुरू हुईं, जहां पहले कभी लोगों को इस समस्या का सामना नहीं करना पड़ा। उन्होंने कहा कि वह बुधवार को ही हरियाणा सरकार को पत्र लिखेंगी और अगर उनकी ओर से कोई कार्रवाई नहीं की गई तो वह इस मुद्दे पर उच्चतम न्यायालय का दरवाजा खटखटाएंगी। आप नेता ने कहा, वजीराबाद में यमुना का स्तर अधिकतर 674 फुट पर रहता है और सबसे निचले स्तर पर भी 672 फुट पर रहता है, लेकिन 11 मई को यह 671.6 फुट पर था और तीन दिनों तक इसी स्तर पर रहा। 14 और 15 मई को यह 671.9 फुट पर था और फिर 16 मई को यह घटकर 671.3 फुट पर आ गया और फिर अगले तीन दिन में यमुना का जल स्तर और गिरकर 671 फुट पर पहुंच गया। आतिशी ने कहा, 21 मई को शायद इतिहास में पहली बार यमुना का जल स्तर 670.9 फुट पर पहुंच गया था।

पत्नी ने मायके से आने से किया इनकार तो पुत्र का किया अपहरण

नई दिल्ली। पूर्वी दिल्ली के लक्ष्मी नगर इलाके में एक व्यक्ति ने अपने कुछ साथियों के संग मिलकर अपने 3 साल के बेटे को अगवा कर लिया। विरोध करने पर उसने फायरिंग कर दी। इसमें एक राहगीर लड़का घायल हो गया, जिसे इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। सूचना मिलते ही मौके पर पहुंची पुलिस ने शिकायत पर केस दर्ज कर मामले की जांच शुरू कर दी है।

पूर्वी जिले की डीसीपी अपूर्वा गुप्ता के अनुसार मेरठ के रहने वाले इस व्यक्ति की दूसरी शादी दिल्ली के लक्ष्मी नगर इलाके में वर्ष 2015 हुई थी। दोनों के दो बच्चे हैं। एक बेटा 7 साल का है और दूसरा तीन साल का है। पिछले 3 सालों से दम्पति के बीच मनमुटाव चल रहा है, जिसकी वजह घर में झगड़ा होने लगा। इससे परेशान होकर पत्नी बच्चों को लेकर लक्ष्मी नगर अपने मायके आ गई। पति लगातार उसे घर लौटने के लिए कह रहा था लेकिन पत्नी ने लौटने से इनकार कर दिया था। आरोप है कि पति मंगलवार रात तकरीबन 11 बजे अपने भाई, पिता और 5 हथियारबंद साथियों के संग पहुंचा। आरोप है कि घर में घुसते ही पति ने पत्नी के साथ गाली गलौच और मारपीट शुरू कर दी और छोटे बेटे को ले जाने लगा। इस दौरान घर में मौजूद लोगों ने इसका विरोध किया तो उसके साथियों ने हथियार निकाल लिया और फायरिंग शुरू कर दी। गोली चलने की आवाज सुनकर पड़ोसी भी जमा हो गए लेकिन कई राउंड फायरिंग करते हुए सभी लोग बच्चे को लेकर फरार हो गए। इस फायरिंग में गली से गुजर रहे लड़के के पैर में गोली लग गई।

डीटीयू में एमए एजुकेशन में दाखिले के लिए शुरू हुई आवेदन प्रक्रिया

नई दिल्ली। दिल्ली टीचर्स यूनिवर्सिटी (डीटीयू) ने शैक्षणिक सत्र 2024-25 के लिए एमए (एजुकेशन) में दाखिले के लिए आवेदन प्रक्रिया शुरू कर दी है। इच्छुक उम्मीदवार यूनिवर्सिटी के पोर्टल पर 19 जून तक ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। आवेदन प्रक्रिया समाप्त होने के बाद दाखिले के लिए पहली मेरिट 26 जून को जारी की जाएगी। इसके बाद दो और मेरिट सूची जारी की जाएंगी। यदि इसके बाद भी सीटें खाली रहती हैं तो उन्हें जुलाई के अंत में स्पॉट काउंसलिंग से भरा जाएगा।

डीटीयू में एमए एजुकेशन प्रोग्राम को भविष्य के शिक्षकों और अकादमिक नेताओं को शैक्षिक क्षेत्र में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए आवश्यक उन्नत ज्ञान, नवीन शिक्षण रणनीतियों और अनुसंधान कौशल से लैस करने के लिए डिजाइन किया गया है। प्रोग्राम की कुल 54 सीटें हैं, जिसमें से दिल्ली के उम्मीदवारों का कोटा 46 सीटों का है जबकि दिल्ली से बाहर के उम्मीदवारों के लिए आठ सीटें हैं। इस प्रोग्राम के लिए ऑनलाइन पंजीकरण यूनिवर्सिटी की वेबसाइट के माध्यम से

किया जा सकता है। इसके लिए सामान्य श्रेणी के उम्मीदवारों को एक हजार आवेदन शुल्क और एससी, एसटी, ओबीसी व पीडब्लयूडी उम्मीदवारों को 500 रुपये शुल्क का भुगतान करना होगा। पहली मेरिट सूची जारी होने के बाद उम्मीदवारों के दस्तावेजों का सत्यापन और फीस भुगतान 27 जून से चार जुलाई तक किया जा सकेगा। 8 जुलाई को जारी होगी दूसरी मेरिट लिस्ट = सीटें खाली रहने पर दूसरी मेरिट सूची आठ जुलाई को जारी की जाएगी। इस सूची के आधार पर उम्मीदवारों को दस्तावेजों का सत्यापन और फीस का भुगतान 09 जुलाई से 16 जुलाई तक करना होगा। तीसरी मेरिट सूची 19 जुलाई को जारी होगी। जिसके आधार पर दस्तावेजों का सत्यापन और फीस का भुगतान 22 जुलाई से 26 जुलाई तक किया जा सकेगा। इसके बाद भी सीटें खाली रहने पर 29 जुलाई को स्पॉट काउंसलिंग से सीटों को भरा जाएगा। इस प्रोग्राम में दाखिले के लिए स्नातक में 50 फीसदी अंक और इसके अलावा उम्मीदवार को एनटीए द्वारा आयोजित सीयूईटी-पीजी 2024 परीक्षा में उपस्थित होना चाहिए।

दिल्ली के शाहदरा में संपत्ति विवाद में 18 वर्षीय किशोर की मौत, चार घायल

नई दिल्ली,एजेंसी। दिल्ली के शाहदरा में दो भाइयों में संपत्ति को लेकर हुए झगड़े में 18 वर्षीय एक किशोर की मौत हो गई और चार अन्य गंभीर रूप से घायल हो गये हैं। बुधवार को पुलिस ने यह जानकारी दी। पुलिस ने मृतक की पहचान 18 साल के सुहान के तौर पर की है, वहीं घायलों की पहचान जगतपुरी क्षेत्र में शाही मस्जिद के पास राशिद बाजार में रहने वाले फैजान (19), निशा (42), इमरान(45) और शमशाद (28) के रुप में की है। पुलिस ने बताया कि मंगलवार को एक पीसीआर कॉल के माध्यम से दो भाइयों के बीच झगड़े की सूचना मिली थी। जिसके बाद पुलिस की टीम मौके पर पहुंची और पुलिस ने पाया कि घायलों को डॉ हेडगेवार अस्पताल भेजा जा चुका था। प्रारंभिक जांच के दौरान, पुलिस ने पाया कि लड़ाई सईद अहमद के स्वामित्व वाली एक दुकान को लेकर हुई थी। पुलिस उपायुक्त (शाहदरा) सुरेंद्र चौधरी कहा, सैयद अहमद के छह बेटे हैं, जिनमें से चार हैं-इस्तिकार, जुल्फिकार, इमरान और शमशाद। सभी एक ही घर में रहते हैं। जुल्फिकार घर के पास ही वेल्डिंग की दुकान चलाता है। इमरान अपने भाइयों की मंजूरी से दुकान बेचना चाहता था, लेकिन जुल्फिकार ने आपत्ति जताई। जिसके बाद दोनों के बीच झगड़ा हुआ। डीसीपी ने कहा कि परिवार के अन्य सदस्यों के साथ ही जुल्फिकार और इमरान के बीच संपत्ति की लड़ाई काफी लंबे समय से चल रही थी। उन्होंने बताया कि जुल्फिकार और इमरान के बीच कहासुनी के बाद मामला मारपीट में तब्दील हो गया। चौधरी ने कहा कि जुल्फिकार और उसके बेटे मुर्शीद ने इमरान, उसकी पत्नी निशा और उसके बेटों फैजान, सुहान और जुल्फिकार के एक और भाई शमशाद पर चाकू से हमला कर दिया। हमले में सुहान की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि बाकी को अस्पताल ले जाया गया। उन्होंने कहा कि मुर्शीद, जुल्फिकार और उसकी पत्नी शबाना के खिलाफ मामला दर्ज किया गया और उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। आगे की जांच जारी है।

एनबीटी, इंडिया के समर कैंप में बच्चों की करियर काउंसलिंग

शबाना बेगम,सद्भावना टुडे

नई दिल्ली। नेशनल बुक ट्रस्ट (एनबीटी) अपने वसंत कुंज स्थित मुख्यालय में आयोजित समर कैंप में बच्चों को करियर गाइडेंस भी दे रहा है। बुधवार से शुरू हुए और 15 दिनों तक चलने वाले इस समर कैंप में जानी-मानी करियर काउंसलर डॉ. श्रुति जैन ने बच्चों द्वारा पूछे गए करियर ओरियंटेड प्रश्नों के उत्तर दिए।9 से 14 वर्ष के बच्चों के लिए आयोजित करियर काउंसलिंग के इस सत्र में 100 से अधिक बच्चों ने भाग लिया। उन्होंने डॉ. श्रुति जैन से जाना कि किस तरह वे पसंदीदा क्षेत्र में अपना करियर बना सकते हैं, उसके लिए उन्हें किस तरह तैयारी करनी होगी।

डॉ. श्रुति जैन ने वर्तमान समय की मांग को देखते हुए बच्चों को करियर ओरियंटेड कोर्सेज जैसे कि एक्चुअरी, पर्यावरणीय विज्ञान, यूजर इंटरफेस (यूएक्स), बैंकिंग, सॉफ्टवेयर इंजीनियरिंग, एपिडेम्योलॉजी, ई-कॉमर्स आदि के बारे में भी विस्तार से बताया। एनबीटी, इंडिया का यह निःशुल्क समर कैंप 3 जून तक चलेगा, जिसमें बच्चों को दो वर्गों में बांटकर सत्र आयोजित किए जाएंगे। पहले वर्ग में 5 से 8 वर्ष के बच्चे देशभर से आए मशहूर कलाकारों, लेखकों और कथा-वाचकों से खेल-खेल में बहुत-सी रचनात्मक गतिविधियां सीख रहे हैं। दूसरा समूह 9 से 14 वर्ष के बच्चों का है, जिनके लिए परस्पर संवादात्मक गतिविधियां आयोजित की

जा रही हैं। उनके लिए यहां करियर काउंसलिंग के अलावा विशेषज्ञों से आर्ट एंड क्राफ्ट, रचनात्मक लेखन, थियेटर, कैलिग्राफी, विषयानुसार चर्चा, कथा-वाचन के तरीके, विज्ञान की समझ, खगोल विज्ञान, मैपोलॉजी गेम, वैदिक गणित आदि से जुड़ी कार्यशालाओं में बहुत कुछ नया सीखने का भी अवसर है ताकि शैक्षणिक ज्ञान के अलावा उनमें व्यावसायिक कौशल (वॉकेशनल स्किल) का विकास भी हो सके। इस समर कैंप के अंतिम दिन 3 जून को बच्चे प्रधानमंत्री युवा मेंटरशिप कार्यक्रम के अंतर्गत चयनित लेखकों से भी बात करेंगे। एनबीटी, इंडिया के समर कैंप में भाग लेने के लिए बच्चे अभी भी नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के वसंत कुंज स्थित मुख्यालय में आकर आफलाइन पंजीकरण करवा सकते हैं। स्थान उपलब्ध होने पर ही उनको अवसर मिल सकेगा।

स्वाति मालीवाल मामले पर क्यों चुप्पी साधे बैठे हैं केजरीवाल: भाजपा

नई दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने राज्यसभा सांसद स्वाति मालीवाल प्रकरण में मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की चुप्पी पर सवाल खड़ा करते हुए कहा कि केजरीवाल की चुप्पी खुद सबकुछ बता रही है। भाजपा ने आरोप लगाया कि मुख्यमंत्री केजरीवाल समझौते के लिए मालीवाल पर दबाव डाल रहे हैं।

गोवा के मुख्यमंत्री प्रमोद सावंत और भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता सुधांशु त्रिवेदी ने बुधवार को पार्टी मुख्यालय में संयुक्त संवाददाता सम्मेलन में दावा किया कि दिल्ली के मुख्यमंत्री आवास से स्वाति मालीवाल मामले से संबंधित सीसीटीवी फुटेज के कथित तौर पर गायब होने और इस मामले में गिरफ्तार बिभव कुमार को बचाने के केजरीवाल के प्रयासों से उनकी संलिप्तता का पता चलता है। आम आदमी पार्टी (आआपा) के इस आरोप को खारिज करते हुए कि पूरे प्रकरण के पीछे भाजपा का हाथ है, सावंत ने कहा कि मालीवाल केजरीवाल की पुरानी सहयोगी थीं और उन्होंने खुद मुख्यमंत्री के आवास पर उनके साथ मारपीट करने के लिए कुमार के खिलाफ पुलिस में मामला दर्ज कराया था। उन्होंने कहा कि दिल्ली में लोग सवाल पूछ रहे हैं कि 9 दिन से स्वाति मालीवाल केस में दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल चुप्पी साधे क्यों बैठे हुए हैं? मुझे लगता है कि स्वाति मालीवाल के केस में केजरीवाल की चुप्पी खुद सबकुछ बता रही है। आम आदमी पार्टी अब महिला विरोधी और दिल्ली विरोधी पार्टी बन गई है। स्वाति मालीवाल पिछले 20 साल से केजरीवाल की साथी थीं, फिर भी उनके साथ उनके ही घर में मारपीट की गई। सावंत ने कहा कि स्वाति मालीवाल का उत्पीड़न करने वाला विभव कुमार किस हैसियत से मुख्यमंत्री आवास पर रहता है? इसका जवाब भी केजरीवाल को देना पड़ेगा। अगर बिभव कुमार की इस मामले में कोई मिलीभगत नहीं है, तो उसने अपने मोबाइल को फॉर्मेट क्यों किया? ये भी उन्हें बताना पड़ेगा।

आप दिल्ली में केंद्र की योजनाएं लागू नहीं कर रही, मेट्रो परियोजना में बाधाएं पैदा कीं : हरदीप पुरी

नई दिल्ली। केंद्रीय मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने आम आदमी पार्टी सरकार पर प्रधानमंत्री आवास योजना और आयुष्मान भारत समेत केन्द्र की नरेन्द्र मोदी सरकार की प्रमुख योजनाओं को राष्ट्रीय राजधानी में लागू नहीं करने का बुधवार को आरोप लगाया। पुरी ने एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए यह भी आरोप लगाया कि अरविंद केजरीवाल सरकार ने हर चरण में मेट्रो परियोजना के क्रियान्वयन में बाधाएं पैदा कीं। दिल्ली मेट्रो वर्तमान में चौथे चरण के तहत परियोजनाओं का क्रियान्वयन कर रही है। केंद्रीय आवास और शहरी मामलों के मंत्री ने कहा कि उनके मंत्रालय ने राष्ट्रीय राजधानी में 53,000 करोड़ रुपये की परियोजनाएं लागू की हैं। भाजपा नेता ने आम आदमी पार्टी की राज्यसभा सदस्य स्वाति मालीवाल पर मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के सहयोगी बिभव कुमार द्वारा उनके आवास पर कथित हमला करने के मामले में चुप्पी साधने के लिए केजरीवाल की आलोचना की। दिल्ली में छठे चरण में 25 मई को मतदान होना है।

मेट्रो में केजरीवाल को निशाना बनाने वाले दीवार लेखन का आरोपी बरेली से गिरफ्तार

नई दिल्ली। दिल्ली मेट्रो के कुछ स्टेशनों और कोच के भीतर कथित तौर पर अरविंद केजरीवाल विरोधी दीवार लेखन करने वाले 33 वर्षीय आरोपी को पुलिस ने उत्तर प्रदेश के बरेली से गिरफ्तार किया है। एक अधिकारी ने जानकारी दी। अधिकारी ने बताया कि अपने इंस्टाग्राम एकाउन्ट पर भाम्रक तस्वीरे और संदेश साझा करने वाले की पहचान अंकित गोयल के रुप में की गई है। सोमवार को इस दीवार लेखन की कई तस्वीरें सोशल मीडिया पर वायरल हो गई। आम आदमी पार्टी ने इस कृत्य की कड़ी निंदा की थी। कुछ देर बाद एक व्यक्ति के मेट्रो की दीवार पर लिखने का सीसीटीवी फुटेज भी इंटरनेट पर अपलोड हो गया। अधिकारी ने बताया कि आरोपी गोयल बरेली के एक सरकारी बैंक में ऋण प्रबंधक है। गोयल ने दिल्ली आकर मेट्रो के कोच और स्टेशनों पर संदेश लिखे और वह अपने शहर बरेली लौट गया था। गोयल ने पुलिस को बताया कि पहले वह एक आप समर्थक था लेकिन हाल में आप की कार्यप्रणाली को देखकर वह पार्टी से नाखुश था। उसने मेट्रो ट्रेनों और स्टेशनों पर लिखे गए संदेशों को इंस्टाग्राम अकाउंट 'अंकित डॉट गोयल 91 के माध्यम से साझा किया गया था। मेट्रो कोच के अंदर लिखे गए संदेशों में से एक में लिखा गया था, केजरीवाल दिल्ली छोड़ दीजिए प्लीज । अन्यथा, आपको तीन थप्पड़ याद करने होंगे जो चुनाव से पहले आपको पड़े थे। अब असली और वास्तविक मुक्का/थप्पड़ जल्द ही पड़ेगा। आज की बैठक झंडेवालान में। अंकित डॉट गोयल 91।''

लोकसभा चुनाव: पूर्वी दिल्ली निर्वाचन क्षेत्र के मतदाताओं का स्थानीय मुद्दों पर जोर

शाहनवाज सैफ, संवाददाता

नई दिल्ली। लोकसभा चुनाव में राजनीतिक दल राष्ट्रीय स्तर पर भले ही कोई विमर्श गढ़ चुनावी बिसात पर एक दूसरे को मात देने का प्रयास करें लेकिन राष्ट्रीय राजधानी की पूर्वी दिल्ली संसदीय सीट के मतदाताओं के लिए पार्किंग स्थलों की कमी, बड़ी संख्या में अनधिकृत कॉलोनियों के कारण होने वाली तमाम परेशानियां तथा गाजीपुर लैंडफिल साइट से फैलते प्रदूषण जैसे मुद्दे ही प्रमुख हैं। कुछ इलाकों में अपराध और जल जमाव की समस्या सहित कुछ अन्य बुनियादी समस्याएं भी मतदाताओं के लिए चिंता का विषय हैं लेकिन यह तो चार जून को पता चलेगा कि इन स्थानीय मुद्दों ने चुनाव में क्या असर दिखाया और उम्मीदवारों की राजनीतिक किस्मत का फैसला करने में इनकी कितनी भूमिका रही।

पूर्वी दिल्ली निर्वाचन क्षेत्र में 21,20,584 मतदाता हैं और यहां भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के उम्मीदवार हर्ष मल्होत्रा और आम आदमी पार्टी (आप) के उम्मीदवार कुलदीप कुमार के बीच मुकाबला है। यहां छठे चरण में 25 मई को मतदान होगा और नतीजे चार जून को आएंगे। क्षेत्र के मतदाताओं के बीच लोकसभा चुनाव से जुड़े मुद्दों के बारे में चर्चा करने पर अधिकांश का जोर स्थानीय मुद्दों पर दिखा। कोंडली निवासी विमल सिंह ने कहा कि क्षेत्र की जनता के लिए तो पार्किंग और पानी की समस्या ही मुख्य मुद्दे हैं। उन्होंने कहा, ''पार्किंग स्थलों का ना होना क्षेत्र की मुख्य समस्या है। हमारे पास यहां उचित पार्किंग स्थान नहीं है। क्षेत्र में नियमित रूप से पानी की आपूर्ति भी प्रभावित होती है। इसके अलावा हमारे क्षेत्र में साफ-सुथरे पार्क नहीं हैं जहां बच्चे खेल सकें। सिंह ने कहा, ''मानसून के दौरान तो सड़कों पर इतना पानी भर जाता है कि यात्रियों के पैदल चलना दूभर हो जाता है। कल्याणपुरी के इलाके में यातायात भी एक भरी समस्या है, जहां यात्री व्यस्त समय के दौरान अक्सर घंटों फंस रह जाते हैं। गाजीपुर निवासी सूरज कुमार ने कहा कि वे चाहते हैं कि उनके सांसद 'गाजीपुर लैंडफिल साइट' के कारण होने वाली बदबू और प्रदूषण से उन्हें राहत दिलाने के लिए काम करें। कुमार ने कहा, ''हम इस लैंडफिल साइट से राहत चाहते हैं। यहां से लगातार आने वाली दुर्गन्ध ने लोगों का जीना मुहाल कर रखा है। कई बार तो यहां आपूर्ति किया जाने वाले पानी इतना बदबूदार होता है कि आप उसका कुछ उपयोग भी नहीं कर सकते। आस-पास मांस के बाजार होने की वजह से दुर्गन्ध इस कदर फैलता है कि कई बार तो सांस लेना भी दूभर हो जाता है। पूर्वी दिल्ली निर्वाचन क्षेत्र में एक तरफ लाजपत नगर, लक्ष्मी नगर, गांधी नगर, शाहदरा और कृष्णा नगर जैसे बड़े बाजार हैं तो विवेक विहार, मयूर विहार, मंडावली, सूरजमल विहार, प्रीत विहार और त्रिलोकपुरी जैसे आवासीय क्षेत्र भी हैं।

फेडरेशन ऑफ लाजपत नगर ट्रेडर्स एसोसिएशन के महासचिव कुलदीप कुमार ने कहा कि बाजार में दुकानदारों के लिए बुनियादी सुविधाओं की कमी एक बड़ी चिंता है। उन्होंने कहा, ''शहर के विभिन्न हिस्सों से भी कई महिलाएं खरीदारी के लिए आती हैं लेकिन बाजार में उनके लिए साफ शौचालय नहीं हैं। बिजली के तार जहां-तहां लटक रहे होते हैं। उन्होंने कहा, ''यह क्षेत्र पहले नई दिल्ली विधानसभा क्षेत्र का हिस्सा था। हालांकि, यह सीट अब पूर्वी दिल्ली निर्वाचन क्षेत्र का हिस्सा है। हम मांग करते हैं कि हमारे बाजार को फिर से नई दिल्ली निर्वाचन क्षेत्र में स्थानांतरित कर दिया जाना चाहिए। आनंद विहार और गाजीपुर इलाके में प्रदूषण जहां एक बड़ी समस्या है, वहीं कल्याणपुरी, त्रिलोकपुरी और मंडावली इलाके के लोग आए दिन होने वाली अपराध की घटनाओं को लेकर ज्यादा चिंतित हैं। मयूर विहार निवासी रोहिणी कौल ने कहा, ''क्षेत्र में पार्कों का रखरखाव नियमित तरीके से किया जाना चाहिए। यहां नालियों को भी अच्छी तरह से ढका नहीं गया है। इस निर्वाचन क्षेत्र में कुछ अनधिकृत कॉलोनियां भी हैं। ऐसी कॉलोनियों के निवासियों ने कहा कि हर कोई उनकी कॉलोनियों को नियमित करने की बात करता है, लेकिन कोई भी इसकी बेहतरी के लिए काम नहीं करता है। ऐसे ही एक अनधिकृत कॉलोनी के निवासी मोहम्मद असद ने कहा, ''हम पानी और साफ सड़कों सहित बुनियादी सुविधाएं चाहते हैं। चुनाव के दौरान झुग्गीवासियों के मुद्दे हमेशा नेताओं के लिए सर्वोच्च प्राथमिकताओं में रहते हैं। लेकिन चुनाव जीतने के बाद कोई भी हमारे लिए काम नहीं करता है। विपक्षी गठबंधन 'इंडिया' के उम्मीदवार कुलदीप कुमार से जब उनकी प्राथमिकताओं के बारे में पूछा गया तो उन्होंने बताया कि कानून व्यवस्था में सुधार, अतिक्रमित भूमि को मुक्त कराने और गाजीपुर लैंडफिल साइट को हटाने जैसे मुद्दों पर उनका जोर रहेगा। उन्होंने कहा, ''दिल्ली विश्वविद्यालय का नॉर्थ कैंपस और साउथ कैंपस है लेकिन ईस्ट कैंपस नहीं है। ईस्ट कैंपस हासिल करना उनकी प्रमुख मांग होगी। मेट्रो के माध्यम से संपर्क व्यवस्था और मजबूत करना भी मेरी प्राथमिकता होगी। भाजपा उम्मीदवार हर्ष मल्होत्रा ने हाल में कहा था कि अगर वह चुनाव जीतते हैं तो यमुना पार इलाके में एम्स की तर्ज पर एक बड़ा अस्पताल और झुग्गीवासियों को फ्लैट देना उनकी प्राथमिकताओं में शामिल होगा।

एक नजर

फार्म हाउस के स्वीमिंग पूल में डूबने से बच्चे की मौत

नई दिल्ली। अलीपुर स्थित एक फार्म हाउस के स्वीमिंग पूल में नहाने के दौरान वंश (11) की मौत हो गई। पिता मोबाइल पर बात करने के लिए पूल से बाहर निकले थे। इस बीच चंद मिनटों में वंश डूब गया। बेटे को पूल से निकालकर पिता नजदीकी अस्पताल ले गए, जहां उसे मृत घोषित कर दिया गया। परिवार का आरोप है कि फार्म हाउस दो पुलिसकर्मियों ने लीज पर लिया हुआ है। मौके पर कोई सुरक्षा गार्ड भी नहीं था। जांच में लापरवाही का आरोप लगाते हुए बुधवार को परिजनों ने अलीपुर थाने के बाहर प्रदर्शन किया। पुलिस मामला दर्ज कर जांच कर रही है। गढ़ी निवासी वंश के परिवार में पिता बलराज, मां नीलम, 14 साल की बड़ी बहन है। बलराज मिनी टेंपो चलाते हैं। वंश निजी स्कूल में छठी का छात्र था। परिजनों के मुताबिक, 14 मई को वंश पिता के साथ निजी फार्म हाउस में नहाने गया था। यहां 150 रुपये लेकर एक घंटे तक नहाने की व्यवस्था है। पिता-पुत्र पूल में नहा रहे थे। इस बीच बलराज के मोबाइल पर घर से कॉल आई जिसे सुनने के लिए वे बाहर निकल गए। उस समय कुछ और लड़के वहां नहा रहे थे। वापस आने पर पिता को वंश डूबा हुआ दिखा। बलराज उसे निकालकर नजदीकी अस्पताल ले गए, जहां उसे मृत घोषित कर दिया गया। पिता ने वंश के साथ अनहोनी की आशंका जताई है। पुलिस पोस्टमार्टम रिपोर्ट का इंतजार रही है। परिजनों ने बुधवार को प्रदर्शन किया तो पुलिस अधिकारियों ने उचित कार्रवाई का आश्वासन देकर उन्हें घर भेज दिया।

युवक को बदमाशों ने मारी गोली, हालत गंभीर

नई दिल्ली। दक्षिणी जिले के मैदानगढ़ी थाना इलाके में बीती रात अनिकेत नामक एक युवक को गोली मार दी गई। घायल हालत में उसे तुरंत नजदीक के अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां उसकी हालत स्थिर बताई जा रही है। उसका इलाज साकेत के मैक्स हॉस्पिटल में चल रहा है। दक्षिणी जिले के डीसीपी अंकित चौहान ने इस मामले की पुष्टि करते हुए बताया कि पुलिस को मंगलवार रात 9:00 बजे पीसीआर कॉल मिली, जिसमें बताया गया कि मैदान गढ़ी थाना इलाके में फायरिंग हुई है। मौके पर पुलिस टीम पहुंची तो राजपुर खुर्द में यह वारदात हुई थी। क्राइम टीम को भी जांच के लिए मौके पर बुलाया गया। वहां से कारतूस का एक खाली खोखा भी मिला है। घायल के बारे में पता करने पर जानकारी मिली की उसे गोली लगी है। गोली अनिकेत के शरीर के पिछले हिस्से में लगी है। इस मामले में मैदानगढ़ी थाना में हत्या के प्रयास के तहत एफआईआर दर्ज करके छानबीन की जा रही है। आरोपितों के बारे में पता लगाकर उनकी गिरफ्तारी की कोशिश की जा रही है। फिलहाल, गोली मारने की खास वजह का पता नहीं चल पाया है।

85 वर्ष से अधिक उम्र के बुजुर्ग और दिव्यांग ले सकेंगे पिक एंड ड्रॉप की सुविधा

नई दिल्ली। 85 वर्ष से अधिक उम्र के बुजुर्ग और दिव्यांग मतदाताओं को मतदान केंद्र तक ले जाने और घर छोड़ने की सुविधा चुनाव आयोग की ओर से दी जाएगी। इसके लिए चुनाव आयोग की ओर से जारी नंबर पर एसएमएस करना होगा। ऐसे मतदाता जो दिव्यांग हैं या 85 वर्ष से अधिक हैं, उन्हें पिक एंड ड्राप की सुविधा मिलेगी। दिल्ली के मुख्य निर्वाचन अधिकारी कार्यालय के मुताबिक, इस सुविधा का लाभ लेने के लिए पात्र मतदाताओं को 7738299899 नंबर पर एसएमएस भेजना होगा। 24 मई की दोपहर 12 बजे तक इस सुविधा का लाभ लेने के लिए एसएमएस कर सकते हैं। मोबाइल के एसएमएस बॉक्स में जाकर ईपीईसी लिखकर स्पेस देकर वोटर आईडी कार्ड का नंबर लिखें। इसके बाद स्पेस देकर 'श्रद्धष्म' लिखें। इसके बाद 7738299899 नंबर पर एसएमएस भेजना होगा। बाद में एक एसएमएस आएगा कि आवेदन चुनाव आयोग को प्राप्त हो गया है। चुनाव आयोग जांच करेगा कि आवेदक 85 वर्ष से अधिक उम्र के हैं या नहीं, दिव्यांग हैं या नहीं। चुनाव आयोग की ओर से आवेदन करने वाले व्यक्ति को कॉल करके भी सत्यापित किया जाएगा। यदि पात्र हैं तो एसएमएस के जरिये पिक एंड ड्राप के लिए चयन होगा। इस बार 85 वर्ष से अधिक मतदाताओं की संख्या 97823 और दिव्यांग मतदाताओं की संख्या 77480 है।

नंबर प्लेट बदलकर बेचते थे चोरी के दोपहिया वाहन, दो गिरफ्तार

नई दिल्ली। आउटर नार्थ जिले की एएटीएस ने एक ऐसे गिरोह का खुलासा किया है जो फर्जी नंबर प्लेट लगाकर चोरी के दोपहिया वाहन बेचते थे। पुलिस ने दो आरोपियों को गिरफ्तार कर इनके कब्जे से चोरी के नौ दोपहिया और एक ई रिक्शा बरामद किए हैं। जानकारी के अनुसार एएटीएस प्रभारी इंस्पेक्टर राज मलिक की टीम को सोमवार को गिरोह के सदस्यों के रोहिणी सेक्टर 29 इलाके में आने की सूचना मिली थी। इस जानकारी के आधार पर टीम ने बिना नंबर प्लेट की स्कूटी से आ रहे दो युवकों को दबोचा। इनकी पहचान दिवाकर पासवान और शिव कुमार के तौर पर हुई। आरोपियों ने बताया कि वे नंबर प्लेट बदलकर फर्जी कागजात तैयार करते थे। फिर छोटी छोटी कंपनियों के डिलीवरी ब्वाय को कम कीमत पर उन्हें झांसा देकर बेच दिया जाता था। पुलिस के अनुसार इस गिरोह ने अब तक दो सौ से अधिक बाइक चोरी कर बेचा है।

ट्रैफिक पुलिस बनकर क्रेन से उठाते थे लग्ज़री गाड़ियां, पार्ट्स बेचकर कमाते थे लाखों, चोर समेत दो स्क्रैप डीलर गिरफ्तार

नई दिल्ली,एजेंसी। अक्सर चोर चोरियां करने के लिए नए-नए हथकंडे अपनाते हैं और चोरी की घटनाओं को अंजाम देते हैं. देश की राजधानी दिल्ली में भी एक ऐसा ही अजब गजब चोरी का मामला सामने आया है. जहां ट्रैफिक पुलिस बनकर चोर अक्सर महंगी कार को गलत पार्किंग या किसी अन्य कानून का हवाला देकर क्रेन से उठाकर ले जाते थे. दक्षिण पश्चिम जिला पुलिस ने चोरों के शातिर गैंग का भंडाफोड़ किया है जिसमें वसंत कुंज उत्तर थाने की पुलिस टीम ने एक चोर सहित दो स्क्रैप डीलरों को गिरफ्तार किया है।

गिरफ्तार किए गए आरोपियों की पहचान विकास पुत्र आजाद सिंह, निवासी कुसुमपुर पहाड़ी वसंत विहार नई दिल्ली के रूप में हुई है. आरोपी विकास इस पूरे मामले में मास्टरमाइंड है. दूसरे आरोपी की पहचान महेंद्र सिंह पुत्र रिचपाल सिंह निवासी पीतमपुर के रूप में हुई है, आरोपी महेंद्र स्क्रैप डीलर है. तीसरे आरोपी की पहचान रोशन पुत्र हरि अहिरवार निवासी मायापुरी के रूप में हुई है. आरोपी रोशन मायापुरी में काम करता है और वह स्क्रैप डीलर है। दक्षिण पश्चिम जिले के डीसीपी रोहित मीणा ने बताया कि वसंत कुंज बी ब्लॉक के रहने वाले एक शख्स ने थाने में शिकायत दी, कि 15 मई 2024 को दिल्ली ट्रैफिक पुलिस की ड्रेस में आया एक व्यक्ति उनकी गाड़ी को क्रेन से उठाकर ले गया. इसके बाद उन्होंने थाने जाकर पता किया तो थाने में गाड़ी नहीं मिली. पुलिस ने मामला दर्ज कर आगे की जांच शुरू की और आरोपियों को पकड़ने के लिए एक टीम बनाई गई। डीसीपी ने बताया कि जिस जगह से गाड़ी चोरी की गई थी वहां से उस क्रेन के रूट को लगातार स्कैन किया गया. सैकड़ों सीसीटीवी फुटेज की मदद से पता चला कि चोरी की कार को कंझावला के स्क्रैप डीलर के पास छोड़ दिया गया है. पुलिस ने पहचान करने के बाद जब क्रेन के ड्राइवर को पकड़ा तो पता चला कि एक युवक ने खुद को ट्रैफिक पुलिस बता कर क्रेन बुक की थी. इसके बाद पुलिस टीम ने कंझावला इलाके में छापा मारा और महेंद्र को गिरफ्तार कर लिया. महेंद्र स्क्रैप डीलर है, महेंद्र के गोदाम से दिल्ली पुलिस को सिर्फ कार की बॉडी मिली क्योंकि उसने इसके पार्ट्स को अलग-अलग करके बेच दिया था. टीम ने महेंद्र से पूछताछ की तो उसने बताया कि ये गाड़ी उसके पास चोरी करके कुसुमपुर पहाड़ी के रहने वाले विकास ने बेची थी. इसके बाद पुलिस टीम ने कुसुमपुर पहाड़ी पर छापा मारा और 29 साल के विकास को गिरफ्तार कर लिया।

एआईसीटीई और स्किलेबल बढ़ाएंगे विद्यार्थियों का कौशल

नई दिल्ली। अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (एआईसीटीई) और स्किलेबल ने विद्यार्थियों का कौशल बढ़ाने के लिए साझा प्रयास शुरू किए हैं। इसके लिए 10 लाख विद्यार्थियों का लक्ष्य रखा गया है। उभरती तकनीक सीखने के लिए अनुभावनात्मक शिक्षा में अग्रणी स्किलेबल ने इसके लिए संबाव (बिजनेस-टू-एकेडमिक वेंचर्स के लिए स्किलेबल का एकेडमिक मॉडल) की शुरुआत की है।

स्किलेबल ने इसके लिए अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (एआईसीटीई) के साथ साझेदारी की है। यह जानकारी स्कलेबल की विज्ञप्ति में दी गई है। स्किलेबल के संस्थापक अंकुर गोयल ने कहा है कि यह अनूठा प्रोग्राम है। इसे शैक्षणिक और उद्योग के बीच के अंतर को दूर करने के लिए तकनीकी शिक्षा को नए रूप में पेश किया गया है। इससे एक ऐसा कार्यबल तैयार होगा जो सैद्धांतिक अवधारणा का वास्तविक दुनिया में इस्तेमाल करने में दक्ष होगा। संबाव के मूल में अनूठा शिक्षा विज्ञान निहित है। यह कठोर शैक्षणिक सिद्धांतों को व्यावहारिक, प्रायोगिक रूप से सीखने के रोमांच के साथ सहजता के साथ सामंजस्य बैठाता है। इससे स्टूडेंट्स बेहद ही बदलावकारी सफर की शुरुआत करेंगे। उन्होंने कहा है कि हमारा प्लेटफार्म भारत को दुनिया की कौशल (स्किल) राजधानी बनाने के लिए प्रयासरत है। स्किलेबल ने केंद्र सरकार के नजरिये के अनुरूप एआई, वेरी लार्ज स्केल इंटीग्रेशन, बिजनेस इंटेलिजेंस, डिसीजन इंटेलिजेंस , इंटरनेट ऑफ थिंग्स और साइबर सुरक्षा जैसी उभरती हुई तकनीक पर ध्यान केंद्रित किया है।

डीएमआरसी का फैसला, वोटिंग के दिन दिल्ली में सुबह 4 बजे से चलेगी मेट्रो

शोएब आलम, संद्भावना टुडे

नई दिल्ली। राजधानी दिल्ली में सभी सात लोकसभा सीटों पर छठे चरण में 25 मई को मतदान होना है. इसी कड़ी में दिल्ली मेट्रो रेल कोर्पोरशन (डीएमआरसी) ने मेट्रो की टाइमिंग में बदलाव किया है. डीएमआरसी के अनुसार, वोटिंग वाले दिन दिल्ली में सभी मेट्रो लाइन पर मेट्रो की सेवा सुबह 4 बजे से शुरू हो जाएगी।

डीएमआरसी के मुताबिक, शनिवार को दिल्ली में लोकसभा चुनाव के लिए वोटिंग होनी है. इस दिन सभी लाइनों पर दिल्ली मेट्रो ट्रेन सेवाएं सुबह 4 बजे से शुरू हो जाएगी. ताकि चुनाव ड्यूटी पर तैनात कर्मचारी इस सुविधा का लाभ उठा सकें. चुनाव वाले दिन सभी लाइनों पर सुबह 4 बजे से सुबह 6 बजे तक ट्रेनें 30 मिनट के अंतराल पर चलेंगी. जबकि, सुबह 6 बजे के बाद पूरा दिन मेट्रो अपने नियमित पुराने समय के अनुसार चलेंगी। डीटीसी की बसों की टाइमिंग में भी बदलाव इसी तरह डीटीसी की बसों की टाइमिंग में भी बदलाव किया गया है. डीटीसी ने 25 मई वोटिंग वाले दिन 35 रूटों पर सुबह 4 बजे बसों को चलाने का फैसला किया है. डीटीसी के इस फैसले से चुनाव ड्यूटी पर जाने वाले कर्मचारियों को फायदा मिलेगा। बता दें, भारत में

इन दिनों 18वीं लोकसभा के चुनाव चल रहे हैं. लोकसभा के यह चुनाव कुल सात चरणों पूरे होने हैं. छठवें चरण के लिए वोटिंग में दिल्ली भी शामिल है. 25 मई को दिल्ली की सात लोकसभा सीटों के लिए भी वोटिंग होगी. पांच चरण के तहत 447 लोकसभा सीटों पर मतदान हो चुके हैं. अब 115 लोकसभा सीटों पर दो चरणों में मतदान होनी है।

दिव्यांगों के लिए राज्य आयुक्त का पद भरने के लिए उठाए कदम, दिल्ली सरकार को हाईकोर्ट का आदेश

अशोक कुमार, सद्भावना टुडे संवाददाता

नई दिल्ली। दिल्ली उच्च न्यायालय ने बुधवार को दिल्ली सरकार से कहा कि वह दिव्यांग व्यक्तियों के लिए राज्य आयुक्त का पद भरने के लिए कदम उठाए. दिव्यांग व्यक्तियों के लिए आयुक्त (एससीपीडी) अदालत नेशनल फेडरेशन ऑफ द ब्लाइंड की एक याचिका पर सुनवाई कर रही थी, जिसमें पिछले साल के आदेश का अनुपालन न करने का आरोप लगाया गया था. इसमें अधिकारियों को दिव्यांग व्यक्तियों के लिए आरक्षित विभिन्न पदों में रिक्तियों के बैकलॉग को एक तय समय में भरने के लिए एक विशेष भर्ती अभियान चलाने का निर्देश दिया गया था.

संगठन की ओर से पेश वरिष्ठ वकील एसके रूंगटा ने कहा कि भर्ती अभियान के संबंध में अभी कार्रवाई नहीं की गई है और राज्य आयुक्त की अनुपस्थिति में मामले को मुख्य आयुक्त को भेजा जाना चाहिए. उन्होंने कहा कि क्योंकि एससीपीडी वहां नहीं है इसलिए इसे मुख्य आयुक्त के पास भेजा जाए. कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश मनमोहन और न्यायमूर्ति मनमीत पीएस अरोड़ा की पीठ ने याचिका पर नोटिस जारी किया और दिल्ली सरकार को अपना जवाब दाखिल करने को कहा. अदालत

ने कहा कि प्रतिवादी दिल्ली सरकार को सुनवाई की अगली तारीख से पहले दिल्ली के लिए दिव्यांग व्यक्तियों के लिए राज्य आयुक्त के पद को भरने के लिए कदम उठाने का निर्देश दिया जाता है. 6 मार्च 2023 को तत्कालीन मुख्य न्यायाधीश की अध्यक्षता वाली खंडपीठ ने दिल्ली सरकार को दिव्यांग व्यक्तियों के लिए आरक्षित विभिन्न पदों पर रिक्तियों के बैकलॉग को समयबद्ध तरीके से भरने के लिए एक विशेष भर्ती अभियान चलाने का निर्देश दिया था. इसमें दिव्यांग व्यक्तियों के संबंध में पदोन्नति के लिए आरक्षण के खिलाफ विभिन्न विभागों द्वारा रिपोर्ट की गई रिक्तियों को भरने का निर्देश दिया था और कहा था कि इसके द्वारा निर्धारित समय-सारिणी से कोई भी विचलन गैर अनुपालन के लिए अवमानना कार्रवाई को आमंत्रित करेगा. अदालत ने एससीपीडी को अभियान की निगरानी करने के लिए कहा था और स्पष्ट किया था कि एक बार प्रक्रिया समाप्त हो जाने के बाद आयुक्त उन 33 विभागों से रिक्ति-वार रोस्टर की जांच करने और किसी भी बैकलॉग को संबोधित करने के लिए स्वतंत्र होंगे. जिन्होंने शून्य रिक्तियों की सूचना दी है.

प्रगति मैदान के आसपास यातायात रहेगा प्रभावित

शहजाद सैफ, सद्भावना टुडे संवाददाता

नई दिल्ली। प्रगति मैदान स्थित भारत मंडपम में गुरुवार की सुबह आयोजित होने वाले कार्यक्रम के चलते यातायात प्रभावित रहेगा। यातायात पुलिस ने इसे लेकर ट्रैफिक एडवाइजरी जारी की है। यातायात पुलिस के मुताबिक गुरुवार की सुबह आठ बजे से दोपहर एक बजे तक भारत मंडपम में आयोजित समारोह में बड़ी संख्या में लोगों के शामिल होने की संभावना है। इसके चलते आसपास के कई मार्गों पर यातायात संबंधी कुछ प्रतिबंध और मार्ग परिवर्तन लागू किया जाएगा। मथुरा रोड और भैरो मार्ग पर किसी भी वाहन को कहीं भी रुकने या वाहन खड़ा करने की अनुमति नहीं होगी। जनता के लिए सामान्य प्रवेश के अनुमति नहीं है। उपरोक्त सड़कों पर खड़े किए गए वाहनों को हटा दिया जाएगा और अनुचित पार्किंग और कानूनी निर्देशों की अवज्ञा करने पर चालान किया जाएगा। यहां से हटाए गए वाहनों को भैरो मंदिर, भैरो मार्ग के सामने यातायात पुलिस की जगह पर खड़ा किया जाएगा।

इन मार्गों से बचें

यातायात पुलिस के मुताबिक तिलक मार्ग-भगवान दास रोड क्रासिंग, पुराना किला रोड-मथुरा रोड क्रासिंग, शेरशाह रोड-मथुरा रोड क्रासिंग, डॉ. जाकिर हुसैन मार्ग-सुब्रमण्यम भारती मार्ग क्रासिंग,

पंडारा रोड-सुब्रमण्यम भारती मार्ग क्रासिंग, क्यू प्वाइंट, गोल चक्कर मानसिंह रोड, गोल चक्कर जसवंत सिंह रोड, गोल चक्कर केजी मार्ग-फिरोजशाह रोड क्रासिंग, गोल चक्कर मंडी हाउस पर मार्ग परिवर्तन लागू किया जाएगा। यातायात पुलिस ने भैरो मार्ग, पुराना किला रोड, शेरशाह रोड, मथुरा रोड डब्ल्यू प्वाइंट से मथुरा रोड तक, सी-हेक्सागन इंडिया गेट आदि मार्गों से गुजरने से बचने की सलाह दी है।

चाकू लगने के बाद भी घायल कांस्टेबल ने बदमाश को दबोचा

नई दिल्ली। रूप नगर इलाके में सोमवार देर रात गश्त कर रहे कांस्टेबल को बदमाश ने चाकू मारकर घायल कर दिया। घायल होने के बाद भी कांस्टेबल ने बदमाश को दबोच लिया। हालांकि, बदमाश का साथी बाइक समेत भागने में कामयाब हो गया, जिसकी तलाश पुलिस कर रही है। जानकारी के अनुसार रूप नगर थाने में तैनात हेडकांस्टेबल प्रवीन अपने साथी कांस्टेबल शुभम के साथ इलाके में गश्त कर रहा था। तभी किसी ने बताया कि नांगिया पार्क के पास बाइक सवार दो संदिग्ध घूम रहे हैं। जब पुलिसकर्मी पहुंचे तो दोनों युवक भागने लगे। पुलिसकर्मियों ने पीछा कर उन्हें रोका। शुभम ने बाइक पर सवार युवक की तलाशी लेनी शुरू की। इस दौरान युवक ने कांस्टेबल पर चाकू से वार किया। पुलिसकर्मी ने खुद को पीछे किया, लेकिन उसकी हथेली में चाकू घुस गया। इसके बाद हमलावर ने भागने की कोशिश की तो शुभम उसपर टूट पड़ा और पकड़ ढीली नहीं की।

जेल में बंद सजायाफ्ता कैदी की मौत

ग्रेटर नोएडा। लुक्सर जेल में बंद सजायाफ्ता कैदी की बुधवार की सुबह अस्पताल में मौत हो गई। एक किशोरी से दुष्कर्म के मामले में कैदी सजा भुगत रहा था। वह कैंसर से पीड़ित बताया जा रहा है। कैदी को मुजफ्फरनगर जेल से पिछले साल लुक्सर जेल में शिफ्ट किया गया था। पुलिस ने शव कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा है।

पुलिस के मुताबिक जिला मुजफ्फरनगर के मोहल्ला खादर वाला का रहने वाला 31 वर्षीय परवेज लुक्सर जेल में बंद था। परवेज के खिलाफ चार साल पहले जनपद मुजफ्फरनगर की कोतवाली नगर में किशोरी से दुष्कर्म और पास्को ऐक्ट के तहत एक मुकदमा दर्ज हुआ था। मुजफ्फरनगर की अदालत ने किशोरी से दुष्कर्म के मामले में परवेज को बीस साल की सजा सुनाई थी। 17 सितंबर 2023 को जनपद मुजफ्फरनगर से परवेज को गौतमबुद्ध नगर कारागार में स्थांतरित किया गया था। वह काफी समय से कैंसर की बीमारी से पीड़ित था। उसका उपचार दिल्ली के सफदरजंग अस्पताल में चल रहा था। बुधवार की सुबह कैदी परवेज को सांस लेने में दिक्कत हुई। उसे उपचार के लिए कासना स्थित राजकीय आयुर्विज्ञान संस्थान में भर्ती करवाया गया। जहां उपचार के दौरान उसकी मौत हो गई है। सेक्टर ईकोटेक वन कोतवाली प्रभारी अनुज कुमार ने बताया कि शव कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है। पुलिस द्वारा मामले की जांच की जा रही है।

लिफ्ट में फंसे बुजुर्ग दंपती को निकाले पहुंची टीम दूसरी लिफ्ट में फंसी

ग्रेटर नोएडा। अजनारा होम्स की लिफ्ट में बुजुर्ग दंपती 30 मिनट तक फंस रहे। उनको निकलने पहुंची टीम दूसरी लिफ्ट में फंस गई। सुरक्षा गार्डों ने किसी तरह दोनों लिफ्ट में फंसे लोगों को बाहर निकाला। सोसाइटी निवासियों के मुताबिक लिफ्ट फंसने की घटनाएं बढ़ रही हैं। सोसाइटी के अपार्टमेंट ओनर्स एसोसिएशन (एओए) ने लिफ्ट व्यवस्था में सुधार नहीं होने पर आंदोलन की चेतावनी दी है।

मंगलवार को अजनारा होम्स सोसाइटी के टावर जे निवासी त्रिभुवन तिवारी पत्नी के साथ लिफ्ट से नीचे आ रहे थे। इस दौरान अचानक लिफ्ट रुक गई। उनके सायरन बजाने पर रेस्क्यू करने के लिए टीम दूसरी लिफ्ट से ऊपर आ रही थी। वह टीम भी लिफ्ट में फंस गई। सुरक्षा कर्मियों ने काफी मशक्कत के बाद दोनों को करीब 35 मिनट के बाद बाहर निकाला। एओए अध्यक्ष चंदन सिन्हा ने बताया कि मेंटेनेंस टीम और लिफ्ट मेंटेनेंस एजेंसी को जिम्मेदारी लेनी होगी। उन्होंने मेंटेनेंस टीम से एक लिफ्ट इमरजेंसी हेल्पलाइन और पर्याप्त एआरडी बैटरी समेत अन्य

जरूरी व्यवस्था करने की मांग की है। साथ ही तत्काल सुधार नहीं होने पर आंदोलन की चेतावनी दी है।

एक माह में कई बार हुए हादसे

सोसाइटी निवासियों ने बताया कि एक माह में कई लोग लिफ्ट में फंस चुके हैं। इसी सप्ताह टावर वाई-1 निवासी पंकज बंसल पत्नी व बच्चे समेत अन्य लोगों के साथ लिफ्ट में फंस गए। पिछले सप्ताह में दो बार टावर एम की लिफ्ट में लोगों के फंसने की घटना हो चुकी है। लेकिन समस्या सुधारने के लिए कोई गंभीर प्रयास नहीं हुए। हर बार तकनीकी खामी बताकर खानापूर्ति करने का प्रयास किया है।

दनकौर की सरकारी अस्पताल में सुविधाओं की भारी कमी से जूझ रहे मरीज, डीएम को सौंपा ज्ञापन

ग्रेटर नोएडा। ग्रेटर नोएडा के दनकौर स्थित सरकारी अस्पताल में सुविधाओं के अभाव में मरीज को होने वाली परेशानियों के मद्देनजर करप्शन फ्री इंडिया संगठन के कार्यकर्ताओं ने जिलाधिकारी के नाम ज्ञापन सौंपा. बुधवार कलेक्ट्रेट पर प्रदर्शन के बाद एसडीएम अरविंद कुमार को जिलाधिकारी मनीष कुमार वर्मा के नाम ज्ञापन सौंपा. इस दौरान कार्यकर्ताओं ने दनकौर के सरकारी अस्पताल में मरीजों को मिलने वाली सुविधाओं को बढ़ाने की मांग की.

करप्शन फ्री इंडिया संगठन के कार्यकर्ताओं का कहना है कि दनकौर के सरकारी अस्पताल में रात में डॉक्टर की कोई सुविधा नहीं है. दवाइयां भी बहुत कम संख्या में उपलब्ध है. इसके साथ ही अस्पताल में साफ सफाई की उचित व्यवस्था नहीं है. अस्पताल के इमरजेंसी में कोई डॉक्टर नहीं है. साथ ही वहां पर नसबंदी करने की सुविधा भी बंद कर दी गई है. अस्पताल में जो महिला डॉक्टर नियुक्त की गई है वह समय पर नहीं आती. ऐसे में लोगों को इमरजेंसी के दौरान सुविधा न मिलने से काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है.करप्शन फ्री इंडिया संगठन के

संस्थापक चौधरी प्रवीण भारतीय ने बताया कि दनकौर कस्बे में स्थित सरकारी अस्पताल के अंतर्गत काफी सारे गांव आते हैं. ऐसे में उन गांव से आने वाले मरीजों को एकमात्र सरकारी अस्पताल दनकौर है. जहां पर मरीजों को मिलने वाली सुविधाएं नाम मात्र की है. इस भीषण गर्मी में दनकौर क्षेत्र के बुजुर्ग ग्रामीण गरीब, किसान और मजदूर पैदल चलकर सरकारी अस्पताल में इलाज की सुविधाओं के लिए पहुंचता है. लेकिन वहां पर मौजूद समस्याओं के कारण जरूरतमंद मरीजों को इलाज नहीं मिल पा रहा है. अस्पताल में कोई इंचार्ज डॉक्टर नहीं है, जो वहां व्यवस्थाओं को संभाल सके. करप्शन फ्री संगठन से मास्टर दिनेश नागर ने बताया कि अस्पताल की बिल्डिंग का भवन भी जर्जर हो चुकी है. अस्पताल में जो अच्छे डॉक्टर नही है जो डॉक्टर थे उन्हें दनकौर से डाढ़ा अस्पताल में ट्रांसफर कर दिया गया है. ऐसे में डॉक्टरों की कमी के चलते मध्यम वर्ग को अच्छा और सुलभ इलाज अस्पताल में उपलब्ध नहीं हो पा रहा है. ज्ञापन की मांगें पूरी नहीं होने पर धरने का किया ऐलान: बुधवार को करप्शन फ्री इंडिया संगठन द्वारा जिलाधिकारी मनीष कुमार वर्मा के नाम ज्ञापन सौंपा गया. इस ज्ञापन में दनकौर कस्बे में स्थित सरकारी अस्पताल में सभी सुविधाओं को जल्द बहाल करने की मांग की गई है. साथ ही कार्यकर्ताओं ने कहा कि अगर उनकी मांगों पर कार्रवाई करते हुए अस्पताल में व्यवस्थाएं जल्द नहीं की गई तो इसके लिए फिर धरना प्रदर्शन किया जाएगा. मौके पर राकेश नागर, गौरव भाटी, कुलबीर भाटी, राम नागर, हरीश भाटी, पिंटू मास्टर, गगन प्रकाश, कपिल एडवोकेट, श्रवण नागर, तेजवीर चौहान, दीनदयाल एडवोकेट और निखिल बंसल सहित अन्य कार्यकर्ता मौजूद रहे.

खटाखट-फटाफट की सतही राजनीति से बचे लोकतंत्र

विश्वनाथ सचदेव

हमारे समय के महान कार्टूनिस्ट आर.के. लक्ष्मण ने अपने एक कार्टून में नेताओं के कार्टून न बनाने की बात की थी। उन्होंने लिखा था, 'अब मैं नेताओं के कार्टून नहीं बनाता, क्योंकि अब स्वयं कार्टून नेता बनने लगे हैं।' बरसों पहले बनाया गया था यह कार्टून, और लक्ष्मण के बनाये अनेक कार्टूनों की तरह यह आज भी प्रासंगिक है शायद उस समय से कहीं ज़्यादा जब यह कार्टून बनाया गया था। इस कार्टून में लक्ष्मण का ट्रेडमार्क 'आम आदमी' हैरानी और चालाक-सी मुस्कान के साथ इस घोषणा को होते सुन-देख रहा है! आज भी आम आदमी के चेहरे पर वही मुस्कान है। पत्रकारिता में कभी कहा जाता था, 'एक चित्र सौ शब्दों के बराबर होता है। यही बात कार्टून पर भी लागू होती है। जहां तक नेताओं के कार्टून बन जाने का सवाल है आज की राजनीति में इसके उदाहरण खोजने की आवश्यकता नहीं है एक ढूंढ़ो हज़ार मिलते हैं।

चुनावों का मौसम अभी चल रहा है। कुछ ही दिन में चुनाव के परिणाम भी आ जाएंगे, नई सरकार बन जायेगी। नये-पुराने नेता कुर्सियां संभालेंगे। तब किसी लक्ष्मण के 'आम आदमी' के चेहरे पर वैसी ही मुस्कान होगी जो उस कार्टून में दिख रही थी। पर आज की राजनीति को देखते हुए यह समझना ज़रूरी है कि मुस्कुराना पर्याप्त नहीं है। यह स्थिति अपने आप में कम पीड़ादायक नहीं है कि हमारी राजनीति का स्तर लगातार नीचे खिसक रहा है। देश के राजनीतिक नेतृत्व ने इस चुनाव-प्रचार के दौरान नई गिरावट को छूने का जैसे एक रिकॉर्ड बनाया है। विभिन्न दलों के राजनेताओं में जैसे प्रतियोगिता चल रही थी घटिया राजनीति का उदाहरण प्रस्तुत करने की। हमारी राजनीति सिद्धांतों और मूल्यों के बजाय जुमलों में सिमट कर रह गयी है। जुमले की भी एक नयी परिभाषा ईजाद की है हमारे नेताओं ने आप चाहें तो इसे 'लफ्फाजी' नाम दे सकते हैं। था कोई जमाना जब हमारे देश में चुनाव की तुलना यज्ञ से की जाती है। दूसरे आम चुनाव की बात है। चुनावी सभाओं में एक कविता सुनाई देती थी 'ओ मतदाता, तुम भारत के भाग्य-विधाता/ राजसूय सम भारत के हित/ यह चुनाव है होने जाता/ कागज का यह नन्हा-टुकड़ा भारत माता का संबल है/ वोट नहीं है तेरे कर में, महायज्ञ-हित तुलसी दल है।' आज हमारे राजनेता उस तुलसीदल के लिए झूठ और फरेब का सहारा ले रहे हैं। त्रासदी तो यह भी है कि जो जितना बड़ा नेता है वह उतना बड़ा झूठ बोल रहा है। घटिया बोलों की एक प्रतिस्पर्धा चल रही है। किसी भी प्रकार के शर्म या लिहाज़ के लिए हमारी राजनीति में जैसे कोई जगह नहीं बची। हमारे नेता यह मानकर चल रहे हैं कि हल्की-फुल्की बातों से मतदाता को बरगलाया जा सकता है। ताजा उदाहरण 'खटाखट' वाली राजनीति का है। कांग्रेस के नेता राहुल गांधी ने एक चुनावी सभा में 'खटाखट-खटाखट' का प्रयोग क्या किया, राजनेताओं को जैसे नया खिलौना मिल गया। राहुल गांधी ने कहा था, 'मोदी अपने धनवान मित्रों को पैसा दे रहे हैं, पर मैं पैसा आपको दूंगा खटाखट-खटाखट। यहां खटाखट से उनका आशय तेजी से पैसा देना था।

प्रधानमंत्री मोदी को यह शब्द पसंद आ गया और दूसरे ही दिन उन्होंने एक चुनावी सभा में 'खटाखट' शब्द के माध्यम से राहुल गांधी का मज़ाक उड़ाने का अभिनय किया। खटाखट शब्द में कहीं कुछ ग़लत नहीं है। वैसे ही जैसे 'दीदी, ओ दीदी' कहना कहीं से ग़लत नहीं लगता। पर पिछले चुनाव में जिस तरह 'ओ दीदी' उचारा गया था, उसे भद्र भाषा का उदाहरण तो नहीं कहा जा सकता। इस खटाखट शब्द की भी जिस तरह नकल उतारी गयी, उसे हास्यास्पद तो कहा ही जा सकता है! राहुल गांधी ने अपने भाषण में देश की हर गरीब महिला के बैंक खाते में 8500 रुपये खटाखट जमा करवाने की बात कही थी। प्रधानमंत्री जी ने इस खटाखट शब्द से उनका मज़ाक उड़ाया जो खटाखट पैसा देने की बात कर रहे थे। मतदाताओं को अपने नेताओं से कुछ गंभीर आचरण की अपेक्षा भी होती है। लेकिन हमारे नेता तो मतदाता को बच्चों की तरह रिझाने में विश्वास करते हैं! प्रधानमंत्री मोदी न जाने कब से देश के मतदाताओं को पांच किलो अनाज से रिझा रहे हैं। पहले देश के अस्सी करोड़ गरीबों को कुछ अर्से के लिए प्रतिमाह पांच किलो अनाज दिया गया था, फिर चुनाव से ठीक पहले यह कह दिया गया कि अगले पांच साल तक यह खैरात बंटती रहेगी। अब कांग्रेस के अध्यक्ष ने कहा है कि यदि उनकी सरकार बनती है तो वह पांच किलो के बजाय दस किलो अनाज प्रति माह देंगे। यही नहीं, यह बात कहीं इस तरह से कही जाती है मानो प्रधानमंत्री अथवा विपक्ष के नेता अपनी जेब से खर्च करके मतदाता को अनुगृहीत कर रहे हैं! लाभार्थी नाम दिया गया है सरकारी सहायता पाने वालों को। इसी तरह 'रेवड़ी बांटने' की बात भी हुई थी। सत्ताधारी पक्ष जनता को अनुदान देने को कल्याणकारी कार्य बताता है और विपक्ष की सरकारों को 'रेवड़ियां' न बांटने की सलाह देता है। चुनाव-प्रचार के इस सोच पर सवाल उठना ही चाहिए। सवाल इस बात पर भी उठाना चाहिए कि पंथ-निरपेक्ष देश में धर्म के नाम पर वोट मांगने की इजाज़त कैसे दी जा रही है? अयोध्या में बने राम मंदिर पर 'बाबरी ताला' लगाये जाने के षड्यंत्र की बात का आखिर क्या मतलब है? कैसे कोई राजनेता यह कह सकता है कि, 'तुम्हारे' मंगलसूत्र भी उनको दे दिये जाएंगे? यह 'तुम्हारे' कह कर किसे संबोधित किया जा रहा है और यह 'उनको' का क्या मतलब है? हमारे संविधान-निर्माताओं ने बहुत सोच-समझ कर देश को धर्म-निरपेक्ष घोषित किया था। विभाजन के समय देश में जो परिस्थितियां बन गयी थीं, उन्हें देखते हुए आसान नहीं था इस प्रकार का निर्णय लेना। संविधान-सभा में इस सबको लेकर पर्याप्त विचार-विमर्श हुआ था और पाकिस्तान को मुस्लिम राष्ट्र घोषित किये जाने के बावजूद हमने देश को धर्मनिरपेक्ष रखने का निर्णय लिया था। वस्तुत: यह निर्णय मानवता के पक्ष में लिया गया था। सारी दुनिया को रास्ता बताया था हमनेङ्क मनुष्यता का रास्ता। आखिर धर्म के नाम पर संकीर्णता वाली सोच हमें कहां ले जायेगी? यह जनतांत्रिक मूल्यों की सफलता का ही एक उदाहरण है कि हमारे देश में नियम से चुनाव हो रहे हैं। लेकिन यह पर्याप्त नहीं है। जनतांत्रिक मूल्यों को आचरण में उतारना ही इस सफलता की असली कसौटी है। इन्हीं मूल्यों का तकाज़ा है कि धर्म को राजनीति का हथियार बनाने की मानसिकता से उबारा जाये। यह 'हम' और 'वे' वाली राजनीति समाज को बांटने वाली है, हमें सिर्फ 'हम' वाली राजनीति की आवश्यकता है। 'हम भारत के लोग' ने अपने लिए एक संविधान बनाया था, यह हर भारतीय को सम्मान और स्वाभिमान से जीने का अधिकार देता है सबका साझा है यह अधिकार। इस अधिकार को खटाखट और फटाफट वाली घटिया राजनीति का शिकार नहीं होने दिया जा सकता। हमारे नेताओं की चुनावी सभाएं बताती हैं कि यह खटाखट वाली राजनीति उन्हें दाता बना रही है और नागरिक को इस दाता की कृपादृष्टि का पात्र। यही नहीं अब हमारे नेता ऐसी गारंटियां भी देने लगे हैं, जिनका कोई आधार उनके पास नहीं है। इस 'गारंटी राजनीति' की शुरुआत कर्नाटक के पिछले चुनाव में कांग्रेस ने की थी, फिर भाजपा ने इसे लपक लिया। प्रधानमंत्री ने नहले पर दहला चलते हुए 'गारंटी पूरे होने की गारंटी' वाली चाल चली। अब यानी हमारी राजनीति के कर्णधार अपने आप को देश के सामान्य नागरिकों से भिन्न मानते हैं, कुछ ऊंचा मानते हैं। विषमता का यह चेहरा हमारी राजनीति का घटिया पक्ष ही दिखाता है। स्वस्थ राजनीति का तकाज़ा है कि राजनेता स्वयं को मतदाता का स्वामी न समझें। वे भी नागरिक मात्र हैं, बस उनकी भूमिका कुछ भिन्न है। पता नहीं यह स्थिति कब आयेगी, कब वे ऐसा समझेंगे?

अमेरिका की कोलम्बिया यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिकों के एक अध्ययन के मुताबिक, बढ़ती आबादी और गर्मी के कारण भारत के चार बड़े शहर नई दिल्ली, कोलकाता, मुम्बई और चेन्नई सबसे ज्यादा प्रभावित हुए हैं। कोलकाता में बढ़ते जोखिम के पीछे 52 फीसदी गर्मी तथा 48 फीसदी आबादी जिम्मेदार है। वैज्ञानिकों का कहना है कि बाहरी भीड़ को नही रोका गया तो तापमान तेजी से बढ़ेगा जो स्वास्थ्य के लिए नुकसानदेह साबित होगा। शहरों में बढ़ते तापमान के कई कारण हैङ्क सबसे बड़ा तो शहरों के विस्तार में हरियाली का नष्ट होना। भले ही दिल्ली जैसे शहर दावा करें कि उनके यहां हरियाली की छतरी का विस्तार हुआ है लेकिन हकीकत में यहां लगने वाले अधिकांश पेड़ पारम्परिक ऊंचे वृक्ष की जगह, जल्दी उगने वाले झाड़ हैं, जो धरती के बढ़ते तापमान की विभीषिका से निबटने में अक्षम हैं। 'शहरी ऊष्मा द्वीप' शहरों की कई विशेषताओं के कारण बनते हैं। बड़े वृक्षों के कारण वाष्पीकरण और वाष्पोत्सर्जन होता है जो कि धरती के बढ़ते तापमान को नियंत्रित करता है। बोगेनवेलिया जैसे पौधे धरती के शीतलीकरण प्रक्रिया में कोई भूमिका निभाते नहीं हैं। महानगरों की गगनचुम्बी इमारतें सूर्य की तपन से गर्मी को प्रतिबिंबित और अवशोषित करती हैं। एक-दूसरे के करीब कई ऊंची इमारतें भी हवा के प्रवाह में बाधा बनती हैं, इससे शीतलन अवरुद्ध होता हैं। शहरों की सड़कें उसका तापमान बढ़ने में बड़ी कारक हैं। महानगर में सीमेंट और कंक्रीट के बढ़ते जंगल, डामर की सड़कें और ऊंचे मकान बड़ी मात्रा में सूर्य की किरणों को सोख रहे हैं। इस कारण शहरों में गर्मी बढ़ रही है।

तपते द्वीप बनते शहरों में जीना हुआ दूभर

पंकज चतुर्वेदी

जब देश-दुनिया गर्मी में तपते थे तो हिमाचल प्रदेश में लोग सुकून की तलाश में आते थे। लेकिन इस साल इस हिमपात वाले राज्य के नौ जिलों में तापमान 42 डिग्री से पार है और सरकार ने वहां लू की चेतावनी दी है। गत 20 मई को ऊना का अधिकतम तापमान 44.2 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। वहीं हमीरपुर के नेरी का तापमान 44.1 डिग्री था। प्रदेश के मैदानी इलाकों में पिछले चार दिनों से तापमान 40 डिग्री सेल्सियस से ऊपर रिकॉर्ड हो रहा है। गौर से देखें तो ये तपते शहर वे हैं जहां तेजी से शहरीकरण हुआ। जब हिमाचल के ये हाल हैं तो फिर पंजाब-हरियाणा में तो तापमान 45 पार होना कोई बड़ी बात नहीं। जिन स्थानों पर अस्वाभाविक रूप से तापमान बढ़ा, वहां कंक्रीट के जंगल रोपने में समाज अव्वल रहा है। बढ़ती आबादी वाले शहरों में तापमान बढ़ना केवल शारीरिक विकार ही नहीं , बल्कि कई और दिक्कतें साथ लेकर आता है। दिल्ली से सटे गाज़ियाबाद के सरकारी अस्पताल में बीते एक पखवाड़े से चिड़चिड़ेपन, दिमाग घूमने के मरीज आ रहे हैं। यही नहीं, सड़कों पर झगड़े बढ़ रहे हैं। काम करने में दिक्कतों के चलते कमाई कम हो रही और बिजली-पानी का खर्चा बढ़ रहा है। भारत के बड़े हिस्से में सदियों से गर्मी पड़ती रही है लेकिन अब इसका दायरा बढ़ रहा है व दिन भी दुगने हो रहे हैं। प्रचंड गर्मी ने देश में पिछले 50 साल में 17,000 से ज्यादा लोगों की जान ली है। साल 1971 से 2019 के बीच लू चलने की 706 घटनाएं हुई हैं। लेकिन गत पांच सालों में चरम तापमान और लू की घटनाएं न केवल समय के पहले हो रही हैं, बल्कि लम्बे समय तक इनकी मार रहती है, खासकर शहरीकरण ने इस मौसमी आग में ईंधन का काम किया है, शहर अब जितने दिन में तपते हैं, रात उससे भी अधिक गरम हवा वाली होती है। आबादी से उफनते महानगरों में बढ़ता तापमान अकेले संकट नहीं होता, उसके साथ बढ़ती बिजली-पानी की मांग, दूषित होता पर्यावरण भी नया संकट खड़ा करता है।

अमेरिका की कोलम्बिया यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिकों के एक अध्ययन के मुताबिक, बढ़ती आबादी और गर्मी के कारण भारत के चार बड़े शहर नई दिल्ली, कोलकाता, मुम्बई और चेन्नई सबसे ज्यादा प्रभावित हुए हैं। कोलकाता में बढ़ते जोखिम के पीछे 52 फीसदी गर्मी तथा 48 फीसदी आबादी जिम्मेदार है। वैज्ञानिकों का कहना है कि बाहरी भीड़ को नही रोका गया तो तापमान तेजी से बढ़ेगा जो स्वास्थ्य के लिए नुकसानदेह साबित होगा। शहरों में बढ़ते तापमान के कई कारण हैङ्क सबसे बड़ा तो शहरों के विस्तार में हरियाली का नष्ट होना। भले ही दिल्ली जैसे शहर दावा करें कि उनके यहां हरियाली की छतरी का विस्तार हुआ है लेकिन हकीकत में यहां लगने वाले अधिकांश पेड़ पारम्परिक ऊंचे वृक्ष की जगह, जल्दी उगने वाले झाड़ हैं, जो धरती के बढ़ते तापमान की विभीषिका से निबटने में अक्षम हैं। 'शहरी ऊष्मा द्वीप' शहरों की कई विशेषताओं के कारण बनते हैं। बड़े वृक्षों के कारण वाष्पीकरण और वाष्पोत्सर्जन होता है जो कि धरती के बढ़ते तापमान को नियंत्रित करता है। बोगेनवेलिया जैसे पौधे धरती के शीतलीकरण प्रक्रिया में कोई भूमिका निभाते नहीं हैं। महानगरों की गगनचुम्बी इमारतें सूर्य की तपन से गर्मी को प्रतिबिंबित और अवशोषित करती हैं। एक-दूसरे के करीब कई ऊंची इमारतें भी हवा के प्रवाह में बाधा बनती हैं, इससे शीतलन अवरुद्ध होता हैं। शहरों की सड़कें उसका तापमान बढ़ने में बड़ी कारक हैं। महानगर में सीमेंट और कंक्रीट के बढ़ते जंगल, डामर की सड़कें और ऊंचे मकान बड़ी मात्रा में सूर्य की किरणों को सोख रहे हैं। इस कारण शहरों में गर्मी बढ़ रही है। वैज्ञानिकों के मुताबिक तापमान में जितनी वृद्धि होगी, बीमारियां उतना ही गुणा बढ़ेंगी और जनहानि होगी। सड़क डामर की हो या कंक्रीट की, ये गर्मी को अवशोषित करती हैं और फिर तापमान कम होते ही उसे उत्सर्जित कर देती हैं। इसके अलावा, शहरों के ऊपर वायुमंडलीय स्थितियों के कारण अक्सर शहरी हवा जमीन की सतह के पास फंस जाती है, जहां इसे गर्म शहरी सतहों से गर्म किया जाता है। हालांकि शहरों को भट्ठी बनाने में इंसान भी पीछे नहीं। वाहनों के अलावा पंखे, कंप्यूटर, रेफ्रिजरेटर और एसी जैसे बिजली के उपकरण इंसान को सुख देते हैं लेकिन ये वहां का तापमान बढ़ने में बड़ी भूमिका अदा करते हैं। फिर कारखाने, निर्माण कार्य और बहुत कुछ है जो शहर को उबाल रहा है। यदि इन शहरों से 50 किलोमीटर दूर किसी कस्बे या या गांव में जाएं तो गर्मी का तीखापन इतना नहीं लगता। गर्मी अपने साथ बहुत सी बीमारियां लेकर आ रही है। गर्मी के कारण शहर के नालों के पानी का तापमान बढ़ता है और यह जल जब नदी में मिलता है तो उसका तापमान भी बढ़ जाता है, जिससे नदी की वनस्पति और जीवों को खतरा है। शहरों की घनी आबादी संक्रामक रोगों के प्रसार का आसान जरिया होते हैं जिससे यहां बीमारों की संख्या ज्यादा होती है। यदि शहर में गर्मी की मार से बचना है तो अधिक से अधिक पारम्परिक पेड़ों का रोपना जरूरी है, साथ ही शहर के बीच बहने वाली नदियां, तालाब, जोहड़ यदि निर्मल और अविरल रहेंगे तो बढ़ी गर्मी को सोखने में ये सक्षम होंगे। कार्यालयों के समय में बदलाव, सार्वजनिक परिवहन को बढ़ावा, बहुमंजिला भवनों का इको फ्रेंडली होना, ऊर्जा संचयन सहित कुछ ऐसे उपाय हैं जो बहुत कम व्यय में शहर को भट्टी बनने से बचा सकते हैं। हां, अंतिम उपाय तो शहरों की तरफ पलायन रोकना ही होगा।

विचार

प्रत्येक प्राणी के प्रति दयाभाव रखते थे महात्मा बुद्ध

योगेश कुमार गोयल

प्रतिवर्ष वैशाख मास की पूर्णिमा को बुद्ध पूर्णिमा के रूप में मनाया जाता है। बुद्ध पूर्णिमा इस वर्ष 23 मई को है। माना जाता है कि 563 ई.पू. वैशाख पूर्णिमा के ही दिन लुम्बनी वन में शाल के दो वृक्षों के बीच गौतम बुद्ध का जन्म हुआ था, जिन्होंने वैशाख पूर्णिमा को ही बोध गया में बोधि वृक्ष के नीचे बुद्धत्व प्राप्त किया था। यही कारण है कि बौद्ध धर्म में बुद्ध पूर्णिमा को सबसे पवित्र दिन माना गया है। गौतम बुद्ध का वास्तविक नाम सिद्धार्थ गौतम था। गौतम उनका गोत्र था किन्तु कालांतर में वह सिद्धार्थ गौतम, महात्मा बुद्ध, भगवान बुद्ध, गौतम बुद्ध, तथागत आदि विभिन्न नामों से जाने गए। बचपन से ही राजकुमार सिद्धार्थ घंटों एकांत में बैठकर ध्यान किया करते थे लेकिन फिर भी उन्होंने पुत्र जन्म तक सांसारिक सुखों का उपभोग किया परन्तु धीरे-धीरे उनका मन सांसारिक सुखों से उचाट होता गया। सिद्धार्थ मन की शांति पाने के उद्देश्य से एक दिन भ्रमण के लिए अपने सारथी छेदक को साथ लेकर रथ में सवार हो महल से निकल पड़े। रास्ते में उनका मनुष्य के दु:ख की चार घटनाओं से साक्षात्कार हुआ। जब उन्होंने दु:ख के इन कारणों को जाना तो मोहमाया और ममता का परित्याग कर पूर्ण संन्यासी बन गए। सबसे पहले उन्होंने मार्ग में एक रोगी व्यक्ति को देखा और सारथी से पूछा, यह प्राणी कौन है और इसकी यह कैसी दशा है? सारथी ने बताया, यह भी एक मनुष्य है और इस समय यह बीमार है। इस दुनिया में हर व्यक्ति को अपने जीवन में कभी न कभी रोगी होकर दु:खों का सामना करना ही पड़ता है। आगे बढ़ने पर सिद्धार्थ ने मार्ग से गुजरते एक वृद्ध, निर्बल व कृशकाय व्यक्ति और उसके बाद एक मृत व्यक्ति की अर्थी ले जाते विलाप करते लोगों को देखा तो हर बार सारथी से उसके बारे में पूछा। सारथी ने एक-एक कर उन्हें मनुष्य की इन चारों अवस्थाओं के बारे में बताया कि हर व्यक्ति को कभी न कभी बीमार होकर कष्ट झेलने पड़ते हैं। बुढ़ापे में काफी दु:ख झेलने पड़ते हैं, उस अवस्था में मनुष्य दुर्बल व कृशकाय होकर चलने-फिरने में भी कठिनाई महसूस करने लगता है और आखिर में उसकी मृत्यु हो जाती है। सिद्धार्थ यह रहस्य जानकर बहुत दु:खी हुए। आगे उन्हें एक साधु नजर आया, जो बिल्कुल शांतचित्त था। साधु को देख सिद्धार्थ के मन को अपार शांति मिली और उन्होंने विचार किया कि साधु जीवन से ही मानव जीवन के इन दुखों से मुक्ति संभव है। बस फिर क्या था, देखते ही देखते सिद्धार्थ सांसारिक मोहमाया के जाल से बाहर निकलकर पूर्ण वैरागी बन गए और एक दिन रात्रि के समय पत्नी यशोधरा तथा पुत्र राहुल को गहरी नींद में सोता छोड़ उन्होंने घर-परिवार और राजसी सुखों का परित्याग कर दिया तथा सत्य एवं ज्ञान की खोज में एक-स्थान से दूसरे स्थान पर भटकते रहे। उन्होंने छह वर्षों तक जंगलों में कठिन तप किया और सूखकर कांटा हो गए किन्तु ज्ञान की प्राप्ति न हो सकी। उसके बाद उन्होंने शारीरिक स्वास्थ्य व मानसिक शक्ति प्राप्त की और बोध गया में एक पीपल के वृक्ष के नीचे बैठकर गहन चिंतन में लीन हो गए तथा मन में दृढ़ निश्चय कर लिया कि इस बार ज्ञान प्राप्त किए बिना वे यहां से नहीं उठेंगे। सात सप्ताह के गहन चिंतन-मनन के बाद वैशाख मास की पूर्णिमा को 528 ई.पू. सूर्योदय से कुछ पहले उनकी बोधदृष्टि जागृत हो गई और उन्हें पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति हो गई। उनके चारों ओर एक अलौकिक आभा मंडल दिखाई देने लगा। उनके पांच शिष्यों ने जब यह अनुपम दृश्य देखा तो उन्होंने ही राजकुमार सिद्धार्थ को पहली बार तथागत कहकर संबोधित किया। तथागत यानी सत्य के ज्ञान की पूर्ण प्राप्ति करने वाला। पीपल के जिस वृक्ष के नीचे बैठकर सिद्धार्थ ने बुद्धत्व प्राप्त किया, वह वृक्ष बोधिवृक्ष कहलाया और वह स्थान, जहां उन्होंने यह ज्ञान प्राप्त किया, बोध गया के नाम से विख्यात हुआ तथा बुद्धत्व प्राप्त करने के बाद ही सिद्धार्थ को महात्मा बुद्ध कहा गया। महात्मा बुद्ध मन की साधना को ही सबसे बड़ी साधना मानते थे। अपने 80 वर्षीय जीवनकाल के अंतिम 45 वर्षों में उन्होंने दुनियाभर में घूम-घूमकर बौद्ध धर्म का प्रचार किया और लोगों को उपदेश दिए।

एक नजर

हत्या के मामले में तीन को आजीवन कारावास एवं 30 हजार रुपए आर्थिक दंड की सजा

पूर्णियां,एजेंसी। हत्या के मामले में दोषी पाए गए तीन अभियुक्तों को आजीवन कारावास के अलावे विभिन्न धाराओं में मिलाकर 30 हजार रुपए आर्थिक दंड की सजा सुनाई गई है। अभियुक्तों को हत्या के मामले में आजीवन कारावास के अलावा 20 हजार रुपए आर्थिक दंड की सजा सुनाई गई तथा आर्म्स एक्ट के तहत 3 वर्ष कारावास की सजा एवं10 हजार रुपए आर्थिक दंड की सजा सुनाई गई। दोनों ही सजा साथ-साथ चलेंगी। यह सजा सत्रवाद संख्या 320/2021 के तहत सुनाई गई है। मामला के0 नगर (मरंगा) थाना कांड संख्या 511/2019 पर आधारित था। सजा पाने वाले अभियुक्तों में सुनील यादव उम्र 40 वर्ष, माधव मृणाल उर्फ बादल यादव उम्र 35 वर्ष व शंकर मेहता उम्र 30 वर्ष शामिल है। यह सजा पंचम अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश अभिषेक रंजन की अदालत में सुनाई गई है। जग्गू राय के भाई भट्ठा मालिक जितेंद्र कुमार राय के द्वारा थाने में दर्ज मुकदमे के अनुसार 2 वर्ष पूर्व अभियुक्त सुनील यादव ने जितेंद्र कुमार राय पर गोली चलाई थी, जिसके लिए उसने मुकदमा दर्ज कराया था। उसी मुकदमा को उठाने के लिए और 5 लाख रुपया रंगदारी देने के लिए अभियुक्त गण दबाव डाल रहे थे उनकी मांग पूरा नहीं करने पर 21.12. 2019 को भट्ठा में जाकर जग्गू राय को सीने, कमर एवम पैर में गोली मारकर हत्या एवं भट्ठा स्टाफ बादल पोद्दार को सीना में गोली मारकर जख्मी कर दिया गया था। अभियोजन पक्ष द्वारा न्यायालय में प्रस्तुत गवाहों की गवाही एवं अभिलेख पर उपलब्ध अन्य साक्ष्यों के आधार पर अभियुक्तों को दोषी पाए जाने के पश्चात उपरोक्त सजा सुनाई गई। इस मुकदमे को अभियोजन पक्ष की ओर से संचालित कर रहे थे अपर लोक अभियोजक अताउर रहमान।

राज्यपाल-सीएम ने बुद्ध पूर्णिमा के अवसर पर बिहारवासियों को दी शुभकामनाएं

पटना। राज्यपाल राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर और मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने गुरुवार के दिन हो रही बुद्ध पूर्णिमा के पावन अवसर पर समस्त बिहारवासियों एवं देशवासियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाए दी है।वैशाखी पूर्णिमा के दिन ही भगवान बुद्ध का जन्म, उन्हें ज्ञान की प्राप्ति एवं उनका महापरिनिर्वाण हुआ था और इनके उपलक्ष्य में 'बुद्ध पूर्णिमा' आयोजित की जाती है। राज्यपाल ने अपने संदेश में कहा कि भगवान बुद्ध का संदेश हमें सत्य, अहिंसा, प्रेम, करूणा और शांति के मार्ग पर चलकर मानवता की सेवा करने की प्रेरणा देता है। आज विश्व समुदाय जिन अनेकानेक समस्याओं का सामना कर रहा है, उनका समाधान भी भगवान बुद्ध के दर्शन एवं उपदेशों में निहित है। उन्होंने कहा कि बुद्ध पूर्णिमा के पावन अवसर पर हमें उनके सिद्धांतों को अपने जीवन में आत्मसात कर सामाजिक समरसता में अहम योगदान देने का संकल्प लेना चाहिए। मुख्यमंत्री ने अपने शुभकामना संदेश में कहा है कि भगवान बुद्ध का जीवन हर किसी के लिये प्रेरणादायी है। उनके जीवन दर्षन से हमें प्रेम, शांति, सद्भाव, त्याग, अहिंसा एवं संयम जैसे गुणों को अपनाने की प्रेरणा मिलती है। उनका जीवन हम सभी के लिए आदर्ष है। भगवान बुद्ध के बताये हुये अष्टांगिक मार्ग पर चलकर मनुष्य सम्यक और संतुलित जीवन यापन करने में सक्षम हो सकता है। मुख्यमंत्री ने कामना की है कि भगवान बुद्ध की शिक्षा को आत्मसात कर हम आपसी प्रेम और सद्भाव की भावना और मजबूत करें।

जैव विविधता दिवस पर रानीगंज वृक्ष वाटिका में कार्यक्रम आयोजित

अररिया। रानीगंज नगर पंचायत के हसनपुर में बुधवार को जैव विविधता दिवस के मौके पर वृक्ष वाटिका में बिहार के वन पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन सचिव वंदना प्रेयसी का आगमन हुआ। मौके पर विभाग की ओर से कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मौके पर बच्चों ने जैव विविधता संरक्षण को लेकर पेंटिग बनायी, जिसे देखकर वन पर्यावरण सचिव के द्वारा बच्चों की काफी प्रशंसा की। बच्चों के लिए निबंध प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। निबंध प्रतियोगिता में सफल बच्चों को सचिव वंदना प्रेयसी ने मेडल देकर सम्मानित किया। साथ हीं मौजूद वन कर्मियों, स्कूली बच्चों,जीविका दीदियों को संबोधित करते हुए सचिव वंदना प्रेयसी ने कहा कि जैव विविधता के साथ साथ हमलोगों को पर्यावरण, प्रदूषण,जलवायु परिवर्तन, जल संरक्षण आदि बहुत महत्वपूर्ण है। हमलोग भी जैव विविधता का हीं एक हिस्सा है।हमलोगों को प्रकृति का सम्मान करना चाहिए और पर्यावरण को सुरक्षित रखने के लिए हमेशा प्रयास करना चाहिए। कार्यक्रम में मौजूद लोगों में वन पर्यावरण सचिव बिहार के अलावे फारविसगंज एसडीओ शैलजा पांडे, डीएफओ मेघा यादव आदि ने भी संबोधित किया। मौके पर रेंजर दिनेश प्रसाद यादव,कुंदन सिंह,गोविंद कुमार,प्रदीप कुमार सिंह सहित विभाग के कई डीएफओ भी मौजूद थे।

अन्तराष्ट्रीय जैव विविधता दिवस पर लगाए गए एक सौ पौधे

भागलपुर। अन्तराष्ट्रीय जैव विविधता दिवस के अवसर पर बुधवार को वन प्रमंडल पदाधिकारी भागलपुर श्वेता कुमारी की मौजूदगी में 1 इंडियन फ्लैप सेल टर्टल, 2 लेसर एजुटेंट एवं 3 ग्रेटर एजुटेंट को उनके प्राकृतिक आवास में छोड़ा गया। साथ ही साथ किलकारी के बच्चों के द्वारा 100 पौधे लगाए गए। अन्तराष्ट्रीय जैव विविधता दिवस के मौके पर विशेषज्ञों के द्वारा किसानों को जैव विविधता के बारे में गहन जानकारी दिया गया। वन प्रमंडल पदाधिकारी श्वेता कुमारी ने बताया कि जैव विविधता मनुष्य को व्यापक लाभ भी प्रदान करती है। पारिस्थितिकी तंत्र के स्वास्थ्य को संरक्षित करने से भोजन और अन्य प्रमुख संसाधनों तक पहुंच सुनिश्चित होती है, जैसे पौधों और जड़ी-बूटियों में निहित कुछ दवाओं के सक्रिय तत्व। इसके अलावा, स्वस्थ और विविध पारिस्थितिकी तंत्र वायु और जल शुद्धिकरण, जलवायु विनियमन और बाढ़ की रोकथाम में भी योगदान देते हैं। श्वेता कुमारी ने कहा दुर्भाग्य से जैव विविधता कई कारकों के कारण संकट में है। उनमें से कई मानवीय गतिविधियों से संबंधित है।

नीट प्रश्नपत्र लीक मामले में दो अभियुक्तों की जमानत अर्जी खारिज

पटना,एजेंसी। नेशनल टेस्टिंग एजेंसी से आयोजित राष्ट्रीय पात्रता सह प्रवेश परीक्षा (नीट) 2024 के प्रश्न पत्र लीक मामले में बिहार में पटना की एक अदालत ने जेल में बंद दो अभियुक्तों की नियमित जमानत याचिका आज खारिज कर दी। पटना व्यवहार न्यायालय के प्रभारी अपर मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी (नवम) की अदालत ने मामले के दो अभियुक्तों अखिलेश कुमार और आयुष राज की ओर से दाखिल याचिका पर दोनों पक्षों की दलीलें सुनने के बाद उन्हें नियमित जमानत पर मुक्त करने से इनकार कर दिया। दोनों अभियुक्तों की ओर से उनके वकील ने बहस की थी की नेशनल टेस्टिंग एजेंसी ने आधिकारिक रूप से वेबसाइट पर यह सूचना निर्गत की है कि कोई भी प्रश्न पत्र लीक नहीं हुआ है, ऐसे में प्रश्न पत्र लीक होने का सवाल ही नहीं होता है। मात्र संभावना और संदेह के आधार पर उनके मुवक्किलों को इस मामले में झूठा फंसा दिया गया है। दूसरी और अभियोजन की ओर से सरकारी वकील ने मामले को गंभीर बताते हुए एवं अनुसंधान जारी रहने का हवाला देते हुए उनकी जमानत अर्जी का विरोध किया था। गौरतलब है कि नीट 2024 की परीक्षा 05 मई 2024 को पूरे देश में एक साथ आयोजित की गई थी। पटना के विभिन्न विद्यालयों में भी परीक्षा केंद्र बनाए गए थे। इसी दौरान पटना के शास्त्री नगर थानाध्यक्ष अमर कुमार ने उक्त परीक्षा के प्रश्न पत्र लीक होने के आरोप में एक प्राथमिकी भारतीय दंड विधान की धारा 407, 408, 409 और 120बी के तहत शास्त्री नगर थाना कांड संख्या 358/2024 के रूप में स्व लिखित बयान के आधार पर दर्ज कराई है। दर्ज की गई प्राथमिकी में कहा गया है कि परीक्षा के दौरान यह गुप्त सूचना मिली कि कुछ लोग उक्त परीक्षा में कदाचार के लिए परीक्षा केंद्रों के आसपास घूम रहे हैं। उस सूचना पर थाना अध्यक्ष ने एक वाहन को रोककर उसकी जांच की और तीन लोगों को गिरफ्तार किया एवं उनके पास से आपत्तिजनक दस्तावेज बरामद किए। गिरफ्तार किए गए एक अभियुक्त की निशानदेही पर पटना के बिहार राज्य विद्युत बोर्ड कॉलोनी स्थित डीएवी स्कूल के परीक्षा केंद्र से एक परीक्षार्थी आयुष राज को भी गिरफ्तार किया गया।

आरोप के अनुसार गिरफ्तार किए गए अभियुक्तों ने खुलासा किया कि उक्त परीक्षा के प्रश्न पत्र 04-05 मई 2024 की रात्रि में कई छात्रों को दिए गए और उन्हें उनके उत्तर रटाये गये। इस मामले में शास्त्री नगर थाने की पुलिस ने अभी तक कुल 13 लोगों को गिरफ्तार कर जेल भेजा है जिसमें पटना के दानापुर का निवासी आयुष राज, रोहतास निवासी बिट्टू कुमार, दानापुर निवासी अखिलेश कुमार, समस्तीपुर निवासी सिकंदर यादवेंदु, पटना के नेपाली नगर निवासी आशुतोष कुमार, पटना के ही एकंगरसराय क्षेत्र निवासी रोशन कुमार, गया जिले का नीतीश कुमार, समस्तीपुर का अनुराग यादव, रांची का अभिषेक कुमार, गया के बाराचट्टी क्षेत्र का निवासी शिवनंदन कुमार, रांची का अवधेश कुमार, पटना का अमित आनंद और समस्तीपुर की एक महिला रानी कुमारी शामिल है।

शांतिपूर्ण, निष्पक्ष एवं भयमुक्त वातावरण में निर्वाचन सम्पन्न कराएं अर्द्धसैनिक बल: जिला निर्वाचन पदाधिकारी

बेतिया। लोकसभा आम निर्वाचन, 2024 को शांतिपूर्ण, स्वच्छ एवं भयमुक्त वातावरण में सम्पन्न कराने हेतु निर्वाचन आयोग द्वारा पश्चिम चम्पारण जिले को अर्द्धसैनिक बल उपलब्ध कराये गये हैं। बुधवार को समाहरणालय सभाकक्ष में जिला निर्वाचन पदाधिकारी-सह-जिला पदाधिकारी दिनेश कुमार राय एवं पुलिस अधीक्षक बेतिया अमरकेश डी द्वारा संयुक्त रूप से अर्द्धसैनिक बलों के अधिकारियों की ब्रीफिंग की गयी। जिला निर्वाचन पदाधिकारी दिनेश कुमार राय द्वारा सभी अर्द्धसैनिक बलों के अधिकारियों से परिचय प्राप्त किया गया। साथ ही उन्हें डिस्पैच सेंटर, मतदान केन्द्र, वाहन की उपलब्धता, पोलिंग पार्टी, जोनल एवं सुपर जोनल दंडाधिकारी आदि के बारे में जानकारी दी गयी।

जिला निर्वाचन पदाधिकारी ने कहा कि पश्चिम चम्पारण जिले के दो लोकसभा निर्वाचन क्षेत्रों में पूरी तरह से शांतिपूर्ण, निष्पक्ष एवं भयमुक्त वातावरण में निर्वाचन सम्पन्न कराना है। अलर्ट होकर कार्यों को संपादित करना है। उन्होंने कहा कि अर्द्धसैनिक बल अपने-अपने आवंटित क्षेत्रों का भलीभांति मुआयना कर लें। अर्द्धसैनिक बल क्रिटिकल एवं नक्सल प्रभावित मतदान केन्द्रों से संबंधित क्षेत्रों में लगातार एरिया डोमिनेशन करेंगे। उन्होंने कहा कि अर्द्धसैनिक बलों को किसी भी तरह की असुविधा नहीं होने दी जायेगी। वाहनों का लॉगबुक, ड्राईवर का नाम, नंबर आदि आपको उपलब्ध करा दिया जायेगा। उन्होंने कहा कि कार्यक्षेत्र में समस्या उत्पन्न होने पर तुरंत वरीय अधिकारियों को सूचित करेंगे ताकि त्वरित गति से समाधान कराया जा सके। पुलिस अधीक्षक बेतिया अमरकेश डी ने कहा कि डिस्पैच सेन्टर से ईवीएम आदि के साथ सीधे मतदान केन्द्र ही जाना है। बीच में कहीं नहीं रूकेंगे। कोई व्यक्ति किसी भी प्रकार का ऑफर दे तो उसे स्वीकार नहीं करना है। मतदान केन्द्रों पर रसोईयां की व्यवस्था की गयी हैं। भुगतान के आधार पर रसाईयां से खाना बनवा लेंगे। उन्होंने कहा कि सभी कंपनियां अपने-अपने क्षेत्रों का भ्रमण कर लेगी। पोलिंग पार्टी के अधिकारी एवं अन्य पुलिस बल के साथ समन्वय स्थापित कर कार्य करना है। मतदान केन्द्रों पर शांतिपूर्ण तरीके से मतदान हो, इसे सुनिश्चित करना है। पोलिंग एजेंट के पास मोबाईल नहीं रहें, इसका विशेष ध्यान रखना है। साथ ही पोलिंग पार्टी के पास किसी दल से संबंधित प्रचार-प्रसार की सामग्री नहीं रहे, इसको भी अच्छे तरीके से देख लेंगे। पुलिस अधीक्षक बेतिया ने अर्द्धसैनिक बलों के अधिकारियों से कहा कि स्थानीय थानाध्यक्ष से समन्वय स्थापित कर फ्लैग मार्च कर लेंगे। सभी को पूरी मुस्तैदी के साथ शांतिपूर्ण तरीके से निर्वाचन को सम्पन्न कराना है।

कैश,पासबुक, आधार कार्ड व अन्य फर्जी प्रमाण पत्र के साथ दो साइबर ठग गिरफ्तार

सहरसा,एजेंसी। जिले में साईबर अपराध नियंत्रण अधिनियम के तहत साईबर थाना द्वारा दो शातिर साईबर ठग को गिरफ्तार किया गया है। उनके पास से फर्जी प्रमाण पत्र आधार कार्ड पासबुक एवं इलेक्ट्रॉनिक उपकरण भी बरामद किया गया है। सदर थाना में प्रेस कांफ्रेंस आयोजित कर डीएसपी अजीत कुमार ने बुधवार को संवादाताओ को इसकी जानकारी दी। उन्होंने बताया कि गुप्त सूचना मिली की सदर थाना क्षेत्र अंतर्गत डुमरैल कादिर चौक के पास मोहम्मद नौशाद के घर में कुछ लोग इलेक्ट्रॉनिक उपकरण के माध्यम से फर्जी मृत्यु प्रमाण प्रत्र बना कर अवैध रूप से श्रम विभाग के योजना अनतर्गत रूपया निकासी का काम करते है।

उन्होंने कहा कि उक्त सूचना के सत्यापन एवं आवश्यक कार्यावाई हेतु साईबर थाना, सदर थाना एवं जिला आसूचना इकाई के पुलिस पदाधिकारी व कर्मी साथ डुमरैल कादिर चौक के पास मो नौशाद के घर पर छापामारी किया तो घर में से 5-6 व्यक्ति भागने लगे। जिसमें से दो व्यक्तियों को पकड़ लिया गया एवं कुछ लोग भागने में सफल रहें। पकड़ाये व्यक्ति का नाम पता पूछने पर मो नौशाद पिता मो नसीर एवं पुनित कुमार पिता भरत मेहता बताया। मो नौशाद के घर की तलाशी ली गयी तो घर के अंदर अलमारी से काफी संख्या में दुसरे व्यक्तियों का निजी कागजात पाया गया।वही दुसरे व्यक्ति पुनित कुमार के पास से एक काले रंग के बैग की तलाशी ली गयी तो काफी संख्या में दुसरे व्यक्तियों का निजी कागजात, एक मोबाईल एवं मुहर बरामद किया गया एवं दोनों को गिरफ्तार कर लिया गया।साथ ही उनके पास से बरामद मोबाईल की जांच की गई तो बहुत सारे अन्य व्यक्तियों का आधार कार्ड, पैन कार्ड, बैंक खाता का डिटेल, एटीएम कार्ड का डिटेल पाया गया तथा अन्य बहुमूल्य कागजात पाया गया। पूछ ताछ के दैरान यह भी पाया गया कि ये दोनों पकड़ाये व्यक्ति मरे हुए लोगों का फर्जी मृत्यु प्रमाण प्रत्र बना कर अवैध रूप से श्रम विभाग के योजना अनतर्गत रूपया निकासी का काम करते हैं। इस संबंध में साईबर थाना कांड भादवि एवं 66, 66 (डी) आईटी एक्ट दर्ज किया गया। जबकि शेष फरार अभियुक्तों की गिरफ्तारी हेतु छापामारी की जा रही है।उन्होंने बताया कि दो मोबाइल,118 परिचय पत्र,18 डेविट कार्ड, 29 ई श्रम कार्ड, तीन मुहर, एक बायोमैट्रिक मशीन, एक लाख तेरह हजार 900 रुपये नकद राशि, तीन आयुषमान कार्ड, 4 ब्लैंक चेकबुक, एक चेक बुक, 95 आधार कार्ड की छाया प्रति, 41, पासबुक,दो विवाह निबंधन पत्र, 54 फोटो, 6 निबंधन परिचय पत्र, 4 पैन कार्ड, 17 मृत्यु प्रमाण पत्र की छाया प्रति बरामद किया गया। इस छापेमारी टीम में पुलिस निरीक्षक दीपक चन्द्र दास, पुनम कुमारी, खुशबू कुमारी, अमर कुमार सिंह एवं जिला आसूचना इकाई तथा सदर थाना के सशस्त्र बल मौजूद थे।

2024 का लोकसभा चुनाव संविधान और आरक्षण बचाने के लड़ रहे: तेजस्वी

पूर्वी चंपारण। 2024 का लोकसभा चुनाव संविधान और आरक्षण बचाने की लडाई है,जब हमारी सरकार बनेगी तो बेरोजगारों को नौकरी मिलेगी। उक्त बातें सुगौली के विशुनपुरवा हाई स्कूल के प्रांगण में पश्चिम चंपारण से कांग्रेस उम्मीदवार के पक्ष में चुनावी सभा को संबोधित करते पूर्व डिप्टी सीएम तेजस्वी यादव ने कही।

उन्होंने कांग्रेस प्रत्याशी मदनमोहन तिवारी को लालू यादव,मुकेश सहनी,राहुल गांधी का संयुक्त उम्मीदवार बताते हुए लोगो से उन्हे जीत दिलाने का अपील किया। उन्होंने कहा कि जब हमारी सरकार बनेगी तो पांच किलो के बदले दस किलो अनाज दिया जाएगा। गैस का दाम घटेगा। बेरोजगारी, गरीबी व महंगाई का समूल नाश किया जायेगा। उन्होने कहा कि मोदी जी चीनी मील भी नहीं चलवाए। वीआइपी सुप्रीमो मुकेश सहनी ने कम शब्दों में अपना भाषण समाप्त करते हुए कहा कि हमारे कांग्रेस उम्मीदवार मदन मोहन तिवारी को मजबूती से जिताइए। हम सभी संविधान बचाने की लडाई लड रहे है। हमे परेशान किया जा रहा है। जिसका जवाब वोट से देना है।आप सभी लोग मिल कर इंडिया गठबंधन के प्रत्याशी को विजयी बनावे। इससे पहले स्थानीय नेताओं व कांग्रेस प्रत्याशी द्वारा दोनों को फूल माला पहना कर स्वागत किया गया।कार्यक्रम की अध्यक्षता राजद प्रखंड अध्यक्ष ताराचंद यादव ने किया। जबकि संचालन कांग्रेस प्रखंड अध्यक्ष अजय झा ने किया।

तीन दिन पहले मिले अज्ञात शव के शिनाख्त के साथ मामले में दो गिरफ्तार

अररिया। अररिया नगर थाना क्षेत्र के त्रिशुलिया घाट के पास खेत में सोमवार को एक अज्ञात युवक का गला रेता और चाकू से गोदकर हत्या किया हुआ शव मिला था। मामले का जिला पुलिस ने खुलासा करते हुए मृतक के शिनाख्त के साथ ही मामले में दो युवकों को हत्या के आरोप में गिरफ्तार किया है। अज्ञात शव मिलने के बाद एसपी अमित रंजन ने घटनास्थल का जायजा लेने के साथ मामले में एफएसएल टीम के साथ स्क्वायड डॉग को मदद ली थी।घटना के उद्भेदन को लेकर एसपी अमित रंजन ने सदर एसडीपीओ रामपुकार सिंह के नेतृत्व में नगर थाना और डीआईयू की टीम के साथ एक विशेष टीम का गठन किया था। टीम के द्वारा वैज्ञानिक और तकनीकी अनुसंधान का सहारा लेते हुए दो युवकों को गिरफ्तार किया।अज्ञात शव की शिनाख्त जहां नगर थाना क्षेत्र के खलीलाबाद के रहने वाले मो.खलील के 25 वर्षीय पुत्र मो.सोनू के रूप में की गई।वहीं घटना में शामिल ककुड़वा बस्ती 25 वर्षीय शाहनवाज पिता -स्व.मो.जैनुद्दीन और हरियाली मार्केट के लाल मोहम्मद के 20 साल के पुत्र अकबर को गिरफ्तार किया है। एसपी अमित रंजन ने जानकारी देते हुए बताया कि शाहनवाज के स्वीकारोक्ति बयान के आधार पर मृतक मो.सोनू के मोबाइल एवं घटना में प्रयुक्त चाकू तथा अकबर के बयान पर मृतक के घटना के दिन पहने हुए पैंट को बरामद किया गया।एसपी ने बताया कि मामले में अररिया नगर थाना में कांड संख्या 285/24 दिनांक 19.05.24 को भादवि की धारा 302,301 के तहत दर्ज की गई थी।जिसमे दोनों आरोपियों को न्यायिक हिरासत में जेल भेजा गया।

डीएम ने बाढ़ सुरक्षा तैयारी को लेकर पूर्वी कोशी तटबंध व स्पर का निरीक्षण कर आवश्यक निर्देश दिया

सहरसा,एजेंसी। जिलाधिकारी वैभव चौधरी ने बाढ़ सुरक्षा तैयारियों का निरीक्षण किया। सर्वप्रथम पूर्वी कोशी तटबंध चंद्रायण के भागवतपुर पंचायत स्थित स्पर संख्या 96.60 का बाढ़ से सुरक्षा तैयारियों का जायजा लिया।

डीएम ने महिषी प्रखंड के महपुरा गांव के निकट स्पर संख्या 98.00 का बाढ़ सुरक्षात्मक तैयारियों से संबंधित कार्यपालक अभियंता पूर्वी कोशी तटबंध चंद्रायण से पूछ-ताछ की। उनके द्वारा बताया गया कि स्पर संख्या 98.00 के सुरक्षा हेतु संस्थापित पारकोपाईन के निकट हल्का सा कटाव विगत में परिलक्षित हुआ था। जिसकी रोकथाम हेतु यथोचित कारवाई शीध्र पूर्ण कर ली जायेगी।साथ ही यह भी बताया गया कि स्पर से कुछ दूरी पर स्थित कोशी नदी के समीप पूर्व से अवस्थित मंदिर पर घाट का निर्माण प्रस्तावित है। घाट का निर्माण कार्य मानसून के पश्चात किया जाना प्रस्तावित है। महिषी प्रखंड के राजनपुर पंचायत से संबंधित स्पर संख्या 103.00 निरीक्षण क्रम में जानकारी दी गई कि कटाव रोकने हेतु स्पर के दोनों तरफ पर्याप्त बाढ़ निरोधात्मक व्यवस्था की गई है। पूर्वी कोशी तटबंध कोपड़िया अंतर्गत पंचायत गोरदह, प्रखंड सलखुआ स्थित स्पर संख्या 116.20 निरीक्षण क्रम में जिलाधिकारी ने स्पर के मजबूती हेतु किये जा रहे कार्यो का जायजा लिया। वर्त्तमान में स्पर संख्या 116.20 पर जेसीबी से युद्धस्तर पर कार्य प्रारंभ है। जिसे जिलाधिकारी ने अविलंब पूर्ण करने का निर्देश दिया है। जिलाधिकारी ने निरीक्षण मौके पर उपस्थित अंचलाधिकारी सिमरी बख्तियारपुर/सलखुआ को आपदा प्रबंधन के तहत वर्णित मानक संचालन प्रक्रिया के अनुसार बाढ़ पूर्व तैयारी अविलंब पूर्ण करने, उपलब्ध नावों का भौतिक सत्यापन एवं पूर्व से लंबित भुगतान कार्य को अविलंब निष्पादित करने का निर्देश दिया। निरीक्षण क्रम में अपर समाहर्त्ता,आपदा प्रबंधन,डीसीएलआर सिमरी बख्तियारपुर,संबंधित कार्यपालक अभियंता(जल संसाधन विभाग),जिला जन-सम्पर्क पदाधिकारी आदि उपस्थित थे।

ईरान के सर्वोच्च नेता की अगुवाई में राष्ट्रपति रईसी, अन्य के अंतिम संस्कार की प्रक्रिया प्रारंभ

दुबई,एजेंसी। ईरान में हेलीकॉप्टर दुर्घटना में मारे गए देश के राष्ट्रपति इब्राहिम रईसी, विदेश मंत्री हुसैन अमीराब्दुल्लाहियन और अन्य अधिकारियों के अंतिम संस्कार की प्रक्रिया देश के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामनेई की अगुवाई में बुधवार को प्रारंभ हुई। तेहरान विश्वविद्यालय में मृतकों के ताबूत रखें गए। ये ताबूत ईरानी ध्वज में लिपटे हुए हैं और ताबूतों पर नेताओं की तस्वीरें लगायी गयी हैं। दिवंगत राष्ट्रपति रईसी के ताबूत पर एक काली पगड़ी रखी गई जो उनके इस्लाम के पैगंबर मोहम्मद का वंशज होने का संकेत है।

इस सभा में ईरान के अर्द्धसैन्य बल रेवोल्यूशनरी गार्ड के शीर्ष नेता भी शामिल हुए। साथ ही हमास का इस्माइल हानियेह भी शामिल हुआ। ईरान गाजा पट्टी में जारी इजराइल-हमास युद्ध के दौरान इस आतंकवादी समूह का समर्थन कर रहा है और उसे हथियार मुहैया करा रहा है। अंतिम संस्कार की प्रक्रिया शुरू करने से पहले भीड़ का नेतृत्व कर रहे एक अधिकारी ने नारा लगाया, ''इजराइल की मौत। हानियेह ने भीड़ में एकत्रित लोगों से कहा, ''मैं हमारी संवेदनाएं व्यक्त करने के लिए फलस्तीनी लोगों, गाजा के प्रतिरोधी गुटों की ओर से आया हूं। रईसी के अंतिम संस्कार में पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ और अफगानिस्तान के विदेश मंत्री आमिर खान मुतक्की समेत तालिबान के एक प्रतिनिधिमंडल के शामिल होने की संभावना है। हेलीकॉप्टर दुर्घटना में मारे गए आठ लोगों के

पार्थिव शरीर को तेहरान के पुराने इलाके से होते हुए आजादी या 'फ्रीडम' चौक तक ले जाया जाएगा जहां राष्ट्रपति रईसी ने भाषण दिए थे। ईरान की धर्म अधारित शासन व्यवस्था ने लोगों को सार्वजनिक शोक सत्र में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करते हुए पांच दिनों के राजकीय शोक की घोषणा की है। आमतौर पर, सरकारी कर्मचारी और स्कूली बच्चे ऐसे आयोजनों में सामूहिक रूप से भाग लेते हैं। ईरान में शिया धर्म आधारित शासन में विशाल प्रदर्शन हमेशा से अहम रहे हैं। यहां तक कि 1979 की इस्लामिक क्रांति के दौरान भी तत्कालीन सर्वोच्च नेता अयातुल्लाह रुहुल्लाह खुमैनी के स्वागत में लाखों लोग राजधानी तेहरान की सड़कों पर उतर आए थे।

बंगलादेश के सांसद अनवारुल अजीम कोलकाता में मृत पाए गए

कोलकाता,एजेंसी। बांग्लादेश से इलाज कराने के लिए पश्चिम बंगाल आए, एक सांसद अनवारुल आजिम का शव कोलकाता से बरामद हुआ है. बताया जा रहा है कि 9 दिन से लापता सांसद का शव बुधवार (22 मई) को कोलकाता के न्यूटाउन से बरामद हुआ. आशंका जताई जा रही है कि बांग्लादेश के सांसद की हत्या हुई है।

अनवारुल आजिम 12 मई को इलाज कराने के लिए बांग्लादेश से पश्चिम बंगाल आए थे. वह अपने एक मित्र के यहां बरानगर में ठहरे थे. 13 मई को उन्होंने कहा कि वह इलाज कराने के लिए डॉक्टर के पास जा रहे हैं. इसके बाद से उनका कोई अता-पता नहीं चल रहा था. 14 मई को उनकी गुमशुदगी की रिपोर्ट थाने में लिखाई गई. बांग्लादेश के दूतावास को भी इसकी सूचना दी गई।

बांग्लादेश के सांसद की तलाश में पुलिस जुटी. जांच के दौरान उनका लोकेशन बिहार के मुजफ्फरपुर में मिला. कोलकाता से पुलिस की एक टीम बिहार गई, लेकिन उनके लापता होने के 9 दिन बाद अनवारुल आजिम का शव कोलकाता के न्यू टाउन से बरामद हुआ है. उनकी हत्या की आशंका जताई जा रही है। अनवारुल आजिम बांग्लादेश के झिनाईदह-4 संसदीय क्षेत्र से सांसद हैं. अचानक उनके लापता होने की वजह से पश्चिम बंगाल से लेकर बांग्लादेश तक हड़कंप मच गया. पुलिस ने उन सभी जगहों पर बांग्लादेश के सांसद की तलाश की, जहां उनके जाने का अनुमान था. पुलिस ने कहा था कि जिस गाड़ी में वह चढ़े थे, उसका लोकेशन न्यू टाउन इलाके में मिला था। इसके बाद पुलिस ने बैरकपुर और उसके आसपास के इलाकों में उनकी तलाश शुरू की, लेकिन वह कहीं नहीं मिले. पुलिस ने बताया कि 12 मई को अनवारुल आजिम अपने एक मित्र गोपाल विश्वास के घर पहुंचे थे. 12 मई की रात को वह वहीं रहे. 13 मई को इलाज कराने के लिए निकले और उसके बाद लापता हो गए। यह भी बताया जा रहा है कि कोलकाता आने के बाद वह बरानगर में रहने वाले अपने पुराने दोस्त के घर से निकलने के बाद अनवारुल आजिम न्यू टाउन के एक आवासन में फ्लैट किराए पर लेकर कुछ लोगों के साथ वहां ठहरे थे. न्यू टाउन थाने की पुलिस और विधाननगर कमिश्नरेट का खुफिया विभाग पूरे मामले की जांच में जुटा है।

एक नजर

इजरायली हवाई हमले में हिजबुल्लाह का 1 सदस्य मारा गया

बेरूत। दक्षिणी लेबनान के ऐता अल-शाब गांव पर इजरायली हवाई हमले में हिजबुल्लाह का एक सदस्य मारा गया और तीन नागरिक घायल हो गए। समाचार एजेंसी सिन्हुआ की रिपोर्ट के अनुसार, इजरायली ड्रोन ने दक्षिण पश्चिम लेबनान के गांवों और कस्बों पर चार हवाई हमले किए। साथ ही इसके सैन्य विमानों ने सीमा क्षेत्र के पूर्वी और मध्य क्षेत्रों में छह हमले किए। इस बीच, हिजबुल्लाह ने कहा कि उसके लड़ाकों ने भी कई इजरायली ठिकानों पर हमला किया। 7 अक्टूबर को इजरायल पर हमास के हमले के साथ एकजुटता दिखाने के लिए हिजबुल्लाह इजरायल की ओर लगातार रॉकेट दाग रहा है, जिससे लेबनान-इजरायल सीमा पर तनाव बढ़ गया है। इजरायल भी दक्षिण पूर्वी लेबनान की ओर गोलीबारी कर जवाबी कार्रवाई कर रहा है। लेबनानी सुरक्षा सूत्रों के अनुसार, हिजबुल्लाह और इजरायल के बीच टकराव में लेबनानी पक्ष के 479 लोग मारे गए हैं, जिनमें 303 हिजबुल्लाह के सदस्य और 89 नागरिक शामिल हैं।

सुरक्षा स्थिति के कारण रफा में यूएन एजेंसी ने रोका भोजन वितरण कार्यक्रम

तेल अवीव। फिलिस्तीनी शरणार्थियों के लिए संयुक्त राष्ट्र राहत और कार्य एजेंसी (यूएनआरडब्ल्यूए) ने गाजा पट्टी के दक्षिण में रफा में भोजन वितरण कार्यक्रम को अस्थायी रूप से निलंबित कर दिया है। इसका मुख्य कारण खराब सुरक्षा स्थिति है। मिस्र की सीमा पर रफा में इजरायली सैन्य अभियान जारी है। एक सैन्य प्रवक्ता ने मंगलवार को बताया कि आतंकवादी ढांचे को एक बार फिर नष्ट कर दिया गया है और सुरंगों में हथियारों के भंडार की खोज की गई है। इजरायल से मिली जानकारी के मुताबिक, सोमवार को सहायता सामग्री लेकर 403 लॉरियां गाजा पट्टी पहुंची थी। युद्ध की शुरुआत के बाद से, इजरायली अधिकारियों का कहना है कि 572,000 टन से अधिक भोजन सामग्री वितरित की गई है। गाजा युद्ध 7 अक्टूबर को हमास द्वारा किए गए नरसंहार के बाद शुरू हुआ था। आतंकवादी हमले में लगभग 400 सैनिकों सहित 1,200 से अधिक लोग मारे गए थे और 200 से अधिक लोगों को गाजा पट्टी में बंधक बना लिया गया था। गाजा पट्टी पर इजरायली हमले में 35,000 से अधिक लोग मारे गए हैं, जिनमें मुख्य रूप से महिलाएं और बच्चे शामिल हैं। लगभग 80,000 लोग घायल हुए हैं। अनुमान है कि गाजा में 80 प्रतिशत से अधिक आवास नष्ट हो गए हैं, और अधिकांश क्षेत्र रहने लायक नहीं रह गया है।

नेपाली पर्वतारोही कामी रीता ने 30वीं बार माउंट एवरेस्ट पर चढ़ाई की

काठमांडू,एजेंसी। नेपाल के दिग्गज पर्वतारोही कामी रीता शेरपा ने बुधवार को 30वीं बार माउंट एवरेस्ट पर चढ़ाई करके इतिहास रच दिया और उन्होंने 10 दिन पहले दुनिया की सबसे ऊंची चोटी पर सबसे अधिक बार चढ़ने का अपना ही रिकॉर्ड तोड़ दिया। '14 पीक्स एक्सपीडिशन' कंपनी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी ताशी लकपा शेरपा के अनुसार 54 वर्षीय पर्वतारोही रीता शेरपा स्थानीय समयानुसार सुबह सात बजकर 49 मिनट पर 8,849 मीटर ऊंची चोटी पर पहुंचे। कामी ने मात्र 10 दिन पहले ही 29वीं बार एवरेस्ट पर चढ़ाई की थी। 'हिमालयन टाइम्स' अखबार ने ताशी लकपा के हवाले से जानकारी दी, 'उन्होंने 12 मई को 29वीं बार एवरेस्ट पर चढ़ाई की। रिपोर्ट में कहा गया है कि दिग्गज पर्वतारोही कामी ने मई 1994 में पहली बार माउंट एवरेस्ट पर चढ़ाई की थी। उनका जन्म 17 जनवरी, 1970 को हुआ था और उनकी पर्वतारोहण यात्रा 1992 में शुरू हुई थी। पिछले साल उन्होंने एक ही मौसम में 27वीं और 28वीं बार माउंट एवरेस्ट पर सफलतापूर्वक चढ़ाई की थी।

अमेरिका में सड़क दुर्घटना में भारतीय मूल के तीन छात्रों की मौत

वाशिंगटन। अमेरिकी राज्य जॉर्जिया में एक भीषण सड़क दुर्घटना में तेज रफ्तार कार पलट जाने से तीन भारतीय-अमेरिकी छात्रों की मौत हो गई और दो अन्य घायल हो गए। पुलिस ने यह जानकारी दी। स्थानीय पुलिस के अनुसार, मृतकों की पहचान श्रिया अवसारला, अन्वि शर्मा और आर्यन जोशी के रूप में की गई है, जो पिछले सप्ताह अल्फारेटा में वेस्टसाइड पार्कवे पर दुर्घटनाग्रस्त हुए वाहन में सवार थे। घटनास्थल पर मौजूद सबूतों के आधार पर, यह माना जा रहा है कि चालक ने अपनी कार से नियंत्रण खो दिया था, जिसके बाद कार पलट गई। कार में सवार दो लोग जोशी और अवसारला घटनास्थल पर मृत पाए गए। बाकी तीन लोगों को इलाज के लिए नॉर्थ फुल्टन अस्पताल ले जाया गया। अल्फारेटा पुलिस ने एक बयान में कहा कि शर्मा ने अस्पताल में दम तोड़ दिया। जॉर्जिया स्टेट यूनिवर्सिटी के छात्र और वाहन चालक रित्वक सोमपल्ली तथा अल्फारेटा हाई स्कूल के छात्र मोहम्मद लियाकत की पहचान घायल हुए अन्य दो छात्रों के रूप में की गई। बयान के मुताबिक, सभी की उम्र 18 साल थी।

पीटीआई नेता परवेज इलाही को कोट लखपत जेल से रात को किया गया रिहा

लाहौर। पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) के नेता चौधरी परवेज इलाही को मंगलवार रात कोट लखपत जेल से रिहा कर दिया गया। लाहौर हाईकोर्ट ने उन्हें जमानत देते हुए मुख्यमंत्री के रूप में उनके कार्यकाल के दौरान पंजाब विधानसभा में की गई कथित अवैध नियुक्ति से संबंधित एक मामले में उनकी रिहाई का आदेश दिया था।

इलाही के वकील अमीर सईद ने बताया कि जेल से रिहा होने के बाद पीटीआई नेता जहूर इलाही पैलेस पहुंचे। वहां वह परिवार के सदस्यों से मिले। इलाही को इस महीने की शुरुआत में कोट लखपत जेल ले जाया गया था। इलाही ने कहा है मैं उन न्यायाधीशों का आभारी हूं जिन्होंने सच्चाई का समर्थन किया और मुझे रिहा कर दिया गया। मैं उन सभी का आभारी हूं जिन्होंने मेरे लिए प्रार्थना की

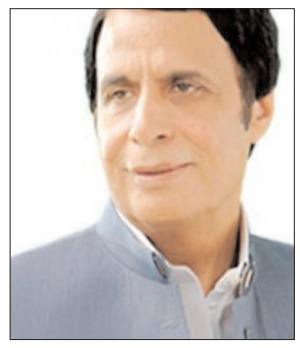

और इस कठिन समय में मेरा साथ दिया। राज्य के लोगों को बहुत दुर्व्यवहार और क्रूरता का सामना करना पड़ा। यहां तक कि हमारा जनादेश भी चोरी हो गया। पीटीआई नेता इलाही आरोप लगाया कि गृहमंत्री मोहसिन नकवी ने उन्हें गिरफ्तार कराने में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने कहा, मैं इमरान खान के साथ था, हूं और रहूंगा।

अमेरिका का रईसी के हेलीकॉप्टर हादसे की जांच में सहयोग से इनकार

वाशिंगटन,एजेंसी। ईरान में राष्ट्रपति इब्राहिम रईसी के हेलीकॉप्टर हादसे की जांच में सहयोग करने से अमेरिका ने इनकार कर दिया है। अमेरिका ने आने-जाने की दिक्कतों का हवाला दिया है। इस हादसे में राष्ट्रपति इब्राहिम रईसी के साथ विदेश मंत्री हुसैन अमीर अब्दुल्लाहियन और छह अन्य लोगों की मौत हो गई थी। ईरान सरकार ने अमेरिका से जांच में मदद का आग्रह किया था।

अमेरिकी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता मैथ्यू मिलर से प्रेस वार्ता में जब ईरान सरकार की ओर से मदद का आग्रह किए जाने के बाबत पूछा गया तो उन्होंने स्पष्ट किया कि अमेरिका इस तरह की स्थितियों में विदेशी सरकारों से आग्रह आने पर मदद करता है लेकिन अमेरिका उसकी किसी भी तरह की मदद कर पाने में सक्षम नहीं है। अमेरिका काफी हद तक लॉजिस्टिकल कारणों से ईरान की मदद करने में सक्षम नहीं

है। अमेरिका द्वारा संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में रईसी के प्रति संवेदना व्यक्त करने और एक मिनट के मौन में भाग लेने संबंधी सवाल पर मिलर ने कहा कि उनके देश का स्पष्ट मत है कि रईसी चार दशकों तक ईरानी लोगों के दमन में क्रूर भागीदार थे, लेकिन अमेरिका हेलीकॉप्टर दुर्घटना जैसी घटना में कोई भी जान जाने पर अफसोस व्यक्त करता है।

लेकिन इससे ईरान में जज और राष्ट्रपति के तौर पर रईसी के रिकार्ड की हकीकत और यह तथ्य नहीं बदल जाता कि उनके हाथ खून से सने थे। मिलर ने कहा, ईरान के प्रति हमारा मौलिक दृष्टिकोण न बदला है और न ही बदलेगा। हम ईरान के लोगों का समर्थन करना और उनके मानवाधिकारों, एक खुले व मुक्त समाज और लोकतांत्रिक भागीदारी की उनकी आकांक्षाओं की रक्षा करना जारी रखेंगे। मिलर ने पूर्व ईरानी विदेश मंत्री मोहम्मद जवाद जरीफ की उस टिप्पणी का भी जवाब दिया, जिन्होंने हादसे के लिए अमेरिकी प्रतिबंधों को दोषी ठहराया था। अमेरिकी प्रवक्ता ने कहा, ईरानी सरकार ने आतंकवाद का समर्थन करने के लिए उपकरण ले जाने में अपने विमान का उपयोग किया। इसलिए हम अपने प्रतिबंधों को पूरी तरह से जारी रखेंगे, जिसमें ईरान सरकार द्वारा उपयोग के लिए विमानों पर प्रतिबंध शामिल हैं। अंततः ईरानी सरकार ही खराब मौसम में 45 वर्ष पुराने हेलीकॉप्टर को उड़ाने के लिए जिम्मेदार है। इससे पहले संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में हेलीकॉप्टर हादसे में मारे गए रईसी और अन्य लोगों के लिए एक मिनट का मौन रखा गया।

कोविड पर रिपोर्टिंग करने वाली चीनी पत्रकार चार साल बाद रिहा

बैंकाक, 22 मई (वेब वार्ता)। चीन के वुहान में कोरोना वायरस फैलने के शुरुआती दिनों में रिपोर्टिंग करने से जुड़े मामले में चार साल की सजा काटने के बाद चीनी पत्रकार झांग झान को जेल से रिहा कर दिया गया। पत्रकार ने रिहा होने के आठ दिन बाद मंगलवार को एक वीडियो में यह जानकारी दी। झांग झान को 'झगड़ा कराने और गड़बड़ी पैदा' करने के जुर्म में चार साल की सजा सुनाई गई थी। झांग झान के रिहा होने के दिन उनके पूर्व वकील झान से या उनके परिवार से संपर्क नहीं कर सके। एक संक्षिप्त वीडियो में झांग ने बताया कि उन्हें 13 मई को जेल से रिहा किया गया और पुलिस ने उनके भाई झांग जू के घर पर उन्हें छोड़ा था।

उन्होंने कहा, मैं सभी को मेरी मदद करने के लिए धन्यवाद देती हूं। चीनी पत्रकार का यह वीडियो एक विदेशी कार्यकर्ता जेन वांग ने साझा किया। उन्होंने झांग झान को रिहा करने के लिए ब्रिटेन में अभियान शुरू किया था और वह झांग के पूर्व वकीलों से लगातार संपर्क में रहे थे। वांग ने एक बयान में कहा कि झांग को अभी भी

सीमित स्वतंत्रता है। अब उन्हें इस बात की चिंता सता रही है कि पुलिस चीनी पत्रकार झांग को और अधिक नियंत्रण में रखेगी, भले ही वह अब जेल में न हो। झांग उन मुट्ठी भर पत्रकारों में से एक थीं जिन्होंने महामारी के शुरुआती दिनों और फरवरी 2020 में चीन सरकार द्वारा पूर्ण लॉकडाउन लगाए जाने के बाद वुहान में जगह-जगह जा कर रिपोर्टिंग की थी।

पूर्वी सेना प्रमुख ने मिजोरम के राज्यपाल, मुख्यमंत्री के साथ की भारत-म्यांमार सीमा सुरक्षा पर चर्चा

आइजोल। सेना की पूर्वी कमान के प्रमुख लेफ्टिनेंट जनरल आर.सी. तिवारी ने मंगलवार को मिजोरम के राज्यपाल और मुख्यमंत्री के साथ अलग-अलग बैठकें कीं और म्यांमार के साथ सीमा पर मौजूदा सुरक्षा स्थिति और चुनौतियों से निपटने के लिए असम राइफल्स की परिचालन तैयारियों पर चर्चा की। मिजोरम सरकार के एक अधिकारी ने कहा कि लेफ्टिनेंट जनरल तिवारी ने सेना के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ राजभवन में राज्यपाल हरि बाबू कंभमपति के साथ बैठक की और भारत-म्यांमार सीमाओं पर मौजूदा सुरक्षा स्थिति पर चर्चा की। अधिकारी ने कहा, सेना के अधिकारियों ने राज्यपाल को सीमा पर चुनौतियों से निपटने के लिए असम राइफल्स की परिचालन तैयारियों के बारे में जानकारी दी। लेफ्टिनेंट जनरल तिवारी ने सिविल सचिवालय में मुख्यमंत्री लालदुहोमा के साथ भी बैठक की और सीमा और अन्य संबंधित

मुद्दों पर चर्चा की। मुख्यमंत्री ने बाद में एक्स पर एक पोस्ट में कहा आज मैंने जनरल ऑफिसर कमांडिंग-इन-चीफ, पूर्वी कमान लेफ्टिनेंट जनरल आर.सी. तिवारी से मुलाकात की। हमने समन्वय में सुधार के लिए एआर ग्राउंड के स्थानीय उपयोग को बढ़ाने, किसानों के लिए जोखावसांग बाईपास रोड विकसित करने और नशीली दवाओं से संबंधित गतिविधियों पर रोक लगाने सहित अन्य विषयों पर चर्चा की। मिजोरम की 510 किलोमीटर सीमा म्यांमार के साथ और 318 किलोमीटर की सीमा बांग्लादेश के साथ लगती है। म्यांमार सीमा की सुरक्षा असम राइफल्स द्वारा की जा रही है, जबकि सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) बांग्लादेश सीमा पर सुरक्षा प्रदान करती है। फरवरी 2021 में म्यांमार में सैन्य तख्तापलट के बाद चिन राज्य से 34,350 से अधिक म्यांमारवासी मिजोरम भाग गए। बांग्लादेश के चटगांव पहाड़ी इलाकों में जातीय परेशानियों के कारण नवंबर 2022 से पड़ोसी देश के 1,433 आदिवासियों ने मिजोरम में शरण ली है। भारत-म्यांमार सीमा पर नशीली दवाओं और अन्य प्रतिबंधित पदार्थों की तस्करी भी बड़े पैमाने पर होती है। अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर, नगालैंड और मिजोरम तक फैली भारत-म्यांमार सीमाओं की भेद्यता का हवाला देते हुए केंद्र सरकार ने फ्री मूवमेंट रिजीम (एफएमआर) को खत्म करने के लिए सीमाओं पर बाड़ लगाने का फैसला किया है। मिजोरम और नगालैंड सरकार के साथ-साथ विभिन्न राजनीतिक दल और संगठन सरकार के इस कदम का कड़ा विरोध कर रहे हैं।

इजराइल ने नॉर्वे और आयरलैंड के फलस्तीन को देश का दर्जा देने के फैसले पर अपने राजदूतों को वापस बुलाया

कोपेनहेगन (डेनमार्क)। इजराइल के विदेश मंत्री इजराइल काट्ज ने आयरलैंड और नॉर्वे से देश के राजदूतों को तुरंत स्वदेश लौटने का निर्देश दिया है। दरअसल नॉर्वे ने घोषणा की है कि वह फलस्तीन को देश का दर्जा देगा और आयरलैंड के भी फलस्तीन को देश का दर्जा देने की संभावना है। इन हालात के मद्देनजर इजराइल सरकार ने यह निर्देश दिया है। काट्ज ने कहा कि फलस्तीन को देश का दर्जा दिए जाने से गाजा में इजराइल के बंधकों को वापस देश में लाने के लिए परेशानी खड़ी हो सकती है। साथ ही 'हमास और ईरान के जिहादियों को पुरस्कृत करने' से संघर्ष विराम की संभावना कम हो जाएगी। उन्होंने यह भी कहा कि स्पेन ने भी यही रुख अपनाया तो वहां से भी इजराइल के राजदूत को वापस बुला लिया जाएगा।

इससे पहले बुधवार को नॉर्वे के प्रधानमंत्री जोनस गार स्तूर ने कहा, ''अगर मान्यता नहीं दी गयी तो पश्चिम एशिया में शांति स्थापित नहीं हो सकती।'' उन्होंने कहा कि नॉर्वे 28

मई तक फलस्तीन को देश के तौर पर मान्यता दे देगा। यूरोपीय संघ के कई देशों ने पिछले सप्ताहों में संकेत दिया है कि वे मान्यता देने की योजना बना रहे हैं, उनकी दलील है कि क्षेत्र में शांति के लिए द्वि-राष्ट्र समाधान आवश्यक है। नॉर्वे इजराइल और फलस्तीन के बीच द्वि-राष्ट्र समाधान का कट्टर समर्थक रहा है। वह यूरोपीय संघ का सदस्य नहीं है लेकिन इस मुद्दे पर उसका रुख भी यूरोपीय संघ के अन्य सदस्यों के समान है। नॉर्वे सरकार के मंत्री ने कहा, ''हमास और आतंकवादी समूहों ने आतंक फैलाया है जो द्वि-राष्ट्र समाधान और इजराइल सरकार के समर्थक नहीं हैं। नॉर्वे के प्रधानमंत्री ने एक संवाददाता सम्मेलन में कहा, 'फलस्तीन को एक स्वतंत्र देश का दर्जा देना मौलिक अधिकार है।'

जनरल लैम बने वियतनाम के नए राष्ट्रपति

हनोई। वियतनाम की कम्युनिस्ट पार्टी के पोलित ब्यूरो के सदस्य जनरल टू लैम ने बुधवार को वियतनाम के नये राष्ट्रपति के रूप में शपथ ली। यह जानकारी स्थानीय मीडिया ने आज यहां दी। वियतनाम समाचार एजेंसी के अनुसार देश की 15वीं नेशनल असेंबली (संसद) के चल रहे सातवें सत्र में जनरल लैम ने राष्ट्रपति बनने के लिए आज बहुमत प्राप्त किया। उन्होंने शपथ ग्रहण समारोह के दौरान कहा कि वह पार्टी, देश और नागरिकों द्वारा सौंपे गए कर्तव्यों को पूरा करने की हरसंभव कोशिश करेंगे। वर्ष जन्म 1957 में जनरल लैम उत्तरी प्रांत हंग येन के रहने वाले हैं। वह 12वीं और 13वीं सत्र के दौरान पोलित ब्यूरो सदस्य के रूप में कार्यरत रहे हैं। वह अप्रैल 2016 से सार्वजनिक सुरक्षा मंत्री हैं। बीस मार्च को, वियतनाम केंद्रीय समिति की 13वीं कम्युनिस्ट पार्टी ने व्यक्तिगत अनुरोध पर पोलित ब्यूरो के सदस्य एवं वियतनाम के राष्ट्रपति के रूप में वो वान थुओंग का इस्तीफा स्वीकार कर लिया।

एक नजर

इससे बेहतर पसंद नहीं हो सकती थी, कोहली पर बोले आरसीबी के पूर्व मालिक माल्या

नई दिल्ली,एजेंसी। आईपीएल के पहले सत्र में विराट कोहली को चुनने वाले रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरू के पूर्व मालिक विजय माल्या ने बुधवार को कहा कि इससे बेहतर पसंद नहीं हो सकती थी। उन्होंने आईपीएल के मौजूदा सत्र में शानदार प्रदर्शन के लिये कोहली की तारीफ की। आरसीबी ने पहले आठ में से सात मैच हारने के बाद लगातार छह जीत दर्ज करके प्लेआफ में जगह बनाई। कोहली अभी तक 14 मैचों में 708 रन बना चुके हैं। अब आरसीबी का सामना बुधवार को एलिमिनेटर में राजस्थान रॉयल्स से होगा। माल्या ने एक्स पर लिखा, ''जब मैने आरसीबी टीम के लिये बोली लगाई और विराट के लिये बोली लगाई तो मेरी अंतरात्मा ने कहा कि इससे बेहतर पसंद नहीं हो सकती। ब्रिटेन में रह रहे माल्या ने लिखा, ''मेरी अंतरात्मा कह रही है कि आरसीबी इस साल आईपीएल जीत सकती है। शुभकामनायें। आरसीबी ने विराट कोहली को 2008 आईपीएल में 30000 डॉलर में खरीदा था। आरसीबी तीन बार 2009, 2011 और 2016 में फाइनल तक पहुंची लेकिन खिताब नहीं जीत सकी। माल्या की बंद हो चुकी किंगफिशर एयरलाइंस पर बैंकों का 9000 करोड़ रूपये से अधिक का कर्ज है। वह मार्च 2016 से ब्रिटेन में रह रहे हैं। उन्हें कानूनी कार्रवाई के कारण उसी साल आरसीबी का मालिकाना हक भी गंवाना पड़ा था।

सचिन खिलाड़ी ने विश्व पैरा एथलेटिक्स में स्वर्ण बरकरार रखा, भारत का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन

कोबे (जापान)। भारत के सचिन सर्जेराव खिलाड़ी ने विश्व पैरा एथलेटिक्स चैम्पियनशिप में पुरूषों के शॉटपुट एफ46 वर्ग में एशियाई रिकॉर्ड के साथ स्वर्ण पदक जीता और भारत ने टूर्नामेंट में अब तक का अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन भी कर दिखाया है। भारत के अब पांच स्वर्ण समेत 11 पदक है। इससे पहले भारत ने 2023 में पेरिस में तीन स्वर्ण समेत दस पदक जीते थे। सचिन ने 10.30 मीटर का थ्रो फेंककर 16.21 मीटर का अपना ही रिकॉर्ड बेहतर किया जो उन्होंने पिछले साल पेरिस में विश्व पैरा एथलेटिक्स चैम्पियनशिप में बनाया था। पैरा एथलेटिक्स स्पर्धाओं में F46 श्रेणी उन लोगों के लिए है जिनकी एक या दोनों भुजाओं की गतिविधि मामूली रूप से प्रभावित है या जिनके हाथ-पैर नहीं हैं। इन एथलीटों को कूल्हों और पैरों की ताकत से थ्रो करना होता है। महाराष्ट्र के सांगली जिले के रहने वाले सचिन स्कूली दिनों में एक दुर्घटना का शिकार हो गए थे जिससे उन्होंने कोहनी की मांसपेशियां गंवा दी। कई सर्जरी के बावजूद वह ठीक नहीं हो सके। सचिन ने स्वर्ण जीतने के बाद कहा, ''मैं इसकी ही उम्मीद कर रहा था और मैं बहुत खुश हूं। मैं पेरिस पैरालम्पिक के लिये क्वालीफाई कर चुका हूं और वहां भी स्वर्ण जीतने की कोशिश करूंगा। अभी टूर्नामेंट के तीन दिन बाकी है और कोच सत्यनारायण को पदक संख्या में इजाफा होने की उम्मीद है। उन्होंने कहा, ''हमें दो और स्वर्ण की उम्मीद है। पदकों की संख्या 17 तक जानी चाहिये। इससे पहले कल पैरालम्पिक चैम्पियन सुमित अंतिल ने एफ64 भालाफेंक में अपना स्वर्ण पदक बरकरार रखा था। थंगावेलु मरियप्पन और एकता भयान ने भी स्वर्ण पदक जीते थे।

भारत में लोग कोहली को नहीं चुनने के कारण ढूंढते हैं, वह मेरी पहली पसंद: पोंटिंग

बेंगलुरू,एजेंसी। आस्ट्रेलिया के महान क्रिकेटर रिकी पोंटिंग हैरान हैं कि भारत में लोग विराट कोहली को राष्ट्रीय टीम में नहीं चुनने के कारण क्यो ढूंढते हैं और उनका कहना है कि यह करिश्माई बल्लेबाज टी20 विश्व कप के लिये उनकी पहली पसंद है। आईपीएल में 14 मैचों में 708 रन बना चुके कोहली जबर्दस्त फॉर्म में हैं लेकिन उनके स्ट्राइक रेट को लेकर लगातार चर्चा हो रही है। दिल्ली कैपिटल्स के मुख्य कोच और आस्ट्रेलिया के पूर्व कप्तान पोंटिंग ने कहा, ''यह बहुत हैरानी भरा है। मुझे लगता है कि भारत में लोग हमेशा उसे राष्ट्रीय टीम में नहीं चुनने के कारण ढूंढते रहते हैं या यह जताने की कोशिश में रहते हैं कि वह टी20 क्रिकेट में बाकियों की तरह बेहतरीन नहीं है। पोंटिंग का मानना है कि अगले महीने वेस्टइंडीज और अमेरिका में होने वाले टी20 विश्व कप में कोहली को कप्तान रोहित शर्मा के साथ पारी का आगाज करना चाहिये क्योंकि बाद में सूर्यकुमार यादव समेत अन्य तेजी से रन बना सकते हैं। उन्होंने कहा, ''सलामी जोड़ी को लेकर चयनकर्ताओं को फैसला लेना है क्योंकि यशस्वी जायसवाल भी टीम में है। जायसवाल के बल्लेबाजी क्रम पर फैसला लेना होगा लेकिन मुझे यकीन है कि पारी का आगाज कोहली और रोहित करेंगे। उन्होंने कहा, ''वह शीर्षक्रम में भूमिका बखूबी निभा सकता है। सूर्यकुमार और बाकी बल्लेबाज बाद में तेजी से रन बना सकते हैं। पोंटिंग ने कहा कि आजकल क्रिकेट में औसत से अधिक तरजीह स्ट्राइक रेट को मिल रही है लेकिन भारतीय टीम के लिये कोहली की उपयोगिता को कमतर नहीं आंका जा सकता। उन्होंने कहा, ''तीन या चार साल पहले टीमें सोचती थी कि शीर्षक्रम पर कोई 80 या 100 रन बना ले, भले ही इसके लिये 60 गेंद खेल जाये। लेकिन अब टीमें चाहती है कि बल्लेबाज 15 गेंद में 40 रन बना जाये। मेरा मानना है कि दबाव के क्षणों में बड़े मैचों में विराट कोहली जैसा क्रिकेटर ही चाहिये।''

थाईलैंड ओपन जीत के बाद पुरुष युगल विश्व रैंकिंग में शीर्ष पर पहुंचे सात्विक-चिराग

नई दिल्ली। सात्विकसाईराज रंकीरेड्डी और चिराग शेट्टी ने मंगलवार को थाईलैंड ओपन में अपनी जीत के बाद पुरुष युगल विश्व रैंकिंग में नंबर एक स्थान हासिल कर लिया। ऑल इंग्लैंड चैंपियनशिप के दूसरे दौर में हार के बाद भारतीय जोड़ी तीसरे नंबर पर खिसक गई थी और फिर सात्विक की चोट के कारण चीन में एशिया चैंपियनशिप में विपक्षी टीम को वॉकओवर दे दिया गया था। उन्होंने रविवार को थाईलैंड ओपन में जोरदार वापसी करते हुए चीन के चेन बो यांग और लियू यी पर सीधे गेम में जीत के साथ सीजन का अपना दूसरा खिताब जीता। मंगलवार को जारी बीडब्ल्यूएफ रैंकिंग में, वे 99670 अंकों के साथ दो पायदान चढ़कर पांच सप्ताह के बाद फिर से शीर्ष स्थान पर पहुंच गए। डबल ओलंपिक पदक विजेता पीवी सिंधु महिला एकल रैंकिंग में एक स्थान गिरकर 15वें नंबर पर आ गईं, जबकि एचएस प्रणय ने अपनी नंबर 9 रैंकिंग बरकरार रखी और पुरुष एकल के शीर्ष -10 में शामिल एकमात्र भारतीय हैं। लक्ष्य सेन तीन स्थान गिरकर 14वें नंबर पर खिसक गए। किदांबी श्रीकांत (26वें), प्रियांशु राजावत (33वें) एक-एक स्थान नीचे खिसक गए, जबकि किरण जॉर्ज 36वें नंबर पर खिसक गए। महिला युगल में तनीषा क्रैस्टो और अश्विनी पोनप्पा 19वें नंबर पर सर्वश्रेष्ठ रैंकिंग वाली भारतीय हैं। राष्ट्रमंडल खेलों की कांस्य पदक विजेता ट्रीसा जॉली और गायत्री गोपीचंद की जोड़ी एक स्थान गिरकर विश्व में 29वें स्थान पर खिसक गई है। मिश्रित युगल में, सतीश कुमार करुणाकरन और आद्या वरियाथ तीन स्थान ऊपर चढ़कर विश्व में 39वें स्थान पर पहुंच गए और शीर्ष 50 में शामिल एकमात्र भारतीय हैं।

राजस्थान रॉयल्स ने रॉयल्स चैलेंजर्स बेंगलुरु को चार विकेट से हराया

अहमदाबाद,एजेंसी। गेंदबाजों के शानदार प्रदर्शन के बाद यशस्वी जायसवाल (45), रियान पराग (36) और शिमरॉन हेटमायर (26) रनों की पारियों की बदौलत राजस्थान रॉयल्स ने बुधवार को इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के एलिमिनेटर मुकाबले में रॉयल्स चैलेंजर्स बेंगलुरु को चार विकेट से हरा दिया है।

173रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी राजस्थान रॉयल्स ने अच्छी शुरुआत का प्रयास किया। इसी दौरान छठें ओवर में लॉकी फर्ग्युसन ने टॉम कोहलर कैडमोर (20) रन पर बोल्ड कर बेंगलुरु को पहली सफलता दिलाई। इसके बाद यशस्वी जयसवाल और कप्तान संजू सैमसन ने पारी को संभालने का प्रयास किया। 10वें ओवर में यशस्वी भी 30 गेंदों में 45 रन पर बनाकर पवेलियन लौट गये। तीसरे विकेट के रूप में कर्ण शर्मा ने संजू को (17) रन पर स्टंप आउट करवाया। ध्रुव जुरेल (8) पर रनआउट हुये। रियान पराग 26 गेंदों में (36) और शिमरॉन हेटमायर 14 गेंदों में (26) रन बनाकर आउट हुये। रोवमन पॉवेल आठ गेंदों में 16 रन बनाकर नाबाद रहे। राजस्थान रॉयल्स ने 19 ओवर में छह विकेट पर 174 रन बनाकर मुकाबला चार विकेट से जीत लिया।

बेंगलुरु की ओर से मोहम्मद सिराज ने दो विकेट लिये। लॉकी फर्ग्युसन, कर्ण शर्मा और कैमरून ग्रीन ने एक-एक विकेट लिया। इससे पहले रजत पाटीदार (34) और विराट कोहली (33) की पारियों के दम पर रॉयल्स चैलेंजर्स बेंगलुरु ने राजस्थान रॉयल्स को जीत के लिए 173 रनों का लक्ष्य दिया था। आज यहां राजस्थान रॉयल्स के कप्तान संजू सैमसन ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया है। बल्लेबाजी करनी उतरी बेंगलुरु की अच्छी नहीं रही और उसने पांचवें ओवर में कप्तान फाफ डुप्लेसी (17) का विकेट गंवा दिया। उन्हें ट्रेंट बोल्ट ने पॉवेल के हाथों कैच आउट कराया। इसके बाद आठवें ओवर में विराट कोहली को युजवेंद्र चहल ने डी फरेरा के हाथों कैच आउट कराया। कोहली ने 24 गेंदों में तीन चौके और एक छक्का लगाते हुए (33) रनों की पारी खेली। कैमरून ग्रीन 21 गेंदों में (27), ग्लेन मैक्सवेल (शून्य) पर आउट हुये। दोनों ही बल्लेबाजों को आर अश्विन ने आउट किया। रजत पाटीदार ने 22 गेंदों में दो चौके और दो छक्के लगाते हुये (34) रन बनाये। उन्हें आवेश खान ने आउट किया। दिनेश कार्तिक (11) को आवेश खान ने आउट किया। महिपाल लोमरोर ने 17 गेंदों में (32) रन बनाये। आठवें विकेट के रूप में आखिर गेंद पर कर्ण शर्मा (5) रन बनाकर आउट हुये। स्वप्निल सिंह(9) रन बनाकर नाबाद रहे। रॉयल्स चैलेंजर्स बेंगलुरु ने निर्धारित 20 ओवरों में आठ विकेट पर 172 रन का स्कोर खड़ा किया। राजस्थान रॉयल्स की ओर से आवेश खान ने तीन विकेट लिये। रवि अश्विन को दो विकेट मिले। ट्रेंट बोल्ट, संदीप शर्मा और युजवेंद्र चहल ने एक-एक बल्लेबाज को आउट किया।

टेनिस ब्रांड एंबेसडर के रूप में सोनी स्पोर्ट्स नेटवर्क से जुड़ी रहेंगी सानिया मिर्जा

मुंबई,एजेंसी। भारतीय दिग्गज खिलाड़ी सानिया मिर्जा प्रमुख खेल प्रसारक-सोनी स्पोर्ट्स नेटवर्क के साथ टेनिस ब्रांड एंबेसडर के रूप में जुड़ी रहेंगी। सानिया सोनी स्पोर्ट्स नेटवर्क के प्रमुख स्टूडियो शो-एक्स्ट्रा सर्व- में एक्सपर्ट पैनलिस्ट के रूप में रोलां गैरों के लाइव कवरेज के दौरान दिखाई देंगी। सानिया इतिहास की सबसे सफल भारतीय टेनिस खिलाड़ियों में से एक हैं। इनके नाम छह ग्रैंड स्लैम खिताब हैं। उन्हें भारत सरकार द्वारा प्रतिष्ठित अर्जुन पुरस्कार, मेजर ध्यानचंद खेल रत्न पुरस्कार, पद्म श्री और पद्म भूषण से सम्मानित किया जा चुका है।

वह सोनी स्पोर्ट्स नेटवर्क पर रोलां गैरों के लिए अपनी एक्सपर्ट राय और गहन विश्लेषण साझा करती नजर आएंगी। सानिया के साथ, सोनी स्पोर्ट्स नेटवर्क में ओलंपियन और भारत के पूर्व नंबर-1 और एशियाई खेलों और राष्ट्रमंडल खेलों के स्वर्ण पदक विजेता सोमदेव देववर्मन और डेविस कप खिलाड़ी पूरव राजा रोलां गैरों के एक्सपर्ट पैनल में शामिल होंगे। टेनिस में सबसे कठिन सतह पर खेले जाने वाले इस टूर्नामेंट का 26 मई 2024 को सोनी स्पोर्ट्स नेटवर्क पर चार भाषाओं अंग्रेजी, हिंदी, तमिल और तेलुगु में प्रसारण किया जाएगा। सोनी पिक्चर्स नेटवर्क इंडिया के राजेश कौल, मुख्य राजस्व अधिकारी (वितरण और अंतरराष्ट्रीय व्यापार तथा प्रमुख - खेल व्यापार) ने कहा, हम सानिया के साथ साझेदारी को आगे बढ़ाते हुए बेहद खुश हैं, जो सोनी स्पोर्ट्स नेटवर्क पर टेनिस एंबेसडर के रूप में खेल के बारे में अपनी अमूल्य विशेषज्ञता और अंतर्दृष्टि साझा करना जारी रखेंगी। यह साझेदारी हमें अपने रुख को बनाए रखने में मदद करेगी क्योंकि सोनी नेटवर्क्स सही मायने में भारत में टेनिस का घर है। यह सबसे महत्वपूर्ण टेनिस टूर्नामेंटों का प्रसारण बेजोड़ एक्सपर्ट एनालिसिस के साथ करता है। सानिया ने कहा, ग्रैंड स्लैम में अविस्मरणीय यादों से भरे एक साल के बाद, मैं ब्रांड एंबेसडर और एक्सपर्ट पैनलिस्ट के रूप में सोनी स्पोर्ट्स नेटवर्क के साथ बने रहने के लिए उत्साहित हूं। आगामी रोलां गैरों ख़ास होगा, क्योंकि विश्व टेनिस महान खिलाड़ियों के एक नए युग की शुरुआत कर रहा है। मैं फैन्स को खेल के करीब लाने और भारत में टेनिस को वह पहचान दिलाने के सोनी स्पोर्ट्स नेटवर्क के मिशन का हिस्सा बनने के लिए उत्सुक हूं, जिसका वह हकदार है। पूर्व भारतीय खिलाड़ी सोमदेव देववर्मन ने कहा, सोनी स्पोर्ट्स नेटवर्क के शीर्ष टेनिस प्रॉपर्टीज़ के प्रसारण का हिस्सा बनना हमेशा खुशी की बात होती है। आगामी रोलां गैरों कई मायनों में एक खास होने वाला है क्योंकि शानदार नई प्रतिभाओं के आने से खेल में बदलाव देखने को मिल रहा है। मैं रोलां गैरों 2024 के उत्साह और जुनून का हिस्सा बनकर रोमांचित हूं। सबसे कठिन ग्रैंड स्लैम के रूप में माना जाने वाले रोलां गैरों का यह 128वां संस्करण होगा, जिसमें दुनिया के बेहतरीन टेनिस खिलाड़ी क्ले सीजन के लिए तैयार होंगे। राफेल नडाल, जिन्हें क्ले के राजा के रूप में जाना जाता है, ने रिकॉर्ड 14 बार रोलां गैरों चैंपियन का ताज जीता है। स्पेनिश दिग्गज चोट के कारण पिछली बार चूक गए थे और लंबे अंतराल के बाद गौरव हासिल करने की कोशिश करेंगे।

विश्व कप में पाकिस्तान की सफलता की कुंजी होंगे बाबर आजम

इस्लामाबाद,एजेंसी। जांचे और परखे बाबर आजम की टी20 विश्व कप के लिये पाकिस्तान के कप्तान के रूप में वापसी पिछले 18 महीने में पाकिस्तान क्रिकेट में आये भारी बदलावों की अगली कड़ी है लेकिन यह चैम्पियन बल्लेबाज टीम की सफलता की कुंजी साबित हो सकता है। नवंबर 2022 में इंग्लैंड से टी20 विश्व कप फाइनल में बाबर की कप्तानी वाली पाकिस्तानी टीम की हार के बाद से पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड में चार अध्यक्ष बदले, चयन समिति बदली गई और शाहीन शाह अफरीदी को कप्तान बनाने का प्रयोग सफल नहीं रहा।

अब सीमित ओवरों के प्रारूप के लिये टीम को गैरी कर्स्टन के रूप में नया कोच मिला है। पाकिस्तान ने एक से 29 जून तक अमेरिका और वेस्टइंडीज में होने वाले टी20 विश्व कप के लिये अभी तक 15 सदस्यीय टीम का ऐलान नहीं किया है। भारत में पिछले साल 50 ओवरों के विश्व कप के सेमीफाइनल में नहीं पहुंचने के बाद बाबर ने जका अशरफ के पीसीबी प्रमुख रहते सभी प्रारूपों की कप्तानी से इस्तीफा दे दिया था। अब उन्हें नये अध्यक्ष मोहसिन नकवी ने टी20 टीम की कमान फिर सौंपी है। हरफनमौला इमाद वसीम और तेज गेंदबाज मोहम्मद आमिर ने भी अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास का फैसला वापिस ले लिया चूंकि कैरेबियाई प्रीमियर लीग में उनके अनुभव का फायदा टीम को वेस्टइंडीज में होगा। अप्रत्याशित प्रदर्शन करने में सक्षम पाकिस्तानी टीम का टी20 विश्व कप में अच्छा अतीत रहा है। यह तीन बार फाइनल में पहुंचा और 2009 में खिताब जीतने के

अलावा तीन अन्य बार सेमीफाइनल तक पहुंचा है। कर्स्टन के गुरूमंत्र पर पाकिस्तानी खिलाड़ियों ने अमल करना शुरू कर दिया है। अफरीदी ने पीसीबी के एक पॉडकास्ट में कहा, ''गैरी ने हमसे कहा है कि अपनी जर्सी के पीछे लिखे नाम के लिये नहीं बल्कि शर्ट के सामने लगे बैज के लिये खेलो। मैं इसे भूल नहीं पाऊंगा। भारत और पाकिस्तान के बीच नौ जून को होने वाले मुकाबले पर सभी की नजरें हैं जो न्यूयॉर्क में 34000 की क्षमता वाले नासाउ काउंटी इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में खेला जायेगा।

बीमार मां को अस्पताल में छोड़ना कठिन था लेकिन केकेआर भी परिवार है: रहमानुल्लाह गुरबाज

अहमदाबाद,एजेंसी। अफगानिस्तान के विकेटकीपर बल्लेबाज रहमानुल्लाह गुरबाज ने बताया कि सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ आईपीएल प्लेआफ में कोलकाता नाइट राइडर्स के लिये खेलने के लिये वह अपनी बीमार मां को अस्पताल में छोड़कर आये थे क्योंकि इस टीम को भी वह अपना परिवार मानते हैं। इस सत्र में पहला मैच खेलने वाले गुरबाज ने दो मैच लेने के अलावा 14 गेंद में 23 रन बनाकर केकेआर की जीत में अहम भूमिका निभाई। वह इंग्लैंड के फिल साल्ट की जगह टीम में आये थे। केकेआर ने सनराइजर्स को आठ विकेट से हराकर फाइनल में जगह बनाई।

गुरबाज ने मैच के बाद मीडिया से कहा, ''एक क्रिकेटर को हमेशा पता होना चाहिये कि उसे क्या करना है। लीग क्रिकेट में बहुत कम क्रिकेटर ही खेल पाते हैं। मौका मिलने पर अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करना चाहिये। मौका नहीं मिलने पर भी हमेशा तैयार रहना चाहिये। उन्होंने कहा,''मेरी मां अभी भी बीमार है। मैं वहां गया और मुझे यहां से फोन आया कि फिल साल्ट जा रहा है। उन्होंने कहा कि गुरबाज हमें तुम्हारी जरूरत है। मैने कहा कि ठीक है, मैं आ रहा हूं। मेरी मां अस्पताल में है और मैं उनसे लगातार बात कर रहा हूं लेकिन यह भी मेरा परिवार है।मुझे दोनों में संतुलन बनाना है। यह कठिन है लेकिन बनाना जरूरी है। गुरबाज ने कहा कि केकेआर ने टॉस जीतने पर पहले गेंदबाजी का फैसला लेने का ही सोचा था। सनराइजर्स के कप्तान पैट कमिंस का टॉस जीतकर बल्लेबाजी का फैसला गलत साबित हुआ। गुरबाज ने कहा, ''हमें पता है कि सनराइजर्स की बल्लेबाजी

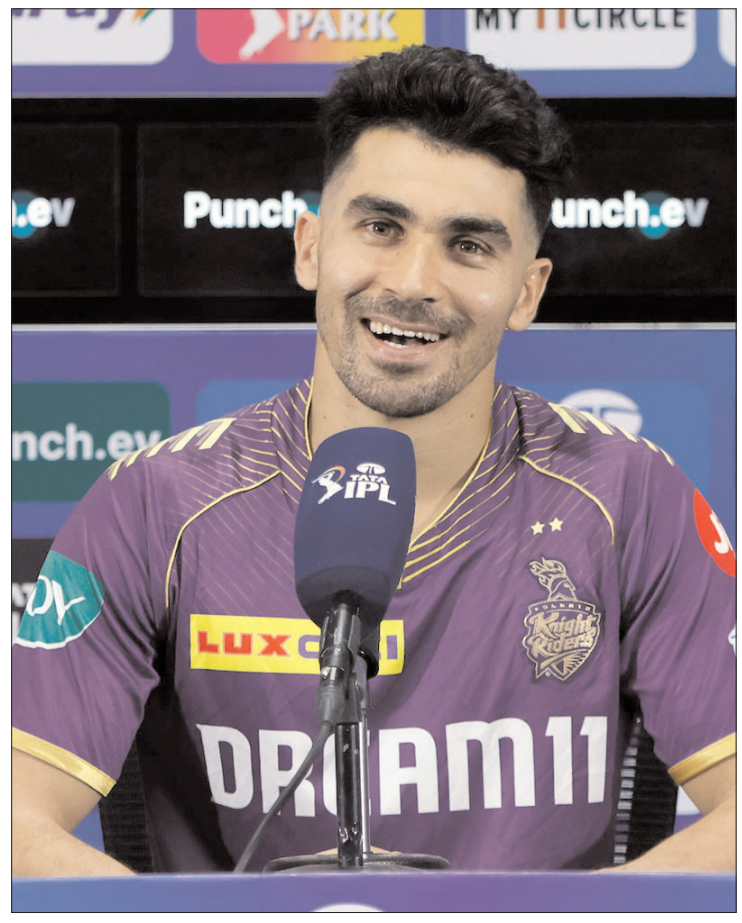

कितनी मजबूत है। हमें लक्ष्य का पता होना चाहिये ताकि उस हिसाब से खेल सकें। हमने अच्छी गेंदबाजी की और सनराइजर्स जैसी टीम को 160 रन पर रोकना बहुत बड़ी बात थी।'' उन्होंने कहा कि अफगानिस्तान के खिलाड़ियों की नजरें अगले महीने होने वाले टी20 विश्व कप पर है क्योंकि फ्रेंचाइजी क्रिकेट से बढकर देश के लि खेलना है।

इंग्लैंड ने यूरो 2024 के लिए घोषित की टीम, रैशफोर्ड, हेंडरसन बाहर

लंदन। इंग्लैंड के मैनेजर गैरेथ साउथगेट ने मंगलवार को अपनी प्री-यूरो 2024 प्रोविजनल टीम की घोषणा की। थ्री लायंस टूर्नामेंट से पहले क्रमश: 3 जून और 7 जून को बोस्निया और हर्जेगोविना और आइसलैंड के खिलाफ दो मैत्री मैच खेलेंगे। मैनचेस्टर यूनाइटेड के फॉरवर्ड मार्कस रैशफोर्ड और अजाक्स के मिडफील्डर जॉर्डन हेंडरसन को साउथगेट द्वारा घोषित 33 सदस्यीय टीम से बाहर कर दिया गया। रैशफोर्ड के बाहर होने पर इंग्लैंड के मैनेजर ने एक बयान में कहा, मुझे लगता है कि पिच के उस क्षेत्र में अन्य खिलाड़ियों का सीज़न बेहतर रहा है। हेंडरसन के बारे में उन्होंने कहा, निर्णायक कारक वह चोट थी जो उन्हें पिछले शिविर में लगी थी। वह पाँच सप्ताह मैदान से बाहर रहे और अपेक्षित तीव्रता हासिल नहीं कर पाए हैं। इसके अतिरिक्त, क्रिस्टल पैलेस के एडम व्हार्टन, लिवरपूल की जोड़ी कर्टिस जोन्स और जेरेल क्वांसा को अपना पहला इंग्लैंड कॉल-अप प्राप्त हुआ। इंग्लैंड यूरो कप टूर्नामेंट में ग्रुप सी में सर्बिया, स्लोवेनिया और डेनमार्क के साथ है। थ्री लायंस अपने अभियान की शुरुआत 16 जून को गेल्सेंकिर्चेन में सर्बिया के खिलाफ करेंगे। इंग्लैंड की टीम पिछले संस्करण में उपविजेता रही थी, जहां फाइनल में इटली के खिलाफ उसे हार का सामना करना पड़ा था।

यूरो 2024 के लिए इंग्लैंड की अस्थायी टीम

गोलकीपर: डीन हेंडरसन, जॉर्डन पिकफोर्ड, आरोन रैम्सडेल, जेम्स ट्रैफर्ड। डिफेंडर्स: जेराड बार्नथवेट, लुईस डंक, जो गोमेज़, मार्क गुही, एज़री कोन्ज़ा, हैरी मैगुइरे, जेरेल क्वांसाह, ल्यूक शॉ, जॉन स्टोन्स, कीरन ट्रिप्पियर, काइल वॉकर। **मिडफील्डर:** ट्रेंट अलेक्जेंडर अर्नोल्ड, कॉनर गैलाघेर, कर्टिस जोन्स, कोबी मैनू, डेक्लान राइस, एडम व्हार्टन। **फॉरवर्ड:** जूड बेलिंगहैम, जारोड बोवेन, एबेरेची एज़े, फिल फोडेन, एंथोनी गॉर्डन, जैक ग्रीलिश, हैरी केन, जेम्स मैडिसन, कोल पामर, बुकायो साका, इवान टोनी, ओली वॉटकिंस।

पेनाल्टी शूटआउट में भारत ने अर्जेंटीना को हराया

एंटवर्प,एजेंसी। मनदीप सिंह और ललित कुमार के बेहतरीन गोलों के बाद श्रीजेश की जाबांज गोलकीपिंग की बदौलत भारत ने एक रोमांचक मुकाबले में अर्जेंटीना के खिलाफ शूटआउट में 5-4 से रोमांचक जीत हासिल की।

मनदीप सिंह (11') और ललित कुमार उपाध्याय (55') ने भारत के लिए एक-एक गोल किया, जबकि लुकास मार्टिनेज (20') और टॉमस डोमेने (60') ने गोल कर मैच को बराबरी पर लाकर खड़ा कर दिया और मुकाबला पेनाल्टी शूटआउट में चला गया।

भारत ने सतर्क शुरुआत करते हुए अर्जेंटीना को स्ट्राइकिंग सर्कल में आसानी से घुसने नहीं दिया। दूसरी ओर टीम के फारवर्ड ने एक चतुर रणनीति बनाई और अर्जेंटीना के रक्षकों को गलतियाँ करने के लिए मजबूर किया। रणनीति काम कर गई और मनदीप सिंह (11') ने पहले क्वार्टर में चार मिनट शेष रहते हुए करीब से गोल करके भारत को 1-0 की बढ़त दिला दी। भारत ने पहला क्वार्टर 1-0 की बढ़त के साथ समाप्त किया। दूसरे क्वार्टर की शुरुआत में, भारत ने शुरुआती मिनटों में आक्रामक शुरुआत की उन्होंने लगातार हमलों से अर्जेंटीना की रक्षा पंक्ति पर दबाव डाला और गेंद पर अधिक कब्ज़ा किया। हालाँकि अर्जेंटीना ने इस बीच मिले पेनल्टी कॉर्नर पर लुकास मार्टिनेज (20') के जरिये बराबरी कर ली। भारत ने पांच मिनट शेष रहते पेनाल्टी कार्नर

हासिल किया लेकिन वह इस मौके का फायदा नहीं उठा सका। हाफ टाइम तक स्कोर 1-1 से बराबर था। तीसरा क्वार्टर में दोनो टीमों के एक दूसरे पर हमले किये मगर गोल में तब्दील करने में असफल रहे। समय समाप्त होने में 15 मिनट शेष रहते भारत ने अर्जेंटीना पर अधिक दबाव बनाना शुरू कर दिया, नतीजन भारत ने ललित कुमार उपाध्याय (55') के माध्यम से 2-1 की बढ़त ले ली। एक मिनट शेष रहने पर, अर्जेंटीना ने पेनल्टी कॉर्नर अर्जित किया और टॉमस डोमेने (60') के माध्यम से खेल में वापसी की, जिन्होंने नेट के पीछे से गोल किया और मैच शूटआउट में चला गया। भारत का अगला मैच 24 मई को बेल्जियम से होगा।

एक नजर

मोदी की नाहन रैली, ट्रैफिक प्लान व निजी स्कूलों में छुट्टी को लेकर संशय

नाहन,एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की 24 मई को हिमाचल प्रदेश के नाहन में प्रस्तावित रैली को लेकर ट्रैफिक प्लान, सील्ड एरिया व निजी स्कूलों की बसों की आवाजाही को लेकर संशय पैदा हो गया है। शहरवासी इस बात को लेकर असमंजस में हैं कि कौन से रूट सील किए जाएंगे, वैकल्पिक व्यवस्था उपलब्ध होगी या नहीं। वहीं, निजी स्कूलों को बंद रखने को लेकर भी प्रशासन ने अपने स्तर पर आदेश नहीं जारी किए हैं, लेकिन बताया जा रहा है कि निजी स्कूल अपने स्तर पर 24 मई को छुट्टी कर रहे हैं। दरअसल, शहर की सड़क संकीर्ण है। रिंगरोड पर ट्रैफिक जाम की स्थिति पैदा हो सकती है। शहर के विद्यालयों को बंद रखने को लेकर प्रशासन ने प्रारंभिक व उच्च शिक्षा विभाग के उपनिदेशकों से चर्चा की। इसमें ये तय हुआ कि पुलिस के अनुमोदन पर ही स्कूलों को बंद रखने का निर्णय होगा। निजी स्कूल अपने स्तर पर फैसला ले सकते हैं। रैली स्थल पर मंच के पीछे चंद मीटर की दूरी पर शमशेर वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला है। जबकि एक तरफ राजकीय प्राथमिक मॉडल स्कूल है तो लिटन मैमोरियल के दूसरी और प्राइमरी स्कूल बड़ा चौक है। दिक्कत ये भी है कि शिमला की तरफ जाने वाला ट्रैफिक चौगान मैदान के एक तरफ से ही गुजरता है। यहां के ट्रैफिक को डायवर्ट करने का भी कोई प्रावधान नहीं है। यही कारण है कि असमंजस बना हुआ है। हर कोई ये जानना चाहता है कि कौन-कौन सा इलाका सील होगा। प्रधानमंत्री की रैली में हिस्सा लेने आने वाले लोगों के लिए पार्किंग स्थल कहां होगा। हर कोई ये भी जानना चाहता है कि यदि ट्रैफिक रोका जाना है तो इसका समय व अवधि क्या होगा। उधर, उपायुक्त सुमित खिमटा ने कहा कि ट्रैफिक प्लान पुलिस द्वारा जारी किया जाएगा। प्रधानमंत्री के प्रोटोकॉल को लेकर सुरक्षा के तहत कदम उठाए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि स्कूलों में छुट्टी को लेकर पुलिस के अनुमोदन पर ही कदम उठाया जा सकता है। ये अलग बात है कि निजी स्कूल अपने स्तर पर निर्णय लेने में सक्षम है।

विक्रमादित्य के बदले सुर, अब करने लगे जयराम की तारीफ

मंडी,एजेंसी। हिमाचल प्रदेश के मंडी संसदीय सीट से कांग्रेस का प्रत्याशी बनने के बाद मंत्री विक्रमादित्य सिंह ने जब मंडी में अपना चुनाव प्रचार शुरू किया तो पूर्व मुख्यमंत्री एवं नेता प्रतिपक्ष जयराम ठाकुर को पानी पी-पीकर कोस रहे थे। श्री ठाकुर को मंडी का भक्षक तक कह डाला था लेकिन अब विक्रमादित्य सिंह के सुर बदलने लग गए हैं। श्री सिंह को शायद इस बात का अहसास हो गया है कि श्री जयराम के खिलाफ ज्यादा बोलना उनके लिए घातक हो सकता है। मंडी सदर विधानसभा क्षेत्र के तहत आने वाले साईगलू में श्री सिंह ने श्री जयराम की जमकर तारीफ की। उन्होंने कहा कि श्री जयराम उनके लिए सम्माननीय और एक शरीफ व्यक्ति हैं। जब उनके पिता का देहांत हुआ था तो श्री जयराम ने दो घंटे रामपुर में तपती धूप में खड़े रहकर श्रद्धांजलि दी थी। श्री सिंह ने नरम लहजे में कहा कि श्री जयराम बतौर मुख्यमंत्री मंडी जिला के लिए कुछ नहीं कर पाए। यहां जो भी विकास हुआ है वो स्व. वीरभद्र सिंह की देन है। श्री सिंह ने स्व. पंडित सुखराम और उनके विधायक बेटे अनिल शर्मा की भी तारीफ की। उन्होंने कहा कि स्व. पंडित सुखराम संचार क्रांति के मसीहा थे और अपने दौर में उन्होंने मंडी सदर में अथाह विकास करवाया। लेकिन अब यह नया दौर है जिसमें उन्हें काम करने का मौका मिल रहा है। बतौर मंत्री मंडी सदर में जो उद्घाटन और शिलान्यास किए हैं वो कोई फट्टे नहीं लटकाए हैं, बल्कि धरातल पर काम करके दिखाया है। श्री सिंह ने कहा कि यदि जनता उन्हें यहां से चुनकर भेजती है तो फिर वे केंद्र में हिमाचल प्रदेश के लिए अलग से रेजिमेंट की पैरवी करेंगे। हिमाचल प्रदेश वीरों की भूमि है और यहां से बहुत से लोग सेना में अपनी सेवाएं दे रहे हैं। कई

दिल्ली में 'इंडियन क्लासिकल डांसेजः 'द हीलिंग पावर' पुस्तक का लोकार्पण

नई दिल्ली,एजेंसी। राष्ट्रीय राजधानी में बुधवार को पुस्तक 'इंडियन क्लासिकल डांसेजः द हीलिंग पावर' का लोकार्पण किया गया। इस मौके पर इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र (आईजीएनसीए) में पुस्तक की लेखिका प्रसिद्ध भरतनाट्यम नृत्यांगना, गुरु एवम कोरियोग्राफर कनक सुधाकर, लोकार्पण प्रसिद्ध नाट्य समीक्षक लीला वेंकटरमण, कलावती बाल अस्पताल की सेवानिवृत्त अतिरिक्त चिकित्सा अधीक्षक डॉ. वसंती रामचंद्रन, प्रसिद्ध कथक नृत्यांगना मौमला नायक और आईजीएनसीए के डीन (प्रशासन) व कला निधि प्रभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. रमेश चंद्र गौड़ मौजूद थे।

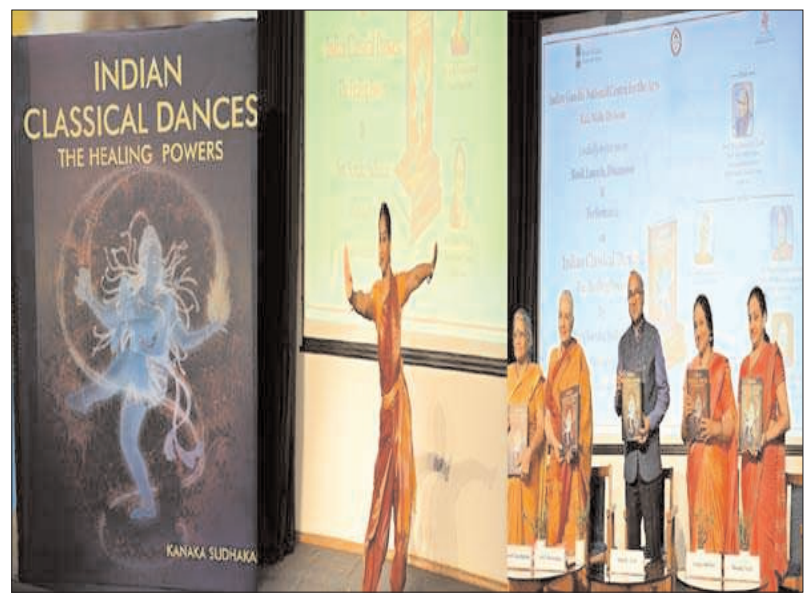

लेखिका कनक सुधाकर ने कहा, नृत्य में श्वसन की ऐसी तकनीकें होती हैं, जो फेफड़े और हृदय की क्षमता को बढ़ाती हैं। साथ ही, नृत्य की विभिन्न भंगिमाएं मांसपेशियों और तंत्रिका तंत्र की क्षमताओं में वृद्धि करती हैं। नृत्य के स्टेप्स एक्यूप्रेशर का काम भी करते हैं। नृत्यांगना मौमला नायक ने कहा, नृत्य एक जीवनदायी कला है। डॉ. वसंती रामचंद्रन ने कहा,यह पुस्तक कुछ अलग और विशिष्ट है। नृत्य करना बहुत ज़रूरी है। बच्चों के नृत्य सीखने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए और इसे स्कूली पाठ्यक्रम में शामिल करना चाहिए। नृत्य मस्तिष्क को शक्ति प्रदान करता है, दबाव का सामना करना सिखाता है और तनाव को दूर करता है। किसी भी उम्र में नृत्य कर सकें, तो बहुत अच्छा है। प्रसिद्ध नृत्य समीक्षक लीला वेंकटरमण ने कुछ उदाहरणों के जरिये बताया कि नृत्य मस्तिष्क को आघातों को सहने और चुनौतियों का सामना करने में सक्षम बनाता है।

डीएस ग्रुप के कन्फेक्शनरी व्यवसाय ने 1,000 करोड़ का कारोबार किया

नई दिल्ली। डीएस ग्रुप की कन्फेक्शनरी शाखा, धर्मपाल सत्यपाल फूड्स लिमिटेड (डीएसएफएल) ने वित्त वर्ष 2023-24 में वार्षिक बिक्री कारोबार में 1,000 करोड़ रुपए को पार करके एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। डीएस ग्रुप के उपाध्यक्ष राजीव कुमार ने कहा, हम वित्तीय वर्ष 2023-24 में डीएस ग्रुप की कन्फेक्शनरी शाखा की 1000 करोड़ रुपए की बिक्री टर्नओवर की घोषणा करते हुए बेहद रोमांचित हैं। यह उपलब्धि हमारे स्वदेशीकरण को बढ़ाने, हमारे उत्पाद पोर्टफोलियो का विस्तार करने और देश में सबसे बड़े डिस्ट्रीब्यूशन नेटवर्क में से एक होने पर हमारे रणनीतिक ध्यान का परिणाम है। आगे देखते हुए, हम चॉकलेट सेगमेंट में अपनी उपस्थिति बढ़ाने के साथ-साथ भारतीय पारंपरिक कन्फेक्शनरी श्रेणी में अपने नेतृत्व की स्थिति को नए उत्पादों के साथ रणनीतिक रूप से विस्तार करने का लक्ष्य रखते हैं।

डीएस ग्रुप नॉन-चॉकलेट श्रेणी में दूसरी सबसे बडी कन्फेक्शनरी कंपनी है और हार्ड बॉयल्ड कैंडी (एचबीसी) और इंडियन ऐथनिक कन्फेक्शनरी (आईईसी) सेगमेंट में नेतृत्व की स्थिति में है। डीएस ग्रुप का कन्फेक्शनरी डिवीजन पिछले तीन सालों में 20 प्रतिशत से अधिक वार्षिक बढ़ गया है, जबकि उद्योग ने 9 प्रतिशत की वृद्धि की है। ऐसे में ग्रुप ने अगले 5 सालों में ऑर्गेनिक और इनऑर्गेनिक ग्रोथ के माध्यम से लगभग 30 प्रतिशत वार्षिक वृद्धि के साथ व्यवसाय को तेज करने की योजना बनाई है। आज देश में सबसे बड़े डिस्ट्रीब्यूशन नेटवर्क में से एक के साथ, डीएस ग्रुप के कन्फेक्शनरी उत्पाद प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से 26 लाख से अधिक रिटेल आउटलेट्स में उपलब्ध हैं और इसकी बाजार हिस्सेदारी हार्ड-बॉयल्ड कैंडी (एचबीसी) और भारतीय जातीय कन्फेक्शनरी (आईईसी) सेगमेंट में इसका बाजार हिस्सा सबसे करीबी प्रतिस्पर्धी से कहीं अधिक है। इनोवेशन और ओमनी-चैनल उपस्थिति, जिसमें आधुनिक रिटेल, ई-कॉमर्स और क्रिक कॉमर्स शामिल हैं, इसके विकास के मुख्य चालक रहे हैं। मॉडर्न रिटेल, ई-कॉमर्स और क्रिक कॉमर्स सहित ओमनी-चैनल के साथ इनोवेशन और रूट-टू-मार्केट स्ट्रेटजी प्रमुख ग्रोथ ड्राइवर्स रही है।

आपदा में मोदी के मूंह से उफ्फ तक नहीं निकलीः संजय

शिमला,एजेंसी। हिमाचल प्रदेश कांग्रेस के कार्यकारी अध्यक्ष संजय अवस्थी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर निशाना साधते हुए कहा कि जनता को गुमराह करने के लिए श्री मोदी एक बार फिर राज्य में आने वाले हैं। श्री मोदी को सिर्फ चुनाव के समय ही हिमाचल की याद आती है बाकी न तो उन्हें दुख के समय हिमाचल की याद आती है और न ही प्राकृतिक आपदा के समय। अब जब सत्ता डगमगाने लगी तो उन्हें एक बार फिर हिमाचल की याद आने लगी है।

श्री अवस्थी ने कहा कि श्री मोदी ने 10 वर्ष पहले जो वायदे किए थे उनका क्या हुआ। आज न तो पीएम मोदी उन वादों की बात करते हैं और न ही किसानों की आय दोगुनी करनी की। आज न तो हवाई चप्पल वालों को जहाज में बिठाने की हो रही और न सेब को स्पेशल कैटेगरी में लाने की। इसके अलावा न ही सेब को ड्रोन के माध्यम से मंडी तक पहुंचाने की बात कर रहे हैं। श्री अवस्थी ने कहा कि श्री मोदी सिर्फ और सिर्फ जनता को गुमराह करने की बात करते हैं । जो इस बार होने वाला नहीं है इस बार प्रदेश की जनता उनसे दस वर्ष का हिसाब मांगेगी। उन्होंने कहा कि श्री मोदी जब हिमाचल आते हैं तो इसे दूसरा घर कहते हैं लेकिन जब वे देश के किसी दूसरे राज्यों में जाते हैं तो वहां के हो जाते हैं। ऐसे में कोई कैसे उनकी बातों पर भरोसा कैसे कर सकता है। उन्होंने कहा कि प्रदेश में सदी की सबसे बड़ी त्रासदी आई। जिससे प्रदेश को 10 हजार करोड़ का नुकसान हुआ 551 लोगों को अपनी जिंदगी से हाथ धोना पड़ा लेकिन श्री मोदी के मुंह से एक बार उफ्फ तक नहीं निकली। मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू कई बार श्री मोदी के पास आर्थिक सहयोग करने और राष्ट्रीय आपदा घोषित करने की मांग करते रहे लेकिन श्री मोदी ने एक रुपए का भी सहयोग नहीं किया। यही आपदा अगर उतराखंड और गुजरात में आई होती जहां भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की सरकार है तो श्री मोदी दिल खोलकर अपना खजाना उड़ाते। उन्होंने कहा कि श्री मोदी हिमाचल में सेपू बड़ी और बदाना खाने आते हैं यहां की भोली भाली जनता को चिकनी- चुपनी बातों से गुमराह करने आते हैं। लेकिन इस बार लोग उनके झांसे में नहीं आने वाले हैं बल्कि इसका करारा जवाब देने वाले हैं। श्री मोदी पैसे का आवंटन आपदा प्रभावित राज्य हिमाचल को देने के लिए नहीं बल्कि चुनी हुई सरकार के विधायकों की खरीद - फरोख्त के लिए खर्च करते हैं।

श्री अवस्थी ने कहा कि श्री मोदी ने हिमाचल के सबसे बड़े उद्योग सेब को स्पेशल कैटेगरी में लाने और इम्पोर्ट ड्यूटी सौ फिसदी करने का वादा किया था लेकिन आज उसे भी 70 फीसदी से घटाकर 50 फ़ीसदी कर दिया है। इसके अलावा विश्व के 44 देशों से सेब का आयात कर अपने मित्रों अडानी-अंबानी को दूसरे देशों से बैकडोर लाभ पहुंचा रहे हैं। जो इनके दोहरे चरित्र को दर्शाता है। उन्होंने कि इसके अलावा 69 एनएस बनाने की बात कही थी आज हालत यह ही कि जो फोरलेन बनाए हैं वह भी प्राकृतिक आपदा में टूट गए। उन्होंने कहा कि इस बार पीएम मोदी के जुमले कामयाब नहीं होने वाले हैं क्योंकि प्रदेश की जनता के साथ साथ देश के मतदाताओं ने मोदी को सत्ता से बेदखल करने का मूड बना दिया है।

नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में प्रचंड बहुमत से बनेगी सरकारः मोहन यादव

जौनपुर,एजेंसी। मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव ने बुधवार को दावा किया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र में तीसरी बार प्रचंड बहुमत के साथ सरकार बनेगी और मोदी तीसरी बार प्रधानमंत्री बनेंगे। डॉ यादव बीआरपी इंटर कॉलेज के मैदान में जौनपुर लोकसभा क्षेत्र के प्रत्याशी कृपा शंकर सिंह के समर्थन में चुनावी जनसभा को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कांग्रेस सरकार पर निशाना साधते हुए कहा जो भगवान राम व कृष्ण के नहीं वह जनता के नहीं, ऐसे में लोकतंत्र में नया रिकार्ड बनाते हुए भाजपा की सरकार बनाने का काम कीजिए। उन्होंने कहा कि दुनिया की कोई भी ताकत नरेंद्र मोदी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनने से नहीं रोक सकती है। समाजवादी पार्टी (सपा) अध्यक्ष अखिलेश यादव का नाम लिये बगैर उन पर तंज कसते हुए उन्होने कहा 2019 में मुलायम सिंह यादव ने मोदी को दोबारा प्रधानमंत्री बनने की शुभकामनाएं दे दी थी, ऐसे में आप कांग्रेस जैसे डूबते जहाज पर लंबी सफर तय करने चाहते हैं, जिस जहाज की तली फूटी हो।

उन्होंने मंच पर मौजूद रायबरेली के प्रत्याशी दिनेश प्रताप सिंह व मैनपुरी से प्रत्याशी कैबिनेट मंत्री पर्यटन एवं विकास जयवीर सिंह का उदाहरण देते हुए कहा कि यह दोनों ही नेता इंडिया गठबंधन को अपने-अपने क्षेत्र से ठिकाने लगाने के बाद यहां मौजूद हैं। चुनाव की हवाएं व फिजाएं बता रही हैं कि परिणाम किधर जा रहा है। विपक्षियों की छाती तेजी से धड़क रही है। डा यादव ने कहा कि जिस प्रकार राम भक्तों ने छलांग लगाकर समुद्र को पार करने का काम किया। गलत नीति वाले रावण व कृष्ण को उनके घर में घुसकर राम व कृष्ण ने वध करने का काम किया। उसी तरह मौजूदा मोदी सरकार में भी सर्जिकल

स्ट्राइक कर पाकिस्तान में दुश्मनों के घर में घुसकर मारने का काम किया गया। उन्होंने कहा कि 2014 में पीएम नरेंद्र मोदी के नेतृत्व् में भाजपा ने जीत का डंका बजाया। उन्होंने देश को आर्थिक रूप से सक्षम बनाया। उन्होंने कहा कि विपक्षी जिस आरक्षण के नुकसान की बात करते हैं, उसी कांग्रेस की सरकार ने कर्नाटक, तेलंगाना में ओबीसी, एससी, एसटी का आरक्षण काटकर मुस्लिमों को देने का काम किया। पीएम मोदी के नेतृत्व में देश की सीमाएं सुरक्षित हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि 2014 के चुनाव में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जनता से पूर्ण बहुमत की सरकार का वादा किया था वह पूरा हुआ। 2019 के चुनाव में उन्होंने जनता से 300 पर का वादा किया था वह भी पूरा हुआ और इस बार 400 पार का नारा भी पूरा होगा। इस मौके पर राज्यमंत्री गिरीशचंद्र यादव, राज्यसभा सदस्य सीमा द्विवेदी, बदलापुर विधायक रमेशचंद्र मिश्रा, शाहगंज विधायक रमेश सिंह, पूर्व कैबिनेट मंत्री डॉ महेंद्र सिंह, महाराष्ट्र के विधायक राजहंस सिंह, नगर पालिका परिषद जौनपुर चेयरमैन मनोरमा मौर्या भाजपा के जिलाध्यक्ष पुष्पराज सिंह आदि रहे।

डॉ. पात्रा का विवादस्पद बयान गलत,वह प्रायश्चित करेंगेः शाह

नई दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के वरिष्ठ नेता एवं देश के गृहमंत्री अमित शाह ने ओडिशा के पुरी लोकसभा सीट से प्रत्याशी संबित पात्रा के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और जगन्नाथ महाप्रभु के बारे में विवादास्पद बयान को गलत माना है और कहा है कि डॉ. पात्रा इसके लिए प्रायश्चित करेंगे। श्री शाह ने टेलीविजन समाचार चैनल न्यूज 18 पर आज रात प्रसारित होने वाले एक विशेष साक्षात्कार में कहा कि देश का माहौल श्री मोदी के पक्ष में है और दक्षिण में भाजपा को अच्छी सफलता मिल रही है। भाजपा का दायरा बढ़ रहा है और इसके लिए पार्टी ने काफी ज्यादा मेहनत भी की है।

गृहमंत्री ने कहा कि मतदान में जो भी कमी आ रही है, उसका नुकसान विपक्ष को होगा, क्योंकि विपक्ष का मतदाता निराश है और निराशा के कारण विपक्ष का मतदाता वोट डालने नहीं जा रहा है।श्री शाह ने दक्षिण भारत में भाजपा की सफलता की संभावनाओं से जुड़े एक प्रश्न के जवाब में कहा कि दक्षिण में इस बार पार्टी को अच्छी खासी सफलता मिलने जा रही है और आंध्र प्रदेश में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) की सरकार बनने जा रही है। उन्होंने ओडिशा के बारे में कहा कि बीजू जनता दल के साथ भाजपा का गठबंधन कभी नहीं रहा है, बल्कि मुख्यमंत्री नवीन पटनायक ने भाजपा को मुद्दों पर आधारित समर्थन दिया है। लेकिन इस बार वहां भाजपा की सरकार बनती दिखाई दे रही है। डॉ. पात्रा के एक विवादास्पद बयान के बारे में श्री शाह ने कहा, संबित पात्रा का बयान जुबान फिसलने से हुआ है, इसलिए पात्रा इसके लिए प्रायश्चित्त करेंगे और प्रभु जगन्नाथ उन्हें इसके लिए क्षमा कर देंगे। राज्य में चुनावी राजनीति की बात करते हुए उन्होंने कहा कि भाजपा ओडिशा में 17 से ज़्यादा सीटें जीतेगी। ओडिशा में भाजपा की सरकार ज़रूर बनेगी। उन्होंने कांग्रेस पर हमला बोलते हुए कहा,पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने ही 70 के दशक में गरीबी हटाओ का नारा दिया था लेकिन वह गरीबी हटा नहीं पाई। अब इंदिरा जी का पोता ही आज खटाखट गरीबी हटाने वाला वादा कर रहा है। कांग्रेस की खटाखट की व्याख्या 10 साल लंबी है। भाजपा की संभावनाओं पर चर्चा करते हुए गृह मंत्री ने कहा, भाजपा की स्थिति चुनाव में बहुत अच्छी है और हम 400 पार कर लेंगे। रुझानों के आधार पर चुनाव की व्याख्या नहीं होती। उन्होंने सीटें कम होने की स्थिति में प्लान बी के सवाल पर कहा कि कोई प्लान बी नहीं है, ऐसे किसी प्लान बी का सवाल ही नहीं उठता है। भाजपा पूर्ण बहुमत हासिल करने जा रही है। चुनाव में चल रहे कांग्रेस के बयानों के बारे में पूछे जाने पर श्री शाह ने कहा, कांग्रेस ने कई बार लोकतंत्र पर कुठाराघात किया है और प्रियंका गांधी को तो अपना ही इतिहास नहीं पता है। भारत में आज लोकतंत्र कांग्रेस की वजह से नहीं, बल्कि लोगों की वजह से है। इंडिया समूह पांच पीएम की रणनीति पर चल रहा है। राहुल का चार जून के बाद छुट्टी का प्लान तैयार होगा। महाराष्ट्र के बारे में गृहमंत्री ने कहा कि उन्होंने महाराष्ट्र में कोई पार्टी नहीं तोड़ी बल्कि राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) और शिवसेना पुत्र और पुत्री के मोह की वजह से टूटी हैं। उधर श्री उद्धव ठाकरे ने सिद्धान्तों के खिलाफ जाकर भाजपा को धोखा दिया है। उन्होंने उम्मीद जताई कि महाराष्ट्र में भाजपा अपना पुराना रिकॉर्ड कायम रखेगी। आम आदमी पार्टी के नेता अरविंद केजरीवाल के बारे में श्री शाह ने कहा, श्री केजरीवाल से बड़ा यू-टर्न लेने वाला नेता कोई नहीं है। श्री केजरीवाल ने जो कहा वह कभी नहीं किया। आज कांग्रेस के साथ मिलकर वह चुनाव लड़ रहे। एक समय वह कांग्रेस के कटु आलोचक थे। चार जून को श्री केजरीवाल जेल में ही होंगे। कभी किसी को कामकाज के आधार पर जमानत नहीं मिली। जहां तक चुनाव का संबंध है दिल्ली में हम सातों सीटें जीतने जा रहे हैं। अयोध्या में श्री राममंदिर के बारे में चर्चा करते हुए श्री शाह ने विपक्ष पर सवाल खड़ा किया कि विपक्ष देश को बताये कि आखिर राम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा में विपक्ष क्यों अयोध्या नहीं गया। जाहिर है कि विपक्ष सिर्फ़ तुष्टीकरण की राजनीति के कारण नहीं गया। पश्चिम बंगाल के बारे में श्री शाह ने कहा कि संदेशखाली केवल चुनाव का मुद्दा नहीं है, बल्कि एक महिला मुख्यमंत्री के शासन में महिलाओं का शोषण हो रहा है। वह भी धर्म के आधार पर महिलाओं का शोषण हुआ। शोषण करने वाले तृणमूल कांग्रेस के कार्यकर्ता हैं। वोट बैंक के लिए महिलाओं का शोषण होगा? चुनाव के परिणाम जो भी हों, इस मुद्दे को चुनाव के बाद भी उठाते रहेंगे। पाकिस्तान के कब्जे वाला जम्मू-कश्मीर (पीओके) के बारे में पूछे जाने पर श्री शाह ने कहा ,卐भारत का हिस्सा है, यह कोई राजनीति का विषय नहीं है। संसद का प्रस्ताव है कि वह भूभाग भारत का हिस्सा है।

प्रधानमंत्री मोदी ने बनवाई अटल टन, बदला लाहौल-स्पीति घाटी का जनजीवनः जयराम ठाकुर

लाहौल-स्पीति/उदयपुर। हिमाचल प्रदेश के नेता प्रतिपक्ष जयराम ठाकुर ने कहा कि आज लाहौल-स्पीति की घाटी देश दुनिया से पूरे साल जुड़ी है तो उसकी वजह अटल टनल है। जिसने घाटी का पूरा जनजीवन बदल डाला। करीब 3200 करोड़ की लागत से बनी अटल टनल का सपना हमारे पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने देखा था, जिसे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पूरा किया।

श्री ठाकुर बुधवार को लाहौल के उदयपर में जनसभा को संबोधित करते हुए यह बात कही। उन्होंने कहा कि आज अटल टनल के ज़रिए हर मौसम में लोग यहां आ-जा सकते हैं। एक समय ऐसा भी था जब यह पूरी घाटी महीनों के लिए देश दुनिया से कट जाती थी। पिछले दस साल में विकास के ऐतिहासिक काम हुए हैं। आने वाले समय में यह स्पीड बनी रहे इसके लिए देश में श्री नरेन्द्र मोदी का 400 से ज़्यादा सीटों के साथ प्रधानमंत्री बनना बहुत ज़रूरी हैं। जिससे विकसित भारत के लक्ष्य को समय से हासिल किया जा सके। नेता प्रतिपक्ष ने कहा कि कांग्रेस की सरकार ने आते ही लाहौल-स्पीति के लोगों के साथ मुख्यमंत्री ने नाइंसाफ़ी करना शुरू कर दिया। हमारी सरकार में जो ग्रांट बढ़ाई गई थी उसे भी कम कर दी। आदिवासी क्षेत्र होने के कारण इस क्षेत्र को विशेष सहयोग देना चाहिए लेकिन कांग्रेस ने उल्टा काम किया। जिसके ख़िलाफ़ आपके पूर्व विधायक ने आवाज़ उठाई। बार-बार आवाज़ उठाई। लेकिन सलाहकारों की फ़ौज से घिरे मुख्यमंत्री ने आपके विधायक की आवाज़ को अनसुना कर दिया। आपके साथ हो रही ज़्यादतियो से आजिज़ आकर उन्होंने सरकार के खिलाफ़ आवाज़ उठाई और भारतीय जनता पार्टी के राज्य सभा प्रत्याशी को वोट दिया, उन्होंने यह वोट चोरी से नहीं दिया। कांग्रेस के ऑब्ज़र्वर को दिखा कर दिया। आपके और अपने सम्मान के लिए दिया। जिसके बदले उन्हें अपनी विधायकी गवानी पड़ी। उन्होंने सभी से निवेदन करते हुए कहा कि इस अपमान का बदला आपको अपने वोट से देना है। रवि ठाकुर को रिकॉर्ड वोटों से जितवा कर विधान सभा भेजिए बाक़ी हर काम की जिम्मेदारी मुझपर छोड़ दीजिए। श्री ठाकुर ने कहा कि मुख्यमंत्री पूरे प्रदेश में जाकर कहते है कि लाहौल-स्पीति की महिलाओं को पंद्रह सौ दे दिये। लेकिन यहाँ किसी को भी नहीं मिले तो वह पैसे गए कहाँ? किसी मिले? इस दौरान उन्होंने मंच से ही रैली में आये लोगों से सवाल किया कि क्या किसी को कुछ मिला तो सबका एक सुर में जवाब था कि नहीं मिला।

मुद्रक, प्रकाशक, स्वामी, सैफुल्लाह सिद्दिकी द्वारा आरडी प्रिंटिंग एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, ए-24, सेक्टर-08, नोएडा (यूपी), से छपवा कर एन-81, बटला हाउस, जामिया नगर पुलिस स्टेशन, जामिया नगर, नई दिल्ली-110025 से प्रकाशित किया। सर्वाधिकार सुरक्षित, किसी भी विवाद की स्थिति में न्यायिक क्षेत्र दिल्ली होगा। (संपादक- सैफुल्लाह सिद्दिकी)